Printed by
Swami Tribhuvandas Sastri,
Shree Ramanand Printing Press,
Kankaria Road,
Ahmedabad 22,
and Published by
Dalsukh Malvania
Director
L. D. Institute of Indology,
Ahmedabad 9,

FIRST EDITION
January, 1974

PRICE RUPEES 8/-

श्रीहरिभद्रसूरिविरचित

अपभ्रंश महाकाव्य 'नेमिनाहचरिय' अन्तर्गत

सणतुकुमारचरिय

[भूमिका, गुजराती अनुवाद तथा हरिभद्रविरचित प्राकृत
'मल्लिनाहचरिय' अन्तर्गत 'सनत्कुमार-चक्रवर्ति-कथानक' सहित]

संपादक

प्राध्या० हरिवल्लभ चू. भायाणी
प्राध्या० मधुसूदन चि. मोदी



प्रकाशक
लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामंदिर
अहमदाबाद—९

PREFACE

The L. D. Institute of Indology has great pleasure in publishing the present volume containing Haribhadra's *Sanatukumāracariya* (a section of his *Neminähacariya*, an Apabhraṁśa epic published in the L. D. Series Nos. 25, 33) along with its Gurajati translation.

I am thankful to Prof. H. C. Bhayani and Prof. M. C. Modi for preparing the Gujarati translation of the text. This will satisfy the need of the Gujarati readers interested in the study of Apabhraṁśa language and literature. The special feature of the present work is the studied Introduction which traces the development of the story of Sanatkumāra, explains the metres, notes the peculiarities of the language and forms the estimate of the work. Again, the learned professors have edited here in the Pariśiṣṭa a hetherto unpublished Sanatkumāra-cakravartikathānaka (gāthās 1-322) contained in the unpublished Prakrit poem entitled *Mallinātha-carita* composed by the same Haribhadra.

I hope that this publication will be very useful to the students of Apabhraṁśa language.

L. D. Institute of Indology,
Ahmedabad-380009
26th January, 1974.

Dalsukh Malvania
Director.

विषयानुक्रम

पृष्ठाङ्क

भूमिका

प्रास्ताविक

अहीं जेने मुख्य कृति तरीके आपवामां आवी छे ते 'सनत्कुमारचरिउ'–एटले के सनत्कुमारचरित कोई स्वतंत्र रचना नथी, पण हरिभद्रसूरिना अपभ्रंश महाकाव्य 'नेमिनाहचरिय'(=नेमिनाथचरित)नो ज एक भाग छे. चित्रगति विद्याधर तरीकेना नेमिनाथना त्रीजा भवमां एक आडकथा लेखे आ सनत्कुमारचरित आपवामां आव्युं छे. शरदऋतुमां पोताना परिवार अने मित्रो साथे बेठेला चित्रगतिने सुमति नामनो बंदी पोते एक चारणमुनिनी पासेथी सांभळेलुं सनत्कुमार चक्रवर्तीनुं कथानक मनोविनोदने माटे कही संभळावे छे. चित्रगतिभवना वृत्तान्तना ६८३ छंदोमांथी ३४३ छंदोमां–एटले के अरधा जेटला भागमां सनत्कुमार चरित गूंथेलुं छे. ते ४४४मा छंदथी शरू थाय छे, अने ७८६मा छंदमां पूरुं थाय छे. हरिभद्रसूरिना 'नेमिनाहचरिय'नी बे हस्तप्रतो मळे छे. एक जेसलमीरनी ताडपत्रनी प्रत (आशरे १३मी सदी पहेलांनी) अने बीजी ला. द. भारतीय संस्कृति विद्यामंदिरमांना विजयदेवसूरि संग्रहनी कागळनी प्रत (आशरे सोळमी के सत्तरमी सदीनी). जेसलमीरनी प्रत प्राचीन, घणी ज शुद्ध अने विश्वसनीय छे. प्रस्तुत 'सनत्कुमारचरित'नो पाठ पण तेने आधारे ज तैयार करवामां आव्यो छे. क्वचित् ज्यां कागळनी प्रतमां लेखनफेर छे त्यां पाठफेर नोंध्यो छे. पण कागळनी प्रत अने ताडपत्रनी प्रतमां एकनी एक ज पाठपरंपरा छे. फरक कोई कोई अक्षरो पूरतो मर्यादित छे.

हरिभद्रसूरिए 'नेमिनाहचरिय' वि० सं० १२१६मां (ई० स० ११६०मां) अणहिल्लवाडपाटणमां कुमारपालना राज्यमां रच्युं. आ चरित्र रचवामाटे राजाना मन्त्री पृथ्वीपाले* हरिभद्रसूरिने प्रार्थना करेली. हरिभद्रसूरिए नेमिनाथना चरित उपरांत बाकीना पण त्रेवीशे य तीर्थंकरोना चरित रचेलां छे. तेमांथी तेमनां अजितनाथ, चन्द्रप्रभ अने मल्लिनाथ तीर्थंकरनां प्राकृत भाषामां रचेलां चरित प्राप्त थयां छे. पण हजी सुधी ते कृतिओ हस्तप्रतरूपे ज छे, संपादित के प्रकाशित नथी थई.

हरिभद्रसूरि वडगच्छ के बृहद्गच्छना जिनचंद्रसूरिना प्रशिष्य अने श्रीचंद्रसूरिना शिष्य हता. तेमणे रचेलां चोवीश तीर्थंकरोनां चरितोनुं श्लोकप्रमाण

---

* आ पृथ्वीपाल मन्त्री विशेनी तथा हरिभद्र विशेनी विगतो माटे 'नेमिनाहचरिय'नी भूमिका जोवी.

बे लाख श्लोक जेटलुं अटकळी शकाय छे. आ उपरथी प्राकृत-अपभ्रंश साहित्य रचवानी तेमनी असाधारण शक्तिनो ख्याल आवशे.

पूर्वेनुं संपादन

हरिभद्रनुं आ अपभ्रंश सनत्कुमारचरित्र आ पहेलां एक वार प्रकाशित थई चूक्युं छे, अने ते प्रकाशननुं ऐतिहासिक महत्त्व छे. ई. स. १९१४ पहेलां अपभ्रंश भाषाना साहित्यनी कोई सळंग रचनाथी अर्वाचीन विद्वानो अजाण हता. एवी कोई रचना हजी तेमने उपलब्ध थई न हती. भारतीय विद्याना प्रकांड जर्मन पंडित हेर्मान याकोबीने तेमना १९१३–१९१४ना भारतप्रवास दरमियान अमदावादमांथी धनपालनी 'भविस्सत्त-कह'नी अने राजकोटमांथी हरिभद्रना 'नेमिनाहचरिय'नी एम बे अपभ्रंश काव्योनी हस्तप्रत जोवा मळी. ए अपभ्रंश साहित्यनी मूल्यवान कृतिओ जोतां ए प्रकारनुं एक अलग साहित्य जळवायुं होवानी तेमने प्रतीति थई अने प्राप्त कृतिओना संपादन-प्रकाशननी पाछळ तेओ लागी गया. तेमना पुरुषार्थने परिणामे आपणने अपभ्रंश भाषा, साहित्य इत्यादि विशेना विस्तृत शोधपूर्ण निबंध साथे, तथा जर्मनमां भाषांतर अने सार्थ शब्दकोश साथे संपादन करेली 'भविस्सत्तकह'(१९१८)नी आवृत्ति मळी. ते पछी ते ज पद्धतिए तेमणे 'नेमिनाहचरिय'मांथी 'सणंकुमारचरिय'नो अंश संपादित करीने अभ्यासपूर्ण प्रस्तावना, अनुवाद अने शब्दकोश सहित जर्मनीमां १९२०मां तैयार कर्यो अने पुस्तकरूपे ते १९२१मां प्रकाशित थयो. आथी अपभ्रंश भाषा अने साहित्यना अध्ययन अने संपादन-प्रकाशनना श्रीगणेश मंडाया. याकोबीए आ विषयने लगती अनेक समस्याओ स्पष्ट करी आपी: तेमांथी केटलीकनो तेमणे उकेल आप्यो. तो केटलीकना उकेल माटेनी दिशा चींधी ने अध्ययननी दृष्टि अने पद्धति अंगे तेमणे राजमार्ग तैयार करी आप्यो.

तेमनुं 'सणंकुमारचरिय' तेमने प्राप्त (अने प्रस्तुत संपादन माटे पण उपयोगमां लीधेली) कागळनी एकमात्र प्रतने आधारे तैयार करेलुं छे.* ए

---

* Sanatkumāracaritam : ein Abschnitt aus Haribhadras Neminahacaritam (**सनत्कुमारचरितम्** : हरिभद्रना **नेमिनाथचरित्तम्**नो एक खण्ड)–: अपभ्रंशमां रचेली एक जैन कथा : सम्पादक, हेर्मान याकोबी (प्रस्तुत कर्युं: ५मी जून १९२०, बायरनी विज्ञान अकादेमीनो तत्त्वज्ञान-साहित्य–अध्ययन वर्ग, ३१मो ग्रन्थ, बीजो शोधनिवन्ध, प्रकाशित, म्युनिक १९२१.

प्रतनी लेखनपद्धति घणी विचित्र छे. अनेक अक्षरोना आकारो एकबीजा साथे सहेजे गूंचवाई जाय तेवा छे. प्, य् अने म्, म् अने स्, च् अने व्, घ अने थ्, ट् अने ठ्, ड् अने ढ्, त् अने न् च्छ् अने त्थ्, ड्ड अने ड्ढ, ड्ड, ड्ढ वगेरेस हेजे एकबीजाने बदले वांची शकाय तेवा छे. वळी १९१५नी आसपास अप शना व्याकरणनुं अने छंदरचनानुं ज्ञान पण अविकसित हतुं. आवी विकट परिस्थितिमां याकोबीओ 'सनत्कुमारचरित' पर करेलुं सफळ कार्य एक ज्वलन्त सिद्धि गणाय तेम छे. याकोबीओ तेमना ए संपादनमां ४४३थी ७८५ सुधीना छंदोनो पाठ छन्ददृष्टिओ चकासीने रोमन लिपिमां आप्यो छे. तेने अंते मूळ प्रतना अशुद्ध पाठ आप्या छे. ते पछी जर्मन भाषामां अनुवाद (अर्थघटनने लगती चर्चानोंधो साथे) आप्यो छे. ते पछी संस्कृतमां अर्थ, देश्य सामग्री माटेना आधार अने व्याकरणीय स्वरूपना निर्देश साथे शब्दकोश आप्यो छे. परिशिष्टमां 'नेमिनाहचरिय'ना आद्य १० छंदो अने अंत्य २८ छंदो जर्मन अनुवाद साथे तथा आ बन्ने खंडोना विशिष्ट शब्दोना कोश साथे आप्या छे. छेवटे शुद्धिवृद्धिनुं पत्रक मूक्युं छे. भूमिकामां (१) हरिभद्रसूरि अने तेना आश्रयदाता पृथ्वीपाळ विशेनी माहिती, (२) सनत्कुमारचरित्रने लगती संक्षिप्त परंपरा, (३) हरिभद्रनी रचनानो विस्तृत सार, (४) अपभ्रंश भाषाना सामान्य स्वरूप विशे, 'भविसत्तकह'नी प्रस्तावनामां करेली चर्चामांना केटलाक प्रश्नोनी पुनःचर्चा, (५) हस्तप्रतनो परिचय अने पाठ प्रस्तुत करवानी पद्धति, (६) आटली प्रस्तावनानी सूचि, (७) 'सनत्कुमारचरित'ने आधारे तैयार करेलुं विस्तृत अपभ्रंश व्याकरण, (८) 'सनत्कुमारचरित'नी छंदोरचना (पंचपदीनां एकी तथा बेकी चरणोना तथा दोहानां चरणोना स्वरूपविश्लेषण अने केटलाक गणोना स्वरूपने लगती अंकशास्त्रीय तारवणी साथे)–एटली सामग्री आपी छे. मुनि जिनविजयजीए, अपभ्रंश भाषा अने साहित्यना अध्ययनना आद्य अने अग्रणी प्रणेता तरीके याकोबीनी योग्य रीते ज उष्माभरी स्तुति करी छे [जुओ, 'पउमसिरिचरिउ'(१९४८)मांनुं तेमनुं 'किंचित् प्रास्ताविक', पृ० §६थी §१२]

सनत्कुमारनुं चरित्र

साधारण रीते सनत्कुमारचरित ए नेमिनाथना परंपरागत चरितना एक भाग तरीके नथी होतुं. हरिभद्रे ज तेने नेमिनाथना वृत्तांतमां एक आडकथा लेखे मूक्युं छे. ते ज प्रमाणे तेणे पोताना 'नेमिनाहचरिय'मां महावीरचरितने पण एक आड-

हने०	हरिभद्रकृत नेमिनाहचरिय	११६०
त्रिश०	हेमचंद्रकृत त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित	११६५ (लगभग)
उदो०	रत्नप्रभकृत उपदेशमालादोघट्टीवृत्ति	११८२

जैन परंपरामां सनत्कुमारना चरित्रनो क्रमे क्रमे विकास थयो छे. तेना विकसित रूपमां ते त्रण घटकोनुं बनेलुं होवानुं जोई शकाय छे : (१) पूर्वभवनो वृत्तान्त, (२) चक्रवर्ती-पदनी प्राप्ति सुधीनो वृत्तांत, (३) चक्रवर्ती-पदनो त्याग अने श्रमणजीवननो वृत्तांत. आमांथी आरंभमां सनत्कुमारनुं चरित्र मात्र त्रीजा घटक पूरतुं मर्यादित हतुं, पछीथी बीजा घटकनो अने छेवटे पहेला घटकनो उद्‌भव थयो एम मानवाने कारण छे. 'वसुदेवहिंडी'मां तथा 'उत्तरपुराण', 'बृहत्-कथाकोश' वगेरमां मळती दिगंबर परंपरामां मात्र त्रीजा घटकवाळो ज वृत्तांत छे. अने 'बृहत्कथाकोश,' 'धर्मोपदेशमालाविवरण,' 'उत्तराध्ययन-वृत्ति' अने 'आख्या-नकमणिकोशवृत्ति' मां पूर्वकर्मने कारणे उद्‌भवेला रोगपरिषहने उपचारकर्म विना समतापूर्वक सहेवाना उदाहरण लेखे सनत्कुमारचरित्र अपायुं छे. ते उपरथी पण उपर्युक्त त्रीजो घटक ए ज मूळ कथांश होवानी अटकळने समर्थन मळे छे.

चरित्रनो त्रीजो घटक

विकसित रूपना चरित्रमां त्रीजा घटकनी मुख्य मुख्य विगतो आटली छे:

सौधर्मेन्द्रे करेली सनत्कुमारना रूपातिशयनी प्रशंसा, बे देवोए सनत्कुमारनी बे वार लीधेली मुलाकात, सनत्कुमारनो वैराग्य अने श्रामण्य, रोगोनो उद्‌भव, इंद्रे करेली सहनशीलतानी प्रशंसा, परीक्षा करवा बे देवोनुं वैद्यवेशे आगमन, सनत्कुमारे करेलुं लब्धिनुं प्रदर्शन अने बोध, सनत्कुमारनुं स्वर्गगमन.

उपु०मां अपायेलुं चरित्र सौथी टूंकुं छे. तेमां मात्र उपर्युक्त त्रीजा घटकने लगती सौधर्मेन्द्रे करेली सनत्कुमारना रूपातिशयनी प्रशंसा, कौतुकथी बे देवोए सनत्कुमारने प्रत्यक्ष जोईने करेली खातरी, ते देवोए मनुष्यनां रूप यौवन वगेरेनी नश्वरतानो करेलो निर्देश, सनत्कुमारनो वैराग्य अने श्रामण्य अने कठिन तपने अंते निर्वाणप्राप्ति—एटली ज वीगतो छे. पुष्पदंतना 'महापुराण'मां पण उपु० वाळी कथानुं ज अनुसरण छे.

वहिं०मां पण मात्र त्रीजा घटकवाळो वृत्तांत अपायो छे. पण तेमां केटलीक नवी विगतो उमेरायेली जोई शकाय छे. तपास करवा आवनार देवो सामानिक देवो छे. तेओ ब्राह्मणनुं रूप धरीने, सनत्कुमार तेलनो अभ्यंग करीने

व्यायामशाळामां गयो हतो त्यारे तेने साक्षात् जुए छे. पोते स्नान बाद वस्त्रालंकारथी विभूषित थाय त्यारनी असाधारण कांति जोवा सनत्कुमार तेमने बोलावे छे. ते वेळा सनत्कुमारने जोईने आ थोडा समयमां पण तेनी झांखी पडेली कांतिथी देवो विषाद पामे छे, अने सनत्कुमारना पूछवाथी मानवदेहनी सतत क्षीण थती कांति अवधिज्ञानथी तेमनी नजरमां आवी होवानुं जणावे छे. एटले वैराग्यभाव उत्पन्न थतां सनत्कुमार श्रमण बने छे. तेना शरीरमां अनेक रोगो उत्पन्न थाय छे, जे सनत्कुमार समताथी सहे छे. इंद्र वैद्यने रूपे आवी रोगनो उपचार करवानी तत्परता बतावे छे. खेलौषधिनी लब्धिने कारणे सनत्कुमार थूंकथी शरीरनो एक भाग मसळीने तेने मूळना जेवो करी देखाडे छे, अने कहे छे के मटाडेला रोग फरीथी पण थाय छे कारण के ते कर्माधीन छे. माटे पोतें एवो तपसंयमनो मार्ग लीधो छे, जेथी रोगो कदी पण फरी न थाय. रोग सही, समाधि मरणथी काळ करीने सनत्कुमार सनत्कुमारकल्पमां इंद्र बने छे. दिगंबर परंपरामां सनत्कुमारने सीधा निर्वाण पामता वर्णव्या छे, ज्यारे श्वेतांबर परंपरामां तेमनो सनत्कुमारकल्पमां जन्म थयानुं कह्युं छे.

वहिं०मां जे निमित्ते सनत्कुमारनुं चरित्र कह्युं छे ते सनत्कुमारनी अणमानीती राणी सुषेणानो (जे पछीना भवमां सुभूम चक्रवर्तीनी राणी पद्मश्री बनवानी हती तेनो) उल्लेख बीजे क्यांय नथी.

आपणे आगळ जोईशुं तेम धवि०मां (संभवतः 'उपदेशमालाविवरण' उपरथी) आपेला कथासारमां प्रथम वार सनत्कुमारनुं त्रणे घटकवाळुं विस्तृत चरित्र रजू थयुं छे. आमांना त्रीजा घटकनी विगतो वहिं०मां जे आपेली छे ते ज छे. मात्र इंद्रे सनत्कुमारनां रूपातिशयनी करेली वात गळे न ऊतरतां—तेमां अश्रद्धाथी—देवो सनत्कुमारने प्रत्यक्ष जोवा आवे छे, बीजी वार सनत्कुमारने जोतां तेनी कांति क्षीण थयेली अने शरीर अनेक रोगोथी घेरायेलुं तेमने देखाय छे, अने औषधिलब्धिथी सनत्कुमार सडती आंगळीने 'तरुण दिवाकरना जेवी' बनावी दे छे—एटलो विगतफेर छे.

चम०मां पण त्रीजा घटकवाळो वृत्तांत उपर प्रमाणे ज छे. मात्र रोगोनी आपेली रीतसरनी यादी अने खेलौषधिलब्धिथी डाबा हाथनी तर्जनी 'सुवर्णवर्णी' करी बताववानी बात पूरतो फरक छे.

कथा तरीके आपेलुं छे. वळी आ पहेलां हरिभद्रे पोताना 'मल्लिनाहचरिय'मां पण सनत्कुमारचरितने आडकथारूपे गूंथेलुं ज हतुं. पोतानी ए प्राकृत गाथाबद्ध रचनाने तेणे फरीथी 'नेमिनाहचरिय'मां अपभ्रंश भाषामां अने वस्तु छंदमां रजू करी.

जैन पुराणपरंपरा अनुसार सनत्कुमार त्रेसठ महापुरुषो के शलाकापुरुषोमांना एक हता चोवीस तीर्थंकर, बार चक्रवर्ती, नव वासुदेव, नव बलदेव अने नव प्रतिवासुदेव—एम त्रेसठ महापुरुषोनां चरित्र जैन परंपरामां मळे छे. बार चक्रवर्तीमांथी सनत्कुमार ए चोथो चक्रवर्ती हतो. तेनी पूर्वे भरत, सगर अने मघवा चक्रवर्ती थया.

सनत्कुमारचरित्रने लगती रचनाओ

सनत्कुमारनुं चरित्र जैन साहित्यिक परंपरामां (१) त्रेसठ महापुरुषोना चरित्रने लगती रचनाओना एक भाग तरीके, (२) अन्य कोई रचनाना एक भाग तरीके (एटले के दृष्टान्तकथा लेखे) तथा (३) स्वतंत्रपणे—एम विविध रूपे मळे छे. दिगंबर परंपरामां त्रेसठ महापुरुषोना चरित्रने लगती रचनाओ महापुराणना नामे ओळखाय छे. ए रीते संस्कृतमां ई. स. ८९७ पहेलां रचायेल गुणभद्रना 'उत्तरपुराण'मां (६१मुं पर्व, श्लोक १०४–१३०) अने अपभ्रंशमां ९६५थी ९७१ सुधीमां रचायेला पुष्पदंतना 'महापुराण'मां (५६मो संधि, १७थी १९ सुधीनां कडवक) सनत्कुमारचरित्र अपायुं छे. श्वेतांबर परंपरामां प्राकृतमां ८६९मां रचायेल शीलांकना 'चउपन्नमहापुरिसचरिय'मां (२९मुं चरित्र, पृ. १३८ थी १४५) अने संस्कृतमां १०६५ लगभग रचायेल हेमचंद्रना 'त्रिषष्टिशलाकापुरुषचरित्र'मां (पर्व ४, सर्ग ७, श्लोक १थी ४०४) ते मळे छे.

कथाकोशोमां तथा आगमिक के औपदेशिक ग्रंथो परनी वृत्तिओमां पण सनत्कुमारनुं चरित्र मळे छे. जेम के दिगंबर परंपरामां शिवार्यनी 'भगवती आराधना'नी १५४२मी गाथामां आपेला निर्देश अनुसार आराधना-कथाकोशोमां सनत्कुमारनो प्रसंग छे. संस्कृतमां हरिषेणना 'बृहत्कथाकोश' (८३२)-मां १२९मी कथा, प्रभाचंद्रना कथाकोश(११मी शताब्दी)मां त्रीजी अने छासठमी कथामां, कन्नडमां 'वड्डाराधने'(आशरे ११मी शताब्दी)मां चोथी कथामां, अने अपभ्रंशमां श्रीचंद्रना 'कहकोस'(आशरे १०७०)मां ४७मी

संधिना बीजा कडवकथी पांचमा कडवक सुधीमां; श्वेतांबर परंपरामां प्राकृतमां संघदासनी 'वसुदेवहिंडी' (आशरे पांचमी शताब्दी)मां १४मा मयणवेगा-लंभमां (पृ. २३३–२३५), जयसिंहना लुप्त 'उपदेशमालाविवरण'मां तथा तेना 'धर्मोपदेशमालाविवरण' (८५९)नी ९४मी कथामां, आम्रदेवना 'आख्या-नकमणिकोशवृत्ति'(११३४)मां १२७मा आख्यानकमां, देवेंद्रनी 'उत्तरा-ध्ययन'ना १८मा अध्ययननी ३७मी गाथा परनी टीकामां, हरिभद्रना 'मल्लि-नाहचरिय'(११६० पहेलां)मां तथा अपभ्रंशमां तेना 'नेमिनाहचरिय' (११६०)-ना एक भाग लेखे ते प्राप्त थाय छे. छेल्ली बे रचनाओनो पाठ आ पुस्तकमां आपवामां आव्यो छे.

स्वतंत्र रचना लेखे श्रीचंद्रनुं प्राकृत महाकाव्य 'सणंकुमारचरिय' (११५८), जिनपालकृत संस्कृत महाकाव्य 'सनत्कुमारचक्रिचरित्र' (१२०६) तथा बीजां वेत्रण सनत्कुमारचरित्रो मळे छे. आ बधां हजी अप्रकाशित छे.

सनत्कुमारचरित्रनो विकासक्रम

नीचे सनत्कुमारचरित्रने लगती जे जे कृतिओनी तुलना करी छे तेमना नामना संक्षेपो अने रचनासमय आ प्रमाणे छे :

संक्षेप	कृति	रचनासमय
वहि०	संघदासकृत वसुदेवहिंडी	आशरे पांचमी शताब्दी
उवि०	जयसिंहकृत उपदेशमालाविवरण (लुप्त)	नवमी शताब्दी
धवि०	जयसिंहकृत धर्मोपदेशमालाविवरण	८५९
चम०	शीलांककृत चउपन्नमहापुरिसचरिय	८६९
उपु०	गुणभद्रकृत उत्तरपुराण	८९७ पहेलां
बृको०	हरिषेणकृत बृहत्कथाकोश	९३२
मप०	पुष्पदंतकृत महापुराण	९६५–९७२
कको०	श्रीचंद्रकृत कहकोस	१०७०
उवृ०	देवेंद्रकृत उत्तराध्ययन-वृत्ति	१०७३
आकोवृ०	आम्रदेवकृत आख्यानकमणिकोशवृत्ति	११३४
हम०	हरिभद्रकृत मल्लिनाहचरिय	११६० पहेलां
सच०	श्रीचंद्रकृत सणंकुमारचरिय	११५८

आ पछी बृको० मां त्रीजा घटकना वृत्तांतमां केटलीक नवी विगतो देखाय छे. बृको०मां दिगंबर परंपरा अनुसार मात्र त्रीजुं घटक मळे छे. बृको०ए श्वेतांबर परंपराना वहिं०, धवि० अने चम०मां त्रीजा घटकनुं जे रूपांतर मळे छे तेनो लाभ तो लीधो ज छे, पण इंद्रे करेली रूपप्रशंसा वाळो प्रसंग तेमां जुदी रीते छे. सौधर्मेन्द्र सौदामनी नाटक जोतो हतो त्यारे कार्यप्रसंगे ईशान-कल्पमांथी आवेला संगम नामना देवनी बीजा सौने झांखा पाडती देहकांतिनो इंद्रे एवो खुलासो आप्यो के ते देवे पूर्व भवे आयंबिल वर्धमान तप करेलुं तेनुं आ फळ छे. 'एवुं कांतिमान बीजुं कोई छे खरुं ?' एवा देवोना प्रश्नना उत्तरमां इंद्रे पृथ्वीमां हस्तिनागपुरनो चक्रवर्ती राजा सनत्कुमार संगमदेव करतां पण अधिक तेजस्वी होवानुं जणाव्युं. आ पछीनी बे देवोनी मुलाकातमां पोताने अलंकृत स्वरूपमां निहाळवा सनत्कुमारे रूपगर्वथी प्रेराईने देवोने फरी निमंत्र्या, अने त्यारे मानवीना रूपयौवननी क्षयधर्मितानी वात सांभळीने सनत्कुमारे जोयुं तो तेने पोताने पण शरीर कांतिहीन कळायुं–एटली विगत वधारे छे. वळी ते पछी श्रमण तरीके विहार करता सनत्कुमारमुनिने भिक्षामां मळेला बकरीना दूधनी छाशमां मिश्रित चीणा भातना भोजनथी अनेक रोगो उद्भव्यानुं अने आमौषधि, खेलौषधि वगेरे सिद्धि प्राप्त थया छतां तेणे रोगोनो प्रतिकार न कर्यानुं जे कह्युं छे, तथा फरीथी सौधर्मेन्द्रे सनत्कुमारनी सहनशक्तिनी प्रशंसा करी तेथी पेला ज बे देवो वैद्यवेशे सनत्कुमारनी फरी परीक्षा करवा आव्यानी जे वात छे, ते नवां उमेरायेलां तत्त्वो छे. खेलौषधिथी अंगने सारुं करी बतावबानी विगत बृको०मां छोडी दीधेली छे.

कको०बृको०नो उपजीवी होईने तेमां आवो ज वृत्तांत छे. मात्र खेलौ-षधिथी देहने दिव्य करी देखाडवानी वात वधारे छे.

सनत्कुमारचरित्रना त्रीजा घटकमां प्रथम वार बृको०मां देखातां उपर्युक्त नवीन अंशो पछीथी श्वेतांबर परंपराना उवृ०, हम०, हने० अने त्रिश०मां पण स्वीकृत थया छे. देवेंद्रे उवृ०मां चम०मांनुं सनत्कुमारचरित्र लगभग अक्षरशः उद्धृत कर्युं छे, पण वच्चे केटलोक अंश बीजेथी लीधो छे. चरित्रना त्रीजा घटकने लगती उपर जणावेली जे नवी वीगतो पहेली वार आपणे बृको०मां जोईए छीए ते बधी उवृ०मां पण मळे छे. उपचार करवा आवेला देवो पाछा फरता सनत्कुमारमुनि-ने जे वचनो उवृ०मां कहे छे, तेमनुं बृको०ना करतां कको०नी साथे वधु शाब्दिक साम्य छे.

वृको० : समस्तभुवनख्यातो महावैद्यो रुजापहः
अमुं त्वमेकयोगीन्द्र निराकार्तुमलं प्रभो ॥
ककोo : भववाहिमहणे तुह सत्ति परा ॥
तुहुँ परमवेज्जु जगसंतियरु ।
उवृ० : तुम्हे चेव संसारवाहिफेडणपरमवेज्ज त्ति पसंसिय ।

आको० सनत्कुमारना विस्तृत चरित्रथी परिचित छे. पण ते एक तरफथी तेनो संक्षेप करे छे, तो बीजी तरफथी वर्णनो, शास्त्रीय संदर्भो (जेम के सामुद्रिक प्रमाणेनां पुरुषलक्षण अने स्त्रीलक्षण, वैद्यक प्रमाणेनां रोगलक्षण), स्तुति वगेरे इतर सामग्रीथी तेने पल्लवित करे छे. चरित्रना त्रीजा घटकमांनी रोगोनो यादी वधु विस्तृत बनी छे. धवि०मां जेम शक्र शबरवैद्यनुं रूप लईने आवे छे, तेम अहीं पण बे देवो शबरवैद्य बनीने आवे छे. चम०मां छे ते प्रमाणे अहीं पण सनत्कुमार थूंकथी मसळीने डाबा हाथनी तर्जनी 'साडा सोळ वानी'ना सोना जेवा वाननी बनावे छे. वको०अने उवृ०नी जेम अहीं पण परीक्षा करवा आवनार बे देवोनां नाम विजय अने वैजयन्त छे. आम आपणने आको०ना आधारभूत साधनोनो संकेत मळी रहे छे.

हम०मां आपेलुं सनत्कुमारचरित्र चम०ना गद्यचरित्रनुं ज पद्यरूपान्तर छे. तेमां चम०नी गाथाओ सीधेसीधी उठावी लीधेली छे, ज्यारे गद्यना शब्दोने यथाशक्य गाथामां ढाळी दीधा छे. वृत्तांतना त्रीजा घटकने पण आ वात पूरेपूरी लागु पडे छे. पण देवोना रोग मटाडवाना कहेणना उत्तरमां सनत्कुमार मुनिए ज्यां एवो प्रश्न पूछ्यो छे के 'तमे रोगो आ भव पूरता ज मटाडो छो के सर्व काळ माटे ?' तेने स्थाने हम०मां एवो प्रश्न छे के 'तमे तनुरोगने शमावो छो के कर्मरोगने ?' अने आ प्रश्नमां उवृ०मांना 'तमे शरीर व्याधिने मटाडो छो के कर्मव्याधिने' एवा प्रश्ननो ज पडघो छे. ते ज प्रमाणे सनत्कुमारने थयेला रोगोनी चम०मां (अने आकोवृ०मां) जे लांबी यादी छे, तेने स्थाने हम०मां सात व्याधिओ गणावती एक गाथा उद्धृत करेली छे. आ गाथा सहेज शब्दफेरे आकोवृ०मां पण उद्धृत थयेली छे, अने ते ज भावार्थनी एक गाथा उवृ०मां आपेली छे.

हने०मांनुं सनत्कुमारचरित्र हम०ना प्राकृत चरित्रनुं अपभ्रंश भाषामां अने रड्डा के वस्तु छंदमां करेलुं काव्य-रूपान्तर छे. पूर्ववर्ती चरित्रनी सामग्री लईने

हरिभद्रे सनत्कुमारना चरित्रने लगती रीतसरनी, प्रसंग अने भावनो मावजत करती अने अलंकृत लीनी काव्यमय रचना आपवानुं लक्ष राख्युं छे. हरिभद्रना अपभ्रंश रूपांतरने, व गाळामां बे ज वर्ष पहेलां रचायेला श्रीचंद्रना सच०नो लाभ मळ्यो लागे छे, केम के देवोनो प्रतिभाव सांभाळीने पोतानुं रूप निहाळता सनत्कुमारनी लागणी जे शब्दोमां सच०मां व्यक्त थई छे ('मसिमीसियजलओहलियं') ते ज शब्दोनो पडघो हरिभ पाडयो छे ('मसिरसिण ओहलियं').

सनत्कुमारचरित्रना त्रीजा घटक पूरतो त्रिश०नो मुख्य आधार उवृ० (अने ते द्वारा चभ०) होवानुं जणाय छे. पण बीजी वार परीक्षा करवा आवेला देवोने सनत्कुमारनो जे प्रश्न छे तेमां, आगली परंपरामां ज्यां आ भवना व्याधि अने पर भवना व्याधिनो, बको०मां सामान्य व्याधि अने संसारव्याधिनो, अने उवृ०मां शरीरव्याधि अने कर्मव्याधिनो विरोध छे, त्यां आकोवृ०मां द्रव्यक्रिया अने भावक्रियानी सविस्तर चर्चा छे, अने त्रिश०मां आने अनुसरीने द्रव्यव्याधि अने भावव्याधिनो भेद करेलो छे. छेल्ले उदो०ना सनत्कुमारचरित्रना त्रीजा घटकनो आधार त्रिश० तथा आकोवृ०ए जे वधारानुं रूपान्तर वापरेलुं ते होवानुं जणाय छे. केम के सनत्कुमारनुं रूप जोईने परीक्षा करवा आवेला देवो पर पडेलो प्रभाव त्रिश०मां (धूनयामासतुर्मौलिम्) अने उदो०मां (सिरधूणणं कुणंता) एक सरखी रीते व्यक्त थयो छे. अने ते अन्यत्र आपेली विगतोथी जुदो पडे छे. बीजुं, सनत्कुमारने थयेला सात रोगो वाळी जे गाथा आकोवृ०मां टांकेली छे, तेनी ते उदो०मां पण आपेली छे. अने द्रव्यव्याधि अने भावव्याधिनी चर्चा पण कांईक अंशे आकोवृ०नी याद आपे छे.

चरित्रनो बीजो घटक

बीजा घटकमां सनत्कुमारनो जन्म अने युवानी, अश्वापहार, मित्र महेन्द्रसिंहनी शोध, बकुलमतीनुं वृत्तान्तकथन, यक्षनी सहायथी मानससरोवर पहोंचवुं, असिताक्ष साथेनुं युद्ध, विद्याधर भानुवेगनी आठ कुमारीओ साथे विवाह, सुनन्दासाथे मेळाप अने वज्रवेगनो वध, संध्यावलि साथे विवाह, चन्द्रवेग अने भानुवेगनी सहाय, संध्यावलिए आपेली प्रज्ञप्तिविद्या, अशनिवेगनी साथे युद्ध, वैताढ्यना राज्यनो प्राप्ति, अर्चिमालि मुनिए करेलुं भविष्यकथन अने तेमणे कहेला सनत्कुमारना पूर्वभववृत्तान्तनुं कंचुकी द्वारा कथन (सनत्कुमार-चरित्रनो ए त्रीजो घटक छे.), चन्द्रवेगनी सौ कन्याओ साथे विवाह, हस्तिनापुरमां पुनरागमन अने चक्रवर्तित्वनी प्राप्ति : एटली मुख्य घटनाओ छे,

आ बधी घटनाओ विस्तारपूर्वक जयसिंहना उवि०मां अपायेली, जेनी रूपरेखा तेणे धवि०मां आपी छे. वहि०मां तथा दिगंबर परंपरामां (उपु०, वृ० को०, मपु० अने कको०मां सनत्कुमारनुं केवळ मुनिचरित्र आपेलुं होईने आ बीजो घटक खूटे छे.) उपलब्धमां प्रथम वार आपणने चम०मां आ बीजा घटक वाळो वृत्तांत विगते मळे छे. उत्तरकालीन सनत्कुमारचरित्रो आ बीजा घटक परत्वे घणुंखरुं चम०नां ज उपजीवी छे. उवृ०ए तो चम०नुं सनत्कुमारचरित्र आखुं ने आखुं उठावी लीधुं होईने आ बीजो घटक पण तेमांथी ज अक्षरशः लीधेलो छे. मात्र असिताक्ष यक्ष साथेनुं युद्ध, इंद्रे करावेलो सनत्कुमारनो अभिषेक वगेरे जेवी केटलीक वीगतो बीजेथी लीधेली छे. आकोवृ०मां आ बीजो घटक बहु ज संक्षेपमां—३४ जेटली गाथामां अपायो छे, अने तेमां पण अश्वापहार पछीनी घटनाओनो सहेजसाज ज स्पर्श करेलो छे. छतां पण केटलीक गाथाओ सीधी ज चम०मांथी लीधेली छे. हम०ए पण चम०ना गद्यने गाथामां ढाळ्युं छे, ज्यारे हने०मां ए ज सामग्रीनो काव्यत्व वाळी रचना करवामां उपयोग थयो छे. हने०मां सुनंदा साथेनो हस्तिनापुरना उद्यानमांनो प्रणयप्रसंग अने सनत्कुमारनुं विद्याधर-चक्रवर्ती बनवुं एटलो हरिभद्रनो उमेरो छे. वळी सनत्कुमारना पूर्वभवनी वात चन्द्र-वेगनो कंचुकी नहीं, पण चन्द्रवेग पोते ज करतो होवानुं निरूपण छे. त्रिश० कथानक माटे पूर्ववर्ती परंपराने ज अनुसरे छे. महेन्द्रसिंहना भ्रमणवृत्तांतमां जेम चम०ए षड्ऋतुवर्णन आपेलुं छे, तेम त्रिश० पण ते आपे छे. मात्र तेमां पूर्वभवनो वृत्तांत वच्चेथी खसेडीने सौनी आगळ गोठवी दीधेलो छे. उदो०मां बीजा घटक वाळो वृत्तांत, टुंकावीने आपेलो छे, तथा पूर्व भवना वृत्तांतनो थोडोक स्थानफेर करेलो छे. संध्यावलिने माटे नैमित्तिके करेलुं भाविकथन उवृ०ने अनुसरीने त्रिश० अने उदो०मां अपायुं छे.

उवृ०	भाइवहगस्स भज्जा होही ।
त्रिश०	भर्ता ते भ्रातृवधको भावी ।
उदो०	भाइयवावायगो वरो होही ।

एक घणो सूचक विगत ए छे के सनत्कुमारना पितानुं नाम उपु०मां अनंतवीर्य छे, वहि०मां, उवृ०मां, हम० अने हने०मां तथा त्रिश०मां अश्वसेन (आससेण) छे, ज्यारे कको०, चम०, आकोवृ० अने उदो०मां विश्वसेन (वीससेण) छे. वळी बीजी वीगतमां पण विविध रचनाओमां थोडोक फरक मळे छे: सनत्कुमारे

जेनी पासे दीक्षा लीधी ते गुरुनुं नाम उपु०मां शिवगुप्त छे, चम०मां विजयसेन छे, उवृ०मां राधाचार्य छे,* ज्यारे बृको०, कको०, आकेवृ०, त्रिश० अने उदो०मां विनयंधर छे. हम०मां ऋषभाचार्य (हने०मां ऋषभदत्त) छे.

आम सनत्कुमार चरित्रना बीजा घटकनो मुख्य आधार लुप्त उवि० अने तदनुसारी चम० जणाय छे. आ घटक श्वेतांबर परंपरानां चरित्रोमां ज मळे छे.

चरित्रनो पहेलो घटक

सनत्कुमारचरित्रनां पहेला घटकमां सनत्कुमारना पूर्व भवना वृत्तांतमां विक्रमयश राजाए नागदत्त सार्थवाहनी स्त्री विष्णुश्रीनुं करेलुं अपहरण, राजानी राणीओए कामण करीने करेलो विष्णुश्रीनो घात, तेना विकृत शबने जोईने वैराग्य, तपश्चर्या करी मृत्यु पामी सनत्कुमारकल्पमां उत्पन्न थवुं, नागदत्तनुं पत्नीना अपहरणथी उन्मत्त बनी मृत्यु पामवुं, विक्रमयशनुं जिनधर्म श्रावक तरीके अवतरवुं, नागदत्तनुं अग्निशर्मा तापस तरीके अवतरवुं, अग्निशर्माए जिनधर्मनी पीठ पर मूकी धग धगता पात्रमां करेलुं भोजन, जिनधर्मनो कायोत्सर्ग करीने देहत्याग, सौधर्मेन्द्र तरीके जन्म अने अग्निशर्मानो तेना वाहन ऐरावत तरीके जन्म, पछी ऐरावतनो असिताक्ष यक्ष तरीके जन्म : आटली घटनाओ छे. कथाना विकासक्रमनी दृष्टिए जोईए तो वहिं०मां सनत्कुमारना पूर्व भवोनो सहेज पण निर्देश नथी. दिगंबर परंपरामां पण मुनि तरीकेनो ज सनत्कुमारनो वृत्तांत होईने उपु०, बृको०, मपु० तेम ज कको०मां पूर्व भवना वृत्तांतनो अभाव छे. श्वेतांबर परंपरामां पहेल प्रथम आपणने धवि०नी रूपरेखामां चन्द्रवेग विद्याधरना कंचुकीए (अर्चिमाली)मुनिए कहेला वृत्तांतने आधारे सनत्कुमारनो पूर्व भव वर्णव्यो होवानो निर्देश छे. ते उपरथी आपणे अटकळ करी शकीए के जयसिंहना उवि०मां ते वृत्तांत सविस्तर अपायो हशे. ते पछी चम०मां ते तद्दन संक्षेपमां बे पंक्तिमां ज अपायो छे. ते पछी उवृ०मां आपणने सनत्कुमारना पूर्व भवनो सविस्तर वृत्तांत मळे छे. उवृ० ए चम०मांथी आखो ने आखो उतारो आपवा उपरांत चम०मां न होय तेवा केटलाक कथांशो माटे बीजा कोई मूलस्त्रोतनो उपयोग कर्यो छे. आ पूर्व भवना वृत्तांतनी बाबतमां पण एम ज छे. ते उवि०मांथी लेवायो हशे के बीजेथी ते चोक्कस कही शकाय तेम नथी. ते पछी आकोवृ०ए सनत्कुमारचरित्रने टूंकमां ज पताव्युं होवाथी, चम०ने ते अनुसरती होवा छतां, पूर्व भवनी वातने तेणे जती

---

* उवृ०मां 'राहायरियं' छे ते कदाच भ्रष्ट पाठ होय अने शुद्ध पाठ हम०मां छे ते 'उसहायरियं' होय.

करी छे. तो हम० (तथा हने०), त्रिश० अने थोडा घटनासंक्षेप अने पल्लवन साथे उदो०मां ते उवृ०ने (के तेना पूर्वस्रोतने) अनुसरीने पूर्व भवनो संपूर्ण वृत्तांत आपेलो छे. मात्र त्रिश०ए क्रमनी दृष्टिए सनत्कुमारना चरित्रनो पुनर्व्यवस्था करी होईने पूर्व भवनो वृत्तांत वच्चेथी खसेडी लईने सर्वप्रथम आरंभमां ज मूकी दीधो छे. आ बधी हकीकतो ध्यानमां लेतां विकासक्रमनी दृष्टिए पूर्व भवनो वृत्तांत सनत्कुमारचरित्रमां सौथी छेल्लो उमेरायो होय एम लागे छे. उवृ० अने हम०मां तथा हने०मां पूर्व भवनो वृत्तांत कहेनार चन्द्रवेगनो कंचुकी नहीं पण चन्द्रवेग पोतें ज छे, तो उदो०मां ते कहेनार भानुवेग छे. वळी हम०मां सौधर्मेन्द्र तरीके उत्पन्न थयेल विक्रमयशना जीव अने तेना ऐरावत तरीके जन्मेल नागदत्तना जीव वच्चेनो प्रसंग हरिभद्रे करेलो उमेरो छे.

आ रीते एक तरफथी प्राकृत, संस्कृत अने अपभ्रंशमां रचायेलां अने बीजी तरफथी श्वेतांबर के दिगंबर परंपरानां केटलांक सनत्कुमारचरित्रोनी अहीं करेली तुलना अने तारवणी उपरथी जोई शकाशे के सनत्कुमारनी कथानो विकास त्रण तबक्के थयो छे. रूपवैभवने क्षयधर्मी अने अनित्य समजी श्रमण बननार राजाना, अने प्रतिकार विना रोगोनो पीडा समतापूर्वक सहेनार महात्माना दृष्टांत तरीके सनत्कुमारना चरित्रनो जे अंश छे ते सौथी पुराणो जणाय छे. 'वसुदेव-हिंडी'मां अने दिगंबर परंपरानां चरित्रोमां तेटलो ज भाग मळे छे. वहिं०मां ते भागनुं जे स्वरूप बंधायुं छे, ते ज, उपु०ना अने तेना पर अवलंबता मपु०ना अपवादे सर्वत्र स्वीकार पाम्युं छे. मात्र ते पछी बृको०ए तेमां केटलीक विगतो उमेरी छे, जे पछीनी श्वेतांबर-दिगंबर परंपरामां प्रचलित बनी छे. श्वेतांबर परंपरामां पूर्व भवनो वृत्तांत अने चक्रवर्तीपद प्राप्त करवा सुधीनो वृत्तांत उवि०मां प्रथम वार देखाय छे, अने पछीनी ते परंपरानी रचनाओमां ते सर्वत्र स्वीकार पामे छे. आमां पूर्व भवनी कथा विनानुं एकेय चरित्र मळतुं नथी, छतां केटलीक रचनाओमां मळतुं तेनुं टूंकुं स्वरूप तथा त्रिश०मां थयेलो तेनो स्थानफेर लक्षमां लेतां ते अंश बीजा बे अंशोनी तुलनाए सौथी छेल्लो उमेरायानो अटकळ करी शकाय. आ उपरथी जोई शकाशे के सनत्कुमारचरित्र पूरतो एक तरफथी श्वेतांबर अने दिगंबर परंपरानी वच्चे लाक्षणिकपणे तफावत छे, तो बीजी तरफ बंने परंपरानो एकबीजी पर प्रभाव पण पडतो रह्यो छे, अने परस्पर कथासामग्रीनी आपले थती रही छे.

'सणतुकुमारचरिय'नी छंदोरचना

'सणतुकुमारचरिय'मां सळंग एक ज छंद वपरायो छे. (हरिभद्रनुं 'नेमिनाहचरिय' पोते पण मुख्यत्वे आ एक छंदमां गूंथेलुं छे.) ए छंदनुं नाम छे 'रड्डा' के 'वस्तु'. ए लाक्षणिकपणे एक अपभ्रंश छंद छे, अने पछीथी जूनी गुजरातीनी रास वगेरे प्रकारनी कृतिओमां ते आशरे पंदरमी-सोळमी शताब्दी सुधी वपरातो रह्यो छे. जैन लेखकोए क्वचित् संस्कृतमां पण तेनो प्रयोग कर्यो छे. (जेम के धनपालनी 'तिलकमंजरी' कथामां).

'रड्डा' छंद जेने द्विभंगी कहे छे ते वर्गनो छंद छे. द्विभंगी वर्गना छंदोमां जुदां जुदां लक्षण धरावता बे छंदोनी एक एक कडीने जोडीने एक एकम बनावेलुं होय छे. वाक्य एक छंदमां निबद्ध पहेली कडीमां शरू थईने बीजा छंदमां निबद्ध बीजी कडीमां पूरुं थाय छे. आम रड्डा एक संकुल छंद छे, सादो नथी.

रड्डानो पहेलो घटक **मात्रा** छंदनी एक कडीनो अने तेनो बीजो घटक **दोहा** छंदनी एक कडीनो बनेलो होय छे. (अहीं 'मात्रा' ए अमुक छंदनुं विशेषनाम छे ए ध्यानमां राखवुं. तेने 'एक मात्रा', 'बे मात्रा', 'चार मात्रा' एवा प्रयोगोमां छंदस्वरूप माटे वपराती मापदर्शक 'मात्रा' संज्ञाथी जुदी समजवी). अपभ्रंशना पिंगळग्रंथो अनुसार मात्राछंदमां पांच चरण अने दोहाछंदमां चार चरण होय छे. आ दृष्टिए रड्डा नवपदी छंद छे.

मात्रा छंद

मात्राछंदमां पांच चरण होय छे, अने ते चरणो अणसरखा मापनां होवाथी मात्राछंद विषम पंचपदी प्रकारनो छंद छे. तेना पांच चरणमां अनुक्रमे १५, ११ (के १२), १५, ११ (के १२), १५ ए प्रमाणे मात्रासंख्या होय छे. बेकी चरणोमां साधारण रीते ११ मात्रा होय छे, तो क्वचित १२ पण होय अने ते पण कोई एक बेकी चरणमां के बंनेमां. मात्राछंदना आ बार मात्रा वाळा प्रकारनुं नाम छे–मत्तबालिका. आ चरणोनुं गणबंधारण नीचे प्रमाणे छे :

चरण पहेलुं : ३ + ४ + ३ + ५ (छेल्ली पांच मात्रानुं स्वरूप uu uu u)

बीजुं, चोथुं : ४ + ४ + ३ (अथवा ५+४+२)

त्रीजुं, पांचमुं ५ + ५ + ५ (छेल्ली पांच मात्रानुं स्वरूप u uu uu)

त्रीजुं अने पांचमुं चरण प्रासबद्ध होय छे.

उदाहरण :–

पहेलुं चरण :– तयणु सुंदरु करिवि सिंगारु
uuu,–uu uuu ––u
३ + ४ + ३ + ५ = १५

बीजुं चरण :– आणंद-समुल्लसिय
– –,u u–,uuu
४ +४+ ३ = ११

त्रीजुं चरण: रोम-राइ-रेहंत-विग्गहु
– u–,u– –,u– uu
५ + ५ + ५ = १५

चोथुं चरण : कुरु-वंस-मंडण-रयणु
uu – u ,–uu ,uuu
५ + ४ + ३ =१२

पांचमुं चरण : सहल-विहिय-निय-दार-संगहु
uuu uu , u uu –u –uu
५ + ५ + ५ = १५

प्रास : विग्गहु – संगहु

दोहा छंद

दोहा छंद चार चरणनो आंतरसम छंद छे. आंतरसम एटले जेनां चरण एकांतरे सरखां होय–एटले के पहेला अने त्रीजा चरणनुं माप एक सरखुं अने बीजा अने चोथा चरणनुं माप एक सरखुं. दोहामां चार चरण होवाथी ते आंतर-समा चतुष्पदी प्रकारनो छंद छे. तेना चार चरणमां अनुक्रमे १३, ११, १३, ११ ए प्रमाणे मात्रासंख्या होय छे. आ चरणोनुं गणबंधारण नीचे प्रमाणे छे :

पहेलुं अने त्रीजुं चरण : ६ + ४ + ३ (छेल्ली त्रण मात्रानुं स्वरूप uuu)

बीजुं अने चोथुं चरण : ६ + ४ + १ (छेल्ली त्रण मात्रानुं स्वरूप –u)

बेकी चरणो प्रासबद्ध होय छे.

उदाहरण :

पहेलुं चरण : सिविण-वियाणय नर निययं-
uuu u—,uu uu, uuu
६ + ४ + ३=१३

बीजुं चरण : पुरिसिहिँ सद्दावेइ
uuuu –, – –, u
६ + ४ + १ = ११

त्रीजुं चरण : अह लहु सविहागयहँ तहँ
uu uu uu,–uuu, uu
६ + ४ + ३ = १३

चोथुं चरण : आसणु वियरावेइ
– uu uu,– –, u
६ + ४ + १ = ११

प्रास सद्दावेइ—वियरावेइ

विशिष्टता

उपर्युक्त स्वरूप रड्डाछंद माटे सर्वमान्य छे. मान्य छंदोग्रंथोमां तेनुं निरूपण छे, अने अनेक प्रयोगोमां ते समर्थित थाय छे. हरिभद्रनो रड्डाछंदनो प्रयोग घणे भागे नियमानुसार छे, पण थोडेक अंशे तेमां अपवाद छे. थोडांक स्थळे मात्राछंदनुं बीजुं अने त्रीजुं चरण बे नहीं पण एक ज चरण होय, अने ते ज प्रमाणे चोथुं अने पांचमुं मळीने पण एक ज चरण थतुं होय तेवो व्यवहार जोवा मळे छे. ते ज रीते दोहाछंदमां पण हरिभद्र पहेलुं अने बीजुं मळीने एक, अने त्रीजुं अने चोथुं मळीने एक—एम बे ज चरण होय (चार नहीं) ए रीते कोईक वार रचना करे छे. आम एवे स्थळे तेने मते मात्राछंद त्रिपदी होय, दोहाछंद द्विपदी होय अने समग्र रड्डाछंद पंचपदी (एटले के पांच चरणनो) होय एवो व्यवहार जोवा मळे छे. उदाहरण तरीके बीजुं अने त्रीजुं चरण :

कत्थूरिय-अगरु-**सिरिखंड**-पंक-फल-कुसुम-दामिहिं (४८८)

थिर-चिंत्तिण-सीह-**अवलोइएण** वि हु ति न निरिक्खिय (७६७)

त्रीजुं अने चोथुं चरण

ता कण्णय भणइ **अणुसरिवि** लज्ज अज्जवु निसग्गिउ (६१७)

छट्ठुं अने सातमुं चरण

तं निब्भर-दुह-पसर-**परिपूरिय**-गल-सरणीउ (४४६)

असणिवेग—अभिहाणु **खयराहिवु** गरुय-मरट्टु (६४५)

जक्खहं सोलस-सहस **परिसंखहँ** आणकराहँ (७५४)

आठमुं अने नवमुं चरण :

भणइ स-सज्झसु कुमरु **ससिमुहि** वयणिहिं सरसेहिं (५२१)

निरुवम-लक्खणु पयड-**अभिहाणु** जलहिकल्लोलु (५२७)

विहुरिय-अंगोवंगु **परिचिंतइ** विविह-वियप्पु (६६९)

विगय-त्ताण अणाह परिमिल्लिर-गुरु-तीसास (७६६)

समासना बे घटको विच्छिन्न थया होय तेवां चरणांत अने चरणादि स्थानो तो संख्याबंध छे * .

'सणतुकुमारचरिय'नी अपभ्रंश भाषा

'सणतुकुमारचरिय'नो अपभ्रंश उत्तरकालीन होवाथी नवमीदसमी शताब्दीना स्वयंभू, पुष्पदंत वगेरेना अपभ्रंशथी केटलीक बाबतमां जुदो पड़े छे. मोटे भागे तो हेमचन्द्रे नोंधेली अपभ्रंशनी लाक्षणिकताओ तेमां देखाय छे. पण ते उपरांत पण केटलांक नवां तत्त्वो आपणे तारवी शकीए छीए. गुजरात प्रदेशनी तत्कालीन लोकभाषाना प्रभावने आ 'नवां' तत्त्वो माटे जवाबदार गणी शकाय. अहीं हरिभद्रना अपभ्रंशना स्वरूपनो परिचय आपवानी दृष्टिए ज केटलांक ध्यानपात्र रूपो अने प्रयोगो नोंध्यां छे.

सामान्य

अपभ्रंशमां जे विशिष्टपणे अपभ्रंश रूपो होय तेमनी साथोसाथ विशिष्टपणे प्राकृत (महाराष्ट्री) रूपो पण ठीक ठीक वपरातां. ए दृष्टिए अपभ्रंश एक मिश्र भाषा गणाय. प्राकृत रूपोने वापरवानां कारणोमां छंद, प्रास, अनुप्रास वगेरे गणावी शकाय. अपभ्रंश व्याकरणमां प्राकृत रूपोने जुदां तारवीने दर्शाववां जोईए.

हरिभद्रना अपभ्रंशमां केटलांक रूपो मान्य अपभ्रंश रूपोथी आगळ वधेलां छे—एटले के तुलनाए तेमने अर्वाचीन गणी शकाय तेम छे. ते तत्कालीन लोकभाषाना प्रभावना द्योतक छे. तेमने पण अलग पाडवां जोईए. जेम के पहेलांना अपभ्रंशमां मळतां अंते ओकारवाळां रूपो अहीं उकारवाळां छे, अंते अनुनासिकवाळां रूपो क्वचित अनुनासिक विनानां देखाय छे, अंत्य उकारने स्थाने क्यांक अकार मळे छे, संयुक्त व्यंजन कोईक वार एकवडो थयेलो छे, तो एकवे दाखलामां हकार लुप्त थयेलो छे.

नामिक रूपाख्यान

'अपभ्रंश'मां बधां नामिक अंगो (आमां संज्ञा, विशेषण अने सर्वनाम होय तेवां अंगोनो समावेश थाय छे) ह्रस्व-स्वरांत होय छे.

आकारांत, ईकारांत के ऊकारांत अंगो प्राकृतमांथी लीधेलां छे.

---

* रड्डाछंदना स्वरूप माटे जुओ, 'स्वयम्भूच्छंद' (वेलणकर सम्पादित) ४, ८–११; 'छंदोनुशासन' (वेलणकर-सम्पादित) ५, १७-२३; 'संदेशरासक' (मुनि जिनविजय सम्पादित) भूमिका पृ० ६६–६८.

कर्ता-कर्म-विभक्ति एकवचन

अकारांत पुं. अने नपुं. अंगोमां अंत्य अकारनुं स्थान उकार ले छे:

'लोगु', 'निवु', 'सुंदरु', 'पवित्तु', 'सूरु', 'सामिउ', दाणु', 'वयणु', 'रयणु'.

अकारांत नपुं. अंग जो 'अ'('य') प्रत्ययथी विस्तारित होय तो 'अ'ने स्थाने 'उं' आवे छे :

'सिविणउं', 'पारणउं', 'जायउं', 'परिसुन्नउं', 'हियडुलउं'.

अकारांत स्त्री. अंगो अने इतर-स्वरांत अंगो कशो प्रत्यय लेतां नथी.

'वसुह', 'पिय', 'पह', 'कह', 'पंतिय'; 'निवई', 'सिहंडि', 'पइ', 'निहिं', 'सिरि', 'तरुणि', 'कित्ति', 'रइ', चुंटंती', 'इंदु', 'वरतणु', 'तारा'.

प्राकृत रूपोमां (खास करीने 'वि'नी पूर्वे) अकारांत पुं. नुं रूप ओकारांत होय छे: 'पिओ', 'अंगो'. अकरांत पुं. अने न. अंग प्रत्यय विना क्वचित ज वपरायुं छे: 'निवार' (४७७), 'एस' (४८६), 'सविह' (४५९) (क्रियाविशेषण तरीके).

कर्ता-कर्म-विभक्ति बहुवचन

पुं. अंगो कोई प्रत्यय लेतां नथी.

'विउस', 'नर', 'मणहर'. प्राकृत रूपो आकारांत छे : 'हारा', 'किरणा'.

नपुं. अंगो 'इं' प्रत्यय ले छे, अथवा तो कशो प्रत्यय लेतां नथी:

'कुट्टइं', 'सयइं', 'पयइं', 'सिविणइं', 'पवरइं', 'चलण', 'कुसुम', 'सिविण', 'चरिय', 'हियय', 'भणिय', 'निलीण'. प्राकृत रूपोमां 'आइं' प्रत्यय छे: 'कुसुमाइं', 'सव्वाइं'.

अकारथी विस्तारित अंगोमां ए अकारनी साथे जोडाईने 'आइं' प्रत्यय बने छे :

'दिट्ठाइं', 'कहियाइं', 'हियडुल्लाइं', 'कायव्वाइं'.

स्त्रीलिंग अंगो 'उ' प्रत्यय ले छे.

'वत्तउ', 'वहुयउ', 'कन्नयउ', 'सयसंखउ', 'काउ', 'ईमाउ', 'रक्खाउ', 'जणणिउ', 'तरुणिउ', 'नियंबिणिउ', 'मंजरीउ', 'सरणीउ'.

करण-विभक्ति एकवचन

अकारांत पुं.न. अंगो 'इण' प्रत्यय ले छे. प्राकृत 'एण' पण क्वचित वपराय छे :

'कामिण', 'सुहिण', 'नामिण', 'पसाइण', 'तिण', 'जिण', 'किण', 'सामन्नेण', 'जणेण'.

अधिकरण-विभक्ति एकवचननुं रूप पण करण-विभक्ति अर्थे वपराय छे :

'दंसणि' 'कवलणि'.

अकारांत स्त्री. अंगो 'हिं' ('हि') प्रत्यय, पण क्वचित 'ण' प्रत्यय ले छे.

'धरणिहिं', 'रयणिहिं', 'देविहिं', 'सहिहिं', 'मुद्धहि', 'सहियहि', 'भत्तिण' (४९०), 'दिट्ठिण' (५२३).

'लीलइं' ए रूपमां 'इं' प्रत्यय छे.

प्राकृत रूपोमां 'ए' प्रत्यय छे : 'रिद्धीए', 'वाहाए', 'कलियाए'.

करण-विभक्ति बहुवचन

अकारांत पुं. न. अंगो 'इहिं' (प्राकृत रूपोमां 'एहिं') अने बीजां अंगो 'हिं' प्रत्यय ले छे.

'सिविणिहिं', 'पुरिसिहिं', 'तत्थिहिं', 'नरिहिं', 'दामिहि', 'दिणिहिं' 'तणुहिं', 'थोवेहि, 'अरिहिं', 'गिरहिं', 'कहहिं'.

अधिकरण-विभक्ति

अकारांत पुं. न. एकवचन माटे 'इ' प्रत्यय छे :

'धम्मि', 'खित्ति', 'गिम्हि', 'उदइ', 'दीवि', 'मंडणि', 'पसिद्धि'.

प्राकृत रूपोमां 'म्मि' प्रत्यय छे : 'सयणम्मि', 'विरहम्मि', 'अन्नम्मि'.

अन्य अंगो माटे 'हिं' प्रत्यय छे.

'महिहिं', 'रयणिहिं', 'निसिहिं'.

बहुवचन माटे करण-विभक्ति अने अधिकरण-विभक्तिनुं रूप समान छे : 'जंपमाणिहिं', 'पहसंतिहिं', 'सिहरिहिं'.

प्राकृत रूपोमां स्त्री. अंगो माटे 'सु' प्रत्यय छे : 'कहासु', 'सहासु'.

केटलाक प्रयोगोमां 'हिं' ने बदले 'हं' प्रत्यय अधिकरण तेम ज करणना अर्थमां जोवा मळे छे :

'पल्ललहं सरहिं' (४९६), 'तरुहु छायहं चिट्ठंतु (५६०), 'पविसेइ अंगह' (६४०), 'आणुधावइ काणणहं' (५३७), 'असिधारहं वीसमिर०' (५६१), 'परियडंतु वसुहहं समग्गहं' (६९०), 'सहहं वइसइ' (७४१), 'लोयणहं उक्कोउ' (७६९), 'कंधरहं जलोयरु' (७६९), 'सहहं कंपंतु' (७७८), 'तडिलयहं निम्मिउ'.

संप्रदान-अपादान-संबंध-विभक्ति

एकवचनमां अकारांत अंगो माटे 'ह', इकारांत माटे 'हि' अने उकारांत माटे 'हु' प्रत्यय छे :

'ससहरह', 'पाउसह', 'सयणिज्जह', 'काणणह', 'दइयह', 'उयहिहि', 'देविहि', 'महिहि', 'कित्तिहि', 'पंतिहि', 'सिरोमणिहिं', 'पिउहु', 'रिउहु' 'तणुहु', 'वहुहु'.

क्वचित सानुनासिक रूप मळे छे :

'सारीरियहं', 'संतावहं' (५७६), 'कंतिहिं' (७७८), 'खंतिहिं' (७७८).

एक वार अकारांत स्त्री. अंग माटे 'हि' प्रत्यय वपरायो छे : '०अंवरहि' (४४५). प्राकृत रूपोमां अकारांत पु. अंगो माटे 'स्सु' प्रत्यय छे :

'कुमरस्सु', 'जयस्सु', 'तस्सु' ('तसु').

'पासाउ', 'करवालाउ' 'संनिहीउ' एवां अपादानविभक्तिनां रूप पण प्राकृतनो वारसो छे.

वहुवचनमां एकवचनना ज उपर्युक्त प्रत्ययो पण सानुनासिक वपराय छे—एटले के अनुक्रमे 'हं', 'हिं' अने 'हुं' :

'पंडवहं', 'वीरहं', 'भारियहं', 'देवयहं', 'धन्नहं', 'लयहं', 'साहिहिं', 'करिहिं', 'सिरिहिं', 'तरुहुं', 'गुरुहुं', 'वहुहुं'.

कोई वार वहुवचनमां निरनुनासिक रूप मळे छे :

'सुकयह', 'तिजयह', 'वंदिहि'.

प्राकृत रूपोमां 'आण' के 'ण' प्रत्यय छे :

'सिविणाण', 'सुहाण', 'हरिमुसलीण', 'मंजरीण'.

सर्वनामोमां 'एसि' प्रत्यय छे : 'तेसि', 'इयरेसि'.

संबोधन-विभक्ति

एकवचनमां कोई प्रत्यय नथी :

नाह, सामिय, मयण, पहु, देवि, पसयच्छि.

वहुवचनमां अकारांत पुं. माटे 'हु' प्रत्यय अने स्त्री. अंगो माटे 'उ' प्रत्यय छे :

'सुरगणहु', 'सहिउ'.

पुरुषवाचक सार्वनामिक रूपो

नीचे प्रमाणे केटलांक रूपो मळे छे :

कर्ताविभक्ति एकवचन

'हउं' (१.पुं.); 'तुहुं' (२.पुं.); 'सो', 'सु' (पुं.), 'सा', 'स' (स्त्री.) 'तं' (नपुं.) (३. पु.), 'एह' (पुं.), 'एउ' (पुं., न.), 'इहु' (न.), 'एह' (स्त्री. पुं.), 'उहु' (पुं.) (३. पु. दूरवर्ती).

'पेसिउ म्हि' (७२५)मां 'म्हि' पहेलो पुरुष एकवचननो अर्थ धरावे छे.

कर्ताविभक्ति बहुवचन

'अम्हि' (१. पु.) 'तुब्भे', 'तुब्भि', 'तुम्हि', 'तुमि' (६३९, ६४३) (२. पु.), 'एइ' (३. पु.), 'ताउ' (स्त्री.) (३. पु.).

कर्मविभक्ति एकवचन

'पइं' (२. पु.).

करणविभक्ति एकवचन

'पइ' 'तइ' (२.पु.); 'तिण' (पुं.), 'तीए' (स्त्री.), 'एईए' (स्त्री.) (३.पु.).

संबंधविभक्ति एकवचन

'मह', 'महु', प्राकृत 'मज्झ' (१.पु.), 'तुह', 'तुहु' (२पु.), 'तस्सु', 'तसु' (पु.) (३.पु).

संबंधविभक्ति बहुवचन

'अम्ह', 'अम्हहं' (१पु.), 'तुम्ह', 'तुम्हहं' (२पु.), 'तहं' 'ताहं' (३पु.).

विभक्तिसंबंध दर्शावतां स्वतंत्र तत्त्वो

करणविभक्तिना अर्थमां 'सह', 'सहुं', 'सउं' वपराय छे.

संप्रदानना अर्थमां 'कए' के 'कइ' तथा 'कज्जिण' (ने माटे) :
'पडिच्छ-कए', 'निविग्ध-कए', 'उवसम-कइ', 'जसु कज्जिण'.

अपादानना अर्थे 'पासाउ' (=पासेथी) : 'जणय-पासाउ'.

अधिकरणविभक्तिना अर्थमां 'मज्झि' (मां) अने 'उवरि' (उपर) :
'वसुंधरह मज्झि', 'महुवरि', 'मज्झुवरि'.

संबंधविभक्तिना अर्थमां 'संतिउ' (पुं.न.), 'संतिय' (स्त्री.)

'पासे' एवा अर्थमां 'सविहि' अने 'सामे'ना अर्थमां 'समुहु' मळे छे.

आख्यातिक रूपाख्यान

वर्तमानकाळ

१पु. एकव. 'उं' प्रत्ययवाळा रूप उपरांत नवुं 'हुं' प्रत्ययवाळुं रूप पण वपरायुं छे :

'करउं', 'चिट्ठउं', 'पेक्खउं', 'मन्नउं'.

'ज़ायहुं', 'उज्जमहुं', 'ढलहुं', 'दंसहुं', 'मन्नहुं', 'वसहुं', 'वलिकिज्जहुं.'

प्राकृत रूप : 'हवेमि'.

१पु. बहुव. : 'करहुं', 'वलिकिज्जहुं'.

२पु. एकव. : 'हवसि', 'कुणसि', 'पूरसि', 'विसूरसि'.

२.पु. बहुव. : 'दीसह', 'जाणह', 'चल्लह', 'याणहं'.

३.पु. एकव. : 'कहइ', 'सरइ', 'माइ', 'ठाइ', 'देइ', 'पयंपइ', 'पिएइ', 'पेच्छेइ', 'करेइ', 'सद्दावेइ'.

३.पु. बहुव. : 'कहहिं', 'रोयहिं', 'आवहिं', 'विलसहिं'.

एक वार 'पभणइं' (४६२) (सरखावो 'सिद्धहेम' ८–४–४१८ (४)मां 'होसइं')

प्राकृत रूपो : 'जंपंति', 'साहंति', 'जायंति', 'लिंति'.

भविष्यकाळ

१. पु. एकव. : 'करिसु', 'दलिसु', 'वहाविसु', 'पेक्खेसु', 'देसु'.

१. पु. बहुव. : 'जम्वेसहुं'.

२. पु. एकव. : 'चिट्ठिहिसि', 'होसि', 'देसि', 'पाडिज्जिहिहि'.

३. पु. एकव. : 'जाइसिइ', 'जाइसइ', 'होइसइ', 'होसइ', 'मुच्चिसइ', 'पाडेसइ', 'मरिहइ', 'हणिहइ', 'हविहइ' 'होहिइ', 'जाहि' (त्ति).

आज्ञार्थ :

२. पु. एकव.

'साहसु', 'पसियसु', 'कहसु', 'पयच्छसु', 'वट्टसु', 'आगच्छसु', 'रक्खहि', 'तवहि', 'फुरहि', 'लेहि', 'एहि', 'होहि'; 'पसिय'; 'अच्छु', 'पडिवज्जु'; 'जोइ', 'सरि', 'पेक्खि', 'लवि', 'कहि'.

२. पु. बहुव. : 'पेच्छह', 'भायह', 'नियह', 'चलह', 'पसियह', साहह', 'मुणेह', 'निसुणेह'; 'पेक्खहु', 'पयडहु'.

३. पु. एकव. : 'हवउ', 'पडउ', 'निसुणउ', 'गम्मउ', 'किज्जउ'.

विध्यर्थ :

२. पु. एकव. : 'मरिसिज्ज', 'करेज्ज, 'विचरेज्ज', 'जाणिज्जसु'.

साधित अंगो :

प्रेरकनो प्रत्यय 'आव्' छे :
'गमाव्', 'दवाव्', 'सद्दाव्' 'निम्माव्'.

क्वचित 'अव्' : अणुण्णव्.

कर्मणि अङ्ग माटे 'इज्ज्' के 'इय्' प्रत्यय छे.

च्विरूपो : 'वलिकिज्ज्' 'अवयंसिकिज्ज्' 'पयडीहु', 'उद्धीकय'.

कृदंतो :

वर्तमान कृदंतः 'फुरंत', 'पढंत', 'गायंत', 'चिंतित'.
(विस्तारित' 'मुणंतउ', 'सेविज्जंतउ', 'गच्छंतिय'; प्राकृत रूप : 'पयडिज्ज-माण' भूत कृदंत : 'फुरिय', 'पडिय', 'जाणिय', 'रइय';
(विस्तारित) 'चडियउ', 'निवडियउ', 'माइयउ'.

विध्यर्थ कृदंत : 'भणियव्व', 'कायव्वउ', 'जियव्वउ', 'अवगणियव्वउ', 'उवेहियव्वउ', 'सहेवा' (बहुव.).

संबधक भूत कृदंत :

'करिवि', 'धरिवि', 'नमिवि', 'विहसिवि', 'चइवि', 'नमेवि', 'निसुणेवि', 'कारेवि', 'नियवि', 'ठवेविणु', 'करेविणु', 'उट्ठेविणु', 'धरिप्पिणु', घेप्पिणु', 'विहसिउ', 'होउ', 'नेउ', 'गहेउ', 'वंधेउ'.

प्राकृत रूपो : 'गंतु', 'मोत्तु', 'उट्ठिउण', 'आरोविउण', 'विणिच्छिउण', 'हरिउण', 'आणेऊण'.

शब्दसिद्धि

केटलाक आख्यातिक अने नामिक प्रत्ययोथी सधायेलां अंगो नीचे आप्यां छे:

आख्यातसाधित

पगमिर, संदिर, पढिर, उट्ठिर, मुणिर, परिगलिर, वज्जिर, उवदंसिर.
('इर' प्रत्यय वर्तमान कृदंतनो अर्थ धरावे छे तथा ताच्छील्यवाचक छे).
तोसयर, दाहयर, चमक्कयर, विणासयर, उज्जोययर (कर्तृवाचक).
सुहावणउ, दहावणउ (कर्तृवाचक 'णय' प्रत्यय).
अयाणुय (कर्तृवाचक 'उय' प्रत्यय).

नामसाधित

तुंगिम, थिरिम, गंभीरिम (विशेषण परथी भाववाचक नाम).

वंदियण, पुलिंदयण, तरुणीयण, सहियण ('यण' बहुवचनना प्रत्ययनुं काम करे छे).

अंगविस्तारक (लघुता, कोमळता वगेरे पण व्यक्त करता) प्रत्यय :

स्वार्थिक 'य' (स्त्री. 'इय')नो घणो वपराश छे.

'गोरडी' 'वत्तडी'मां 'डिय' प्रत्यय छे.

'नयणुल'मां 'उल' प्रत्यय छे.

'हियडुल्लउं', 'हियडुलउं' एमां 'ड' तथा 'उल्लय' ('उलय') प्रत्यय छे.

'पढमेल्लुयं'मां 'एल्ल' तथा 'उय' प्रत्यय छे.

केटलाक प्रयोगो :

अधिकरणविभक्ति वाळो ('सतिसप्तमी'), करणविभक्ति वाळो के संबंध-विभक्ति वाळो मुक्त वाक्यखंड :

छंद ४६९मां तथा ७४२ थी ७४५मां मुख्य क्रियानो प्रवर्तनकाळ दर्शाववा आवती सहयोगी क्रिया अधिकरण तेम ज करणविभक्ति लेती होवानां उदाहरण छे : 'गायंतिहिं गायणिहिं' वगेरे.

एवो ज अर्थ दर्शाववा संबंधविभक्तिना प्रयोगनुं उदाहरण 'तहं लल्लंतहं' (४७७) छे. आ ज रचना पछीथी गुजराती वगेरेमां रूढ थाय छे. (जेम के 'तेमना देखतां', 'दोडतां दोडतां' वगेरे).

नीचेनी रचनाओमां संबंधविभक्तिनो प्रयोग नोंधपात्र छे :

'पाउसह सरइ' (४४७), 'विसारयहं कहइ' (४६२), 'तिहुयणहं साहंति' (४७८), 'पलयह नीउ', 'तुह दंसहुं'.

गति अर्थना क्रियापदो अधिकरणविभक्ति ले छे :

'उज्जाणि गउ', 'नियघरि गच्छंति'.

संयुक्त क्रियापदना नीचेना बे प्रयोगो नोंधवा जोईए :

'छड्डिवि जंति' (७८१); 'नीहरिउ लग्गउ' (५७९).

'जोइ-न जोइ' ५०३) जेवा आज्ञार्थ रूपमां वपरायेलो अनुरोधवाचक 'न' पछीथी हिन्दीमां रूढ बन्यो छे.

'अह होंतु' (४९१) ए प्रयोगमां 'होंतु' भूतकाळनो अर्थ धरावतो होईने ते अर्वाचीन गुजराती 'हतो' नुं एक पूर्वरूप रजू करे छे.

नोंधेलां विशिष्ट रूपो उपरथी जोई शकाशे के हरिभद्रनो अपभ्रंश हेमचंद्रे वर्णवेल अपभ्रंशने* घणे अंशे मळतो होवा छतां केटलीक बाबतमां ते वधु अर्वाचीन छे : (१) अकारांत नामनुं कर्ता एकवचननुं प्रत्यय विनानुं रूप, (२) अकारांत नपुंसकलिंगनी कर्ताविभक्ति बहुवचनमां प्रत्यय विनाना रूपनी अधिकता, (३) करण-विभक्तिना अर्थमां अकारांत नामोना 'इ' प्रत्यय वाळां रूपोनो प्रयोग, (४) संबंध-विभक्ति माटे एकवचनमां अंगना अंत्य स्वर अनुसार 'ह', 'हि', 'हु' प्रत्यय, (५) प्रत्ययोमां 'ह'-'हं', 'हि'–'हिं' जेवा सानुस्वार अने निरनुस्वार प्रत्ययोनी सेळभेळ, (६) वर्तमान ३. पु. बहुवचनमां 'हिं' ने बदले 'इं', अने सार्वनामिक 'तुम्हि'ने बदले 'तुमि', (७) वर्तमान १. पु. एकवचनमां 'हुं' प्रत्ययवाळां रूप; (८) 'जोइ-न', 'हियडुलडं' जेवां रूपो—आ सौ अपभ्रंश उपर पडेला लोकबोलीना प्रभावनां सूचक छे. अनेक शब्दो, प्रयोगो वगेरे पण समकालीन लोकभाषाथी प्रभावित छे.

'सनतुकुमारचरिय'नुं मूल्यांकन

हरिभद्रे पोताना आधार तरीके लीधेला सनत्कुमारना जीवनकथानकनी वस्तु-योजना रसिक छे. ते साहसो, जोखमो, पराक्रमो अने सुंदरीओ वाळी अद्भुत घटनाओथी सभर एवी एक भ्रमणकथा छे अने अनेक अणधार्या वळांको अने आश्चर्योथी ते कुतूहल प्रदीप्त राखे छे. नरवाहनदत्त के वसुदेव वगेरेनी अद्भुत-रसिक परिभ्रमणकथाओनी जे प्राचीन दीर्घ परिपाटी हती तेणे अनेक उत्तरकालीन कथाओ माटेनो ढांचो, भावना अने वातावरण पूरां पाड्यां छे. तेवी कथाओना जन रूपांतरमां—धर्मकथाओमां जन्मान्तरनो वृत्तांत अने वैराग्यबोधक अंत एटलो अंश वधारे होय छे.

पोताना 'सनतुकुमारचरिय' ना ३४२ छंदोने हरिभद्रे कथावस्तुने अनु-लक्षीने आ प्रमाणे वहेंच्या छे : सनत्कुमारनो जन्म अने तारुण्यप्राप्ति (३४३–५२४), अश्व वडे अपहरण अने शोध (५२५–५६७), सनत्कुमारनुं परिभ्रमण अने पराक्रमो—विद्याधरो साथे युद्ध, कन्याओनी प्राप्ति, विद्याधरस्वामित्व (५६८–६६३, ७०७–७१९), सनत्कुमारना पूर्वभवो (६६४–७०६), चक्रवर्तीपदनी प्राप्ति (७२०–७५३), वैराग्य अने श्रामण्य (७५४–७८५).

विविध वर्णनोमां वसंतवर्णन (४७७–४८३), अश्ववर्णन (५२७–५३०). षड्ऋतुवर्णन (५३९–५५१), युद्धवर्णन (५७९–५९५, ६३०–६३४, ६५०

---

* हेमचन्द्रीय अपभ्रंश माटे जुओ, ह.-चू. भायाणी 'अपभ्रंश व्याकरण', भूमिका.

–६५७), अभिषेकवर्णन (७२३–७३२), चक्रवर्तीना स्नानभोजनादिनुं वर्णन (७४२–७५०) तथा विरहवर्णन (४९९–५०४, ५१०–५१६, ५२१–५२३ वगेरे) एटलांनो उल्लेख करी शकाय.

साकेतनी राजकुंवरी सुनंदा साथेना सनत्कुमारना जे बे मिलनप्रसंगो योज्या छे अने प्रथम मिलन वाळो प्रसंग जे रीते बहेलाव्यो छे तेमां हरिभद्रनी कथारस माटेनी कुशळ अने मौलिक दृष्टि देखाई आवे छे. वर्णनो घणांखरां परंपरागत होवा छतां प्रासादिक अने समुचित छे अने जंबूद्वीप अने भरत-क्षेत्रनां वर्णनमां तथा केटलेक स्थळे विरहवर्णनमां हरिभद्रनो मौलिक स्पर्श जोई शकाय छे. जंबूद्वीपना वर्णनमां पृथ्वीने माटे योजेला रूपकमां उदात्ततत्त्वनो विरल स्पर्श अनुभवाय छे.

हरिभद्रनी शैली शिष्ट अने प्रासादिक छे. अलंकारो के वर्णनोना अतिरेक के अप्रस्तुतताथी ते बच्या छे. रचनानो प्रवाह क्शे स्खलित थतो नथी. रड्डा जेवा अटपटा छंदने ए सहजसिद्ध होय तेम योजे छे. तेमां क्लिष्टतानी फरियाद करी शकाय तेवां स्थनो भाग्ये ज मळशे. छंदने कारणे छूट लेवाई होय तेवां स्थानो पण घणां ओछां छे. वार्तालापो अने अंगत उक्तिओनो पण यथोचित आश्रय लईने हरिभद्र शैलीनुं वैविध्य अने निरूपणनी तादृशता साधी शके छे. कथावस्तु, वर्णनो अने केटलांक शैलीतत्त्वो परत्वे हरिभद्र तेमनां पूर्ववर्ती सनत्कुमारचरित्रोना स्पष्टपणे ऋणी होवा छतां कथावस्तुने रड्डाछंदमां ढाळीने तथा घटनाक्रम अने वर्णनोमां केटलुंक परिवर्तन करीने तेओ पोतानी गणनापात्र रचनाशक्ति अने कवित्वनी आपणने प्रतीति करावे छे.

उपसंहार

छेवटे गुजराती अनुवाद विशे बे शब्द : आ साथे आपेला गुजराती अनुवादनो हेतु मूळ कृतिनी अपभ्रंश भाषाने समजवा माटेनुं केवळ एक साधन पूरुं पाडवानो नथी. मूळ कृति काव्यगुणोथी सभर छे, अने तेनो पण कशोक अणसार अनुवादमां मळवो जोईए. उपरांत अनुवाद ओछामां ओछो पोताना पग पर ऊभो रही शके तेवो तो होवो ज जोईए. जो ते मूळ कृतिना आधार विना, स्वतंत्रपणे वांची शकाय तेवो स्वाभाविक अने सुवाच्य न होय तो तेनुं मूल्य स्वल्प गणाय. अहीं आपेला अनुवाद पाछळ आवा प्रकारनो दृष्टिकोण राखेलो छे, अने तेथी ते समग्रपणे मूळानुसारी होवा छतां यांत्रिकपणे शब्दशः नथी ज.

पद्यमां होवाथी अने छंदनी जरूरियातोने कारणे मूळपाठमां अनावश्यक शब्दो पण मुकायेला होय, अने पर्यायो, पादपूरको, अध्याहारो, पुनरावर्तनो वगेरेनो पण छंद जाळववा माटे आशरो लेवो पडयो होय. आ बधानो शब्दशः अनुवाद करीए तो ए मूळ रचनाने ऊलटो हानिकर्ता नीवडे. मूळनी भावना, स्वरूप अने तात्पर्यने बाधक न थाय तेवी रीते गुजराती अनुवाद करवानुं लक्ष्य राख्युं छे. केटलेक स्थळे अर्थघटननी मुश्केली जणाय छे, पण तेमनी चर्चा 'नेमिनाहचरिय'नी भूमिकामां करवानुं राख्युं छे.

लालभाई दलपतभाई भारतीय संस्कृति विद्यामन्दिरना संचालक प्रा. दलसुखभाई मालवणियानी प्रेरणा, सद्भाव अने अनेकविध सहाय माटे अमे तेमना अत्यंत ऋणी छीए. आशा छे अपभ्रंश भाषा अने साहित्यना अध्ययनमां अमारो प्रस्तुत प्रयास उपयोगी थशे.

अमदावाद
२६ जान्युआरी, १९७४.

हरिवल्लभ भायाणी
मधुसूदन मोदी

सिरि-हरिभद्द-सूरि-विरइय-

नेमिनाहचरियंतग्गउ

स ण तु कु मा र च रि उ

[४४४]

मलय-गिरि-वण-केस-पासाए

उत्तुंग-सुर-गिरि-सिहर- उत्तिमंग-संपत्त-कित्तिहि ।
ससि-दिणयर-लोयणिहि तार-सेणि-सिय-दंत-पंतिहि ॥
हिमगिरि-विंझ-गिरिंद-थिर- थोर-त्थण-जुयलाए ।
कालिंदी-सरि-सलिल-भर- रोमावलि-कलियाए ॥

[४४५]

सुर-तरंगिणि-पुलिण-जहणाए

रयणायर-अंबरहि पुहइ-वहुहु संजणिय-मंडणि ।
निय-मंदर-गिरि-फुरिय- सेस-दीव-माहप्प-खंडणि ॥
नग-नगरागर-गाम-सरि- विसय-सहस्स-समिद्धि ।
जंबु दीवि महंति तहिं भरह-क्खित्ति पसिद्धि ॥

[४४६]

जत्थ रयणिहिं रयणि-रमणुद्दइ
ससिकंत-रयणुल्लसिय- सलिल-पूर-संपुण्ण-लोयण ।
परिवियलिय-चित्त-भर सुणिय-अत्थ-जय-पिय-विरोयण ॥
नं निब्भर-दुह-पसर-परिपूरिय-गल-सरणीउ ।
रोहिं यरवि-विरहम्मि घर-चित्त-भित्ति-तरुणीउ ॥

[४४७]

जत्थ गिरिवर-तुंग-करिराय-
गंड-त्थल-परिगलिर- दान-वारि-परिसित्त-धरणिहिं ।
अवसारिय-खर-किरणि निवइ-निवह-सिय-छत्त-रयणिहिं ॥
हियइच्छिय-वियरण-चउर- निव-कय-तोस-विसेसु ।
न सरइ गिम्हि वि पाउसह कहमवि लोगु असेसु ॥

[४४८]

स-गुणु उवचिय-कोट्टलंकारु
सुनिवेसाणंदयरु असम-वंस-रयणायरुब्भवु ।
सु-पवित्तु सु-ग्गाणियउ सुयण-हियय-गउ गय-उवद्दवु ॥
मुत्ता-रयणु व विप्फुरिय- अमरावइ-सुंदेरु ।
इह अहेसि गयपुरु नयरु अरिहिं अखंडिय-मेरु ॥

[४४९]

तत्थ सूरु वि समिय-संतावु
वहु-दाणु वि मय-रहिउ गय-पिओ वि स-कलत्त-मणहरु ।
दोसायर-खंडणु वि निच्चु कुमुय-वण-तोस-सुंदरु ॥
धम्ममई वि परत्थ-रुइ अ-जल-निही वि समुद्दु ।
वहु-माणो वि अ-माणु पिय- सिव-संगो वि अ-रुद्दु ॥

४४६. ५. सुणिणियत्थ. ७. क. सरणीओ. ९. क. तरुणीओ.
४४८. ६. परिफुरिय.

[४५०]

तुंगु पणमिरु विउसु सुकुलीणु

सु-समत्थउ खंति-परु　　सीलवंतु सोहग्ग-मंदिरु ।
अहिगम्मउ दुद्धरिसु　　धण-समिद्धु दाणंबु-संदिरु ॥
जय-जण-नयण-सुहावणउ　गरुय-तेय-पब्भारु ।
आससेण-अभिहाणु निवु आसि वसुंधर-सारु ॥

[४५१]

तस्सु निरुवम-रूव-लायण्ण-

गुण-रयण-रोहण-वसुह　　कुंद-कलिय-सम-दंत-पंतिय ।
कुवलय-दल-नयण-जुय　　वयण-विजिय-तामरस-कंतिय ॥
कलहंसिय-सारस-तरुणि- परहुय-महुरालाव ।
सारय-रयणीयर-सरिस- पसरिय-कित्ति-कलाव ॥

[४५२]

हरह गोरिव्व सिरि व मुर-रिउहु

तारा इव ससहरह　　　उव्वसि व्व तियसाहिरायह ।
दोवइ इव पंडवहं　　　तह रइ व्व सिरि-दइय-जायह ॥
सीया इव दसरह-सुयह　गुरु-गुण-रयण-समिद्ध ।
आसि हियय-पिय पिय-पवर सहदेवि त्ति पसिद्ध ॥

[४५३]

तेसि धम्मि अविहिय-बाहाए

भुंजंतहं विसय-सुहु　　　असम-राय-अणुरत्त-चित्तहं ।
उवगच्छइ कालु कु-वि　　पुव्व-भविय-सुकयह पवित्तहं ॥
अन्नम्मि उ अवसरि निसिहिं सुह-सयणम्मि पसुत्त ।
सिविणंतरि सहएवि जय-　जंतु-सुहय गुण-जुत्त ॥

---

४५०. ६. क. सुहावणउं.

[४५४]

कुंभि-केसरि-वसह-अहिसेय-

ससि-दिणयर-झय-कलस- दाम-पउमसर-जलहि-सुरघर ।
रयणुच्चय-जलण मुहि पविसमाण पेच्छेइ मणहर ॥
तयणंतरु संभंत-मुह उद्वेविणु सहस त्ति ।
साहइ सिविणइं विणय-कय- कर-संपुड निवहं ति ॥

[४५५]

तयणु पुण्णिम-सरय-रयणियर-

उदयम्मि रयणायरु व जलय-माल-दंसणि सिहंडि व ।
कमलायरु दिणयरि व रायहंस-कुलु कमल-संडि व ॥
सहयारु व्व वसंत-महि पत्तइ दुगुणिय-सोहु ।
कह-वि न माइ न ठाइ निवु सिविणिहिं कय-सिरि-वोहु ॥

[४५६]

तो पयंपइ पुहइ-हरिणंकु

आणंद-गग्गर-गिरहिं पुरउ नियय-सहदेवि-दइयह ।
जह – होहिइ देवि तुह तणय-रयणु सुह-जणणु ति-जयह ॥
तियसासुर-नर-नमिय-पय- पउमु जिणाहिवइ व्व ।
नव-निहि-चउदह-वर-रयण- सामिउ चक्कवइ व्व ॥

[४५७]

अह सुहा-रस-कुंड-वुड्ड व्व

उवलद्ध-चिंतामणि व पत्त-चक्कवइ-रज्ज-रिद्धि व ।
गिह-उग्गय-सुरतरु व अइर-जाय-वर-मंत-सिद्धि व ॥
हरिस-वियासिय-मुह-कमल सिर-विरइय-कर-कोस ।
हवउ एहु इय पुणु वि पुणु देवि वि भणइ स-तोस ॥

४५६. २. गग्गेर. ४५७. १. क. संवुड्ड व्व.

[४५८]

इय परोप्परु दो वि साणंदु

सद्धम्म-धम्मिय-कहहिं रयणि-सेसु सयलु वि गमावहिं ।
अह जायइ अरुणुदइ वंदि-विंद निव-भवणि आवहिं ॥
मंगल-तूर-रवंतरिण उद्धीकय-करताल ।
जंपंति य गहिर-ज्झुणिण एरिसु हरिस-विसाल ॥

[४५९]

उदय-गिरिवर-सविह पत्तो वि

नयणाणमगोयरु वि अकय-तिव्व-स-पयाव-पसरु वि ।
गब्भागय-सुपुरिसु व अणवइण्ण-गुण-रयण-नियरु वि ॥
जगि पडिवक्खिय-पह हरइ पयडइ कमलाणंदु ।
तोसइ सव्वकई जणइ सुयण-हरिस नीसंदु ॥

[४६०]

तयणु देविहि सिविण-अणुरूवु

नणु वंदिण भणिय इय गरुय-हरिसु चिंतिंतु नरवइ ।
स-निउत्तय-नरिहिं वहु- तुट्ठि-दाणु वदिहि दवावइ ॥
अह सयणिज्जह उट्ठिउण निम्मावइ सव्वाइं ।
हरिस-वियासिय-मुहु निवइ गोसिय-कायव्वाइं ॥

[४६१]

तयणु सुंदरु करिवि सिंगारु

आणंद-समुल्लसिय- रोम-राइ-रेहंत-विग्गहु ।
कुरु-वंस-मंडण-रयणु सहल-विहिय-निय-दार-स संगहु ॥
सिविण-वियाणय नर नियय-पुरिसिहिं सद्दावेइ ।
अह लहु सविहागयहं तहं आसणु वियरावेइ ॥

४५९.८. तो सव्वक्क जणइ.

४६०.२ क. अणरूवु, क. मुह. ४६१. ७. क. पुरिसिहि; क. तह.

[४६२]

अह करेविणु विविह-पडिवत्ति

निवु सिविण-विसारयहं कहइ देवि-दिट्ठाइं सिविणइं ।
इयरे वि विणिच्छिउण नियय-सिविण-सत्थत्थु पभणइं ॥
बाहत्तरि कहियाइं इह सिविणइं सामन्नेण ।
तत्थ य तीस महा-सिमिण पवरइं भणिय जणेण ॥

[४६३]

तह वि चउद्दह सिविण सु-पसत्थ

जिणनायग-चक्कवइ- जम्म-हेउ जायंति धन्नहं ।
नर-नायग-भारियहं भावि-सुगइ-सुक्खहं सउण्णहं ॥
तेसि वि मज्झह सत्त चउ सिविणइं हरि-मुसलीण ।
जम्मु कहहिं निव-भारियहं मुह-कमलम्मि निलीण ॥

[४६४]

सेस नरवइ-सचिव-सामंत-

सत्थाह-सेट्ठि-प्पमुह पुरिस-रयण-जणणिउ विउज्झहिं ।
एक्केक्कु सिविणउं णियवि पुव्व-उत्त-सिविणाण मज्झहिं ॥
ता सामिय भुवणब्भहिउ नंदणु को-वि विसिट्ठु ।
होसइ सिविण-समूहु एहु जं तुह देविहिं दिट्ठु ॥

[४६५]

अह नराहिवु सम्मु एयं ति

तं सिविण-विसारयहं सयलु वयणु अब्भुवगमेविणु ।
पडिवत्ति अणेग-विह अह निउत्त-पुरिसिहिं करेविणु ॥
निय-निय-ठाणि अणुण्णवइ सिविण-विउस नीसेस ।
विउसुवइट्ठ पियह कहइ सिविणहं कह स-विसेस ॥

---

४६४. ८–९. क. Some letters are blurred. ४६५. ५. क. पुरिसिहि.

[४६६]

अह नराहिव-वयणु निसुणेवि
संतोसामय-वरिस- सित्त-गत्त-लइय व्व असरिसु ।
उवदंसिर-पुलय-भरु भणइ साणुणउ देवि स-हरिसु ॥
हवउ हवउ मह देव-गुरु- चलण-पसाइण एहु ।
जह जायहुं इह-पर-भवि वि हउं वि सयल-सुह-गेहु ॥

[४६७]

तयणु नंदण-वयण-रयणिंद-
उवदंसण-सुह-तिसिय देवि देइ देवयहं विविहहं ।
उवयाइय-सय-सहस कुणइ पूय जिण-पाय-पउमहं ॥
आराहइ गुरुयण-चलण ओसह-सयइं पिएइ ।
निय-गब्भह निव्विग्घ-कए वहु-रक्खाउ करेइ ॥

[४६८]

तयणु स-हरिसु धरणि-हरिणंक-
संपूरिय-दोहलय गमइ कमिण पडिपुन्न-वासर ।
अह सयल-गुणब्भहिइं दियहिं पत्त-गय-दोस-अवसर ॥
पसवइ देवि समग्ग-गुण- लक्खण-रयण-निहाणु ।
भुवणाणंदणु सुय-रयणु पयडिय-विहि-विण्णाणु ॥

[४६९]

अह पढंतिहिं भट्ट-चट्टेहिं
गायंतिहिं गायणिहिं दिज्जमाणि दाणम्मि वंदिहिं ।
किज्जंतिहिं मंगलिहिं वज्जिरेहिं वहु-तूर-विंदिहिं ॥
सधराधर-धरणियल-जण- परम-सुहाण निहाणु ।
दिण्णु नरिंदिण नंदणह सणतुकुमारभिहाणु ॥

४६८, ४. क. ख. °णब्भहिंइ. ८. क. भवणा°.

[४७०]

तयणु पमुइउ निवइ हिययम्मि

आणंदिय देवि मणि गरुय-हरिस हुय महिहिं सज्जण ।
परितोसिय वंदि-यण तुट्ठ विवुह निरु डरिय दुज्जण ॥
अहव समग्गु वि धरणियलु भाविय-गुरु-उदएण ।
असरिसु हरिसु समुव्वहइ कुमर-नाम-सवणेण ॥

[४७१]

सिहरि-कंदरि हरि-किसोरु व्व

अप्पडिहय-पय-पसरु पत्त-कित्ति अणुकमिण कुमरु वि ।
आणंदिय-सुहि-सयणु हणिय-पिसुण-मणु अट्ठ-वरिसु वि ॥
परिओसइ वीरहं हियय विहसइ सुहड-कहासु ।
निसुणइ पुरिसुत्तिम-चरिय निवसइ विउस-सहासु ॥

[४७२]

अह नरिंदिण गरुय-रिद्धीए

साणंदु सु कुमर-वरु सुप्पसत्थ-वासर-मुहुत्तिण
उवज्झायह सविहि परिमुक्कु तयणु सुपसन्न-चित्तिण ॥
पाविउ थोवेहिं वि दिणिहिं असरिस-गुण-निलएण ।
पारि समग्ग-कलोयहिहि कुमरु कलायरिएण ॥

[४७३]

तयणु पुण्णिम-रयणि-रमणु व्व

निय-जुण्हा-भर-भरिय- भुवण-विवरु निम्मल-कलालउ ।
गंभीरिम-रयणनिहि थिरिम-धरणि तुंगिम-विसालउ ॥
सेविज्जंतउ सज्जणिहिं सलहिज्जंतु बुहेहिं ।
हुयउ जयस्सु समग्गह वि पयडउ नियय-गुणेहिं ॥

---

४७०. १. पमुइयउ. ४७१. ७. सुहह.

[४७४]

तस्सु पुण सह-काल-संजाउ

सह-पंसुक्कीलियउ　　सह-गहीय-गुण-रयण-मंडणु ।
सह-संचिय-कित्ति-भरु　　समग-विहिय-पडिवक्ख-खंडणु ॥
सम-सुह-दुहु सम-रूव-सिरि　　सम-जोव्वणु सम-सीलु ।
सम-सुहि-सज्जण-विहिय-सुहु सम-परिसीलिय-लीलु ॥

[४७५]

मूल-नरवइ-पय-समुद्धरणु

कालिंदिय-देविहि तणिय-सुयण-आणंद-सुंदरु ।
सिसु-भावि वि वुड्ढ-समु पुव्व-पुरिस-आयरिण-मणहरु ॥
वाल-वयंसु अहेसि पर-　　कामिणि-रमण-निरीहु ।
अवितह-रूविण नामिण वि पयडु महिंदस्सीहु ॥

[४७६]

तयणु विलसिर-वहल-लायण्ण

संपुण्ण-जोव्वण-भरिण　　फुरिय गरुय-पडिवक्ख-खंडण ।
संतोसिय-सुहि-सयण　　दढ-पइण्ण दुज्जण-विहंडण ॥
पोढ-नियंविणि-माण-गुरु-　तरुवर-दलण-कुढार ।
विलसहिं महिहिं महा-महिण दु-त्रि ति नरिंद-कुमार ॥

[४७७]

तहं ललंतहं काल-जोगेणं

संपत्तु वसंत-महु　　जहिं स-तोसु सहयार-साहिहिं ।
निरु-विहुरिय-विरहिएहिं　　मंजरीउ अवयंसिकिज्जहिं ॥
मलयानिल-संगमि भमर-　　पसरिय-गुरु-झंकार ।
देसंतर-गमणुम्मणहं　　पहियहं कुणहिं निवार ॥

---

४७५. १. सूर. ४. क. सिसु. ५. आयरण. ७. क. कामिणिहिं निरीहु marginally corrected as कामिणिरमणहिं निरीहु. ४७७. ३. क. सुहयार, ७. क. पसरि.

[४७८]

मयण-नरवइ-रज्ज-अभिसेउ

साहंति व तिहुयणहं महुर-रविहिं तरु-सिहर-संठिय ।
कलयंठिय चुय-तरुहुं मंजरीण कवलणि पहट्ठिय ॥
सिसिरु हयासु सु उहु गयउ कवलिउ महु-दियहेहिं ।
इय कुमुइणि-तरुणिउ हसहिं वियसिय-कुमुय-मुहेहिं ॥

[४७९]

वउल-तरुवर-नियर घुम्मंति

वहु-पीय-सीयासव व अंव तंव-पह पुणु विरायहिं ।
मज्झम्मि अ-माइयउ वहि फुरंतु नं राउ दावहिं ॥
मिउ-पवणाहय-उल्लसिय- किसलय-करहिणएण ।
लासु पयासहिं तरु-लइय भमरारव-गीएण ॥

[४८०]

जणहिं सुवणह हियय-संतोसु

सु-सिणिद्ध पत्तल सरस भुयग-संग-संपत्त-कित्तिय ।
गोसीस-सिरिखंड-तरु- लइय वार-विलय व विचित्तिय ॥
इय एरिसइ वसंत-महि पसरिय-वणराइम्मि ।
हरिसु जणंतइ महियलह आससेण-निवइम्मि ॥

[४८१]

रइय-असरिस-अंग-सिंगार

निय-सार-परियण-सहिय विहिय सयल-सुहि-सयण-सुह ।
दु-वि स-हरिस कुमर-वर चलिय नयर-उज्जाण-संमुह ॥
खण-मित्तेण य मण-पवण- रइहिं तुरय-रयणेहिं ।
पत्त स-नयरुज्जाण-वणि पढिरिहिं वंदि-यणेहिं ॥

---

४७८. ३. क. रविहि. ६. क. ओहु. ७. क. दियदेहिं.
४७९. ३. क. पहु ७. क. हिएण. ४८०. ५. क. ख. वि.

[४८२]

तयणु चंपय-चारु-सहयार-
नालियरि-असोय-सिरिखंड-पमुह-विडविहिं विचित्तहं ।
पेक्खंत वसंत-सिरि वित्थरंत-फल-कुसुम-पत्तहं ॥
एत्थंतरि वियसिय-वयणु पहु-आएस-समीहु ।
सणतुकुमारिण स-हरसिण भणिउ महिंदस्सीहु ॥

[४८३]

मलय-मारुय-पसर-घरिसणिण
नीलुप्पल-पत्तु जिह फुरइ मज्झ जं नयणु दाहिणु ।
तं मन्नउं मण-पियह जणह कसु वि दंसणह साहिणु ॥
ता अणुमन्निउ निय-सुहिण मयणाययण-दुवारि ।
सणतुकुमारु पहुत्तु कय- वहु-मंगल-आयारि ॥

[४८४]

एत्थ-अंतरि विहिय-सिंगार
वहु-सहि-यण-परियरिय फुरिय-कंति-सव्वंग-सुंदर ।
चुंटंती मालइहि कुसुम ललिय-खोहिय-पुरंदर ॥
दंसण-मित्तुत्ताविपहं तरुणहं हरिय-विवेग ।
आससेण-नरवइ-सुइण दिट्ठ नियंविणि एग ॥

[४८५]

अह तुमं चिय जाइ जाया सि
संजुत्त-कुसुम-स्सिरिहिं मज्झि लयहं एयहं पहाणहं ।
संजायउ जीए एहु पाणि-फरिसु फलु तरुणि-रयणहं ॥
इय चिंततह अवहियह अणिमिस-नयण-जुयस्सु ।
इयरीए वि रायभहिय खिविय दिट्ठि कुमरस्सु ॥

४८१. ७. तुरय-रयणेहिं missing. ९. क. पढिरिहि.

४८४. ६. क. नाम added marginally and not clearly legible, ख. missing.

[४८६]

तयणु पभणिउ पुरउ स-सहीण
नणु एस नवल्लु कु-वि अह भणेइ क-वि ईसि विहसिउ ।
धुवु न हवइ वल्लु एहु महिहि तिलउ मइं तुह पयासिउ ॥
इयर पयंपइ — हलि सहिउ मह वयणु वि निसुणेह ।
एस असोगु जु पिय-सहिहिं सच्चविओ त्ति मुणेह ॥

[४८७]

अवर पुणु परिमुणिय-सहि-हियय
भणियव्व-वियक्खणिय भणइ — तुब्भि किंचि वि न-याणहं ।
जं अम्हहं पिय-सहिहिं भत्ति-भरिण पयडिज्जमाणहं ॥
पूया-विहिहि पडिच्छ-कए पुलयंचिय-सव्वंगु ।
सक्खं चिय पयडीहुयउ चिट्ठइ एहु अणंगु ॥

[४८८]

इय खणद्धिण सघण-घणसार-
कत्थूरिय-अगुरु-सिरिखंड-पंक-फल-कुसुम-दामिहि ।
निय-हत्थिहिं पूय-विहि विसम-सरह परिमलहिरामिहि ॥
पिय-सहि किज्जउ भत्ति-भरु जेण मयणु भयवंतु ।
हियइच्छिय-वर-वियरणिण तुरिउ हवइ फलवंतु ॥

[४८९]

सयलु अ-वितहु एहु इय मुणिर
वियसंत-वयणंबुरुह मयण-पूय-सामग्गि घेप्पिणु ।
सा बालिय गंतु तहिं कमल-माल निय-करि धरिप्पिणु ॥
गल-कंदलि आरोविउण विम्हिय-मण-पसरस्सु ।
हरि-चंदणिण विलिंपिउण वच्छ-त्थलु कुमरस्सु ॥

---

४८६ ३. क. विहंसिउ.
४८८. ३. दामिहिं. ४८९. ५. निय करिप्पिणु.

[४९०]

नमिवि भत्तिण चलण-तामरस-

कर-संपुडु सिरि धरिवि भणइ — मयण पणइ-यण-वच्छल ।
जह पयडिउ अप्पु पइं करिवि मज्झुवरि करुण निम्मल ॥
तह पसियसु हियइच्छियह वरह पयाणिण अज्जु ।
जमिह महंतिर्हि संगहिउ हवइ असज्झु वि कज्जु ॥

[४९१]

एत्थ-अंतरि पुव्वि कि न आसि

अह होंतु न सच्चविउ सच्चविउ वि कि न चित्ति चडियउ ।
मण-चडिओ वि वलियरह कसु वि वसिण कि मणह निवडियउ ॥
तियसासुर-नर-नहयरहं हरिस-विहाणि पगब्भु ।
अन्नु न विहिण वि एरिसउ विहिउ चारु संदब्भु ॥

अवि य—

[४९२]

जेण सिरि-वइ रइउ गोविंदु

पंचाउहु रइहि पिउ उव्वसीए सामिउ सुरेसरु ।
सीयह पइ रामएवु पाण-नाहु तारयह ससहरु ॥
सो थी-रयणह एरिसह करणुज्जय-हिययस्सु ।
नीसेसु वि अब्भास-कए मन्ने विहिहि अवस्सु ॥

[४९३]

इय विचिंतिरु हरिस-वियसंत-

रोमंच-अंचिउ कुमरु भणिउ ईसि विहसिवि महिंदिण ।
नणु सामिय विसम-सर विजिय-तिजय गिय-कित्ति-वंदिण ॥
हियइच्छिय-वर-अभिमुहउ किं न हवसि एईए ।
सिंधुर-गमणिहि ससि-मुहिहि परहुय-सम-वयणीए ॥

---

४९०. २. क. धरवि. ८. क. महंतिहि. ४९२. २ क. पिंचाउहु. ९. विहियवस्सु.
४९३. ३. क. महिंदिणि.

[४९४]

अह कुमारह वाढ-संजमिय-

मण-वाया-कायह वि तरुणि-रयण-कय-पाणि-फरिसिण ।
निय-मित्तह वयणिण वि वहल-पुलय-संजणिय-हरिसिण ॥
फुरिय-अहरु वियसिय-वयणु पयडिय-नयण-वियासु ।
दसण-किरण-धवलिय-भुवणु लडहु पयट्टउ हासु ॥

[४९५]

तयणु कुमरि वि नणु किमेयं ति

चिंतंत गुरु-सज्झसिण कंपमाण-कर-अहर-चरणिय ।
जा चिट्ठइ कंचि खणु दुगुण-सोह-विलसंत-वयणिय ॥
ता उद्धीकय-करयलिण वंदिण अवसर-पत्तु ।
पढिउ कुमारह पुरउ — पहु निसुणउ अविचल-चित्तु ॥

[४९६]*

कोल संपइ सरहिं पल्ललहं

संतावु निरसहिं करिहिं जूह नियय-कर-सीयरोहिहिं ।
रोमंथ-मंथर-मुहिहिं आलवालि ठिउ हरिण-जूहिहिं ॥
तावुवसम-कइ पिय-वयण- चंदणु सरसु भुयंग ।
दु-वि सेवहिं तह पहिय तरु- छाय लिंति तवियंग ॥

[४९७]

अह मुणेविणु मत्थयारूढु

दिणइंदु सही-यणिण सहिय कुमरि निय-देह-येत्तिण ।
कहकहमवि निय-वरह समुहु चलिय सुन्नेण चित्तिण ॥
कुमरु वि कर-उत्तिण्ण-चिर- पाविय-रज्ज-सिरि व्व ।
ठिउ निच्चल-मण-तणु-वयणु खणु तत्थ वि सिहरि व्व ॥

---

* As the end portion of the palm leaf is lost, 496-8-9 to 498. 4. is missing in क.

[४९८]

अह महिंदस्सीह-वयणेण

तणु-मेत्तिण काणणह कुमरु कह-वि निय-भवणि पत्तउ ।
नीसेसु वि भुवणयल- वत्थु-सत्थु तिण-समु मुणंतउ ॥
कहमवि विहिय-सरीर-ठिइ वारिय-इयर-पवेसु ।
चिट्ठइ निरु सुमरंतु तसु तरुणिहि ललिउ असेसु ॥

अवि य—

[४९९]

स ज्जि चंचल-कमल-दल-नयणि

सा सिंधुर-सम-गमणि स ज्जि महुर-कलहंस-भासिणि ।
सा पुण्ण-ससहर-वयणि स ज्जि असम-विब्भम-पयासिणि ॥
सुमरिवि सुमरिवि विसमसर- आउरु खणु एगेगु ॥
तसु मणु मुज्झइ विम्हियइ तूसइ विगय-विवेगु ॥

[५००]*

तयणु निसुणिय-कुमर-वुत्तंतु

चत्तेयर-कज्ज-विहि पत्तु तत्थ तम्मित्तु तक्खणि ।
जंपेइ य — पहु पसिय कहसु हेउ स-सरीर-कारणि ॥
अह दीहुण्हुस्सास-वस- सोसिय-अहर-दलिल्लु ।
कुमरु भणइ — नणु पयडु तुह मह वइयरु पुव्विल्लु ॥

[५०१]

इय मयच्छिहि तीए कह-सवण-

उक्कंठिउ मज्झ मणु महइ सविह-विहि सवण-जुयलह ।
मित्तत्तणु लोयणहं दट्ठुकामु सिरि तीए रूवह ॥
अग्गग्गइ धावइ तुरिउ तस्संगम-जणियासु ।
वारिज्जंतु वि न विरमइ इहु हियडुलउं हयासु ॥

---

५००. ४. क. व. ५०१. ९. इहु लहुलउं.

* As the end portion of the palm leaf is lost, lines 500, 1–2, 503. 3–5; 504. 7 are partly or wholly missnig in क.

[५०२]

अह सु मित्तिण भणिउ — नणु नाह
तर्हि चेवुज्जाण-वणि चलह कह-वि विहि वसिण जइ पुणु ।
सा पत्तिय हवइ नियरूव-विजिय-जय-तरुणि वर-तणु ॥
ता पच्चूसि समुट्ठिउण मित्त-मेत्त-परिवारु ।
तरुणी-यण-दंसण-तिसिउ गउ उज्जाणि कुमारु ॥

[५०३]

तयणु – मयणह भवणु एहु तं जि
सा चेव एह रयण-धर सु जि असोउ एहु महु सहोयरु ।
मलयाणिलु एहु सु जि आसि सविहि ससि-मुहिहि सुंदरु ॥
संपइ पुणु तसु बालियह दुसहइ हुयइ विओइ ।
पलयाणिलु वि विसेसवइ बंधव जोइ-न जोइ ॥

[५०४]

इय विसप्पिर-दीह-नीसासु
परिविलसिर-विरह-दुहु कुमरु करुणु विलवंतु मित्तिण ।
निय-अंग-परिप्फुरण-कहिय-कज्ज-सिद्धिण पसंतिण ॥
भणिउ — विम्हरसि नाह किह तुहुं पागय-पुरिसु व्व ।
जसु कज्जिण हउं उज्जमहुं सयल-रयणि-दिवसु व्व ॥

[५०५]

ता पयच्छसु मज्झ आएसु
पायालह महि-यलह नह-यलह व लीलइं गहेविणु ।
निय-नायग-गाढ-गुण-गढिय-हियय अग्गइ करेविणु ॥
सा लहु निय-पहु मण-रयण-तक्करि उवदंसेमि ।
अन्नह मज्झि वसुंधरह निय-नामु वि न वहेमि ॥

५०३. ३ क. यसोउ.
५०५. ८. क. वसुंधरहं.

[५०६]

इय ठवेविणु कुमरु कंदप्प-

भवणाजिरि कह-कह-वि कुमर-दिण्ण-आएसु तस्सुहि ।
अन्नेसणि तरुणियह चलिउ जाव ता नियइ ससि-मुहि ॥
सहि तीए च्चिय गोरियह विहिय-पुरिस-नेवच्छ ।
गच्छंतिय लइयंतरहं सम्मुहु वियासिय-अच्छ ॥

[५०७]

अह महिंदस्सीह-कुमरेण

बोल्लाविय सा – सुयणु कहसु मज्झ को एहु वइयरु ।
जं दीसइ पइं विहिउ पुरिस-वेसु नयणह अगोयरु ॥
तयणु हसेविणु गोरडी भणइ सविहि आगंतु ।
निसुणसु सु-पुरिस अवहियउ होउण मह वुत्तंतु ॥

तहा हि—

[५०८]

दियहि पच्छिमि इह वि उज्जाणि

संपत्तिय मज्झ सहि आसि मयण-पूयणह कज्जिण ।
ता अहरिय-विसमसर- तियस-इंद-गोविंदु रुविण ॥
दिट्ठउ को-वि हु मह सहिहिं मयण-भवण-दुवारि ।
भुवण-सिरोमणि नर-रयणु विहिय-अवहि-सिंगारि ॥

[५०९]

तयणु अवगय-हियय-भावाण

स-सहीण वयणिण मयण- विब्भमेण तसु पूय विरइय ।
तह स-करिहिं चंदणिण अंगुवंग सयलि वि विलेविय ॥
मुद्धहि मज्झ वयंसियहि अह तत्तणु-फरिसेण ।
अइ-कोमलिण सु-दुल्लहिण नडिउ अंगु अइरेण ॥

[५१०]

सुयणु संपइ हुयउ अइ-कालु

ता गम्मउ — इय सहिहिं भणिय मुद्ध सा देह-मेत्तिण ।
कह-कहमवि काणणह नियय-भवणि गय सुन्न-चित्तिण ।
ता संपाविय-अवसरिण विसम-सरिण सा बाल ।
आलिंगिय तह कह वि जह हुय तसु दस विगराल ॥

[५११]

अह तुरंतिहिं सविह-गय-सहिहिं

विरहाणल-पज्जलिर पढम-निसिहिं उदियम्मि ससहरि ।
वायंतइ मलय-गिरि- पवणि कयइ तामरस-सत्थरि ॥
मणिमय-कुट्टिम-तल-उवरि नेउ निवेसिय मुद्ध ।
अह दढयरु विरहिण तविय नं पलयाणलि छुद्ध ॥

[५१२]

किं नु विरइउ एउ रवि-करिहिं

कि व उट्टिउ वाडवह किं व जणिउ कप्पंत-जलणिण ।
कि व निम्मिउ तडि-लयहं किं व विहिउ वज्जग्गि-पडणिण ।
सहयार-दुम-मंजरिहिं संगिण खलियावेगु ।
मलयाणिलु तणु-दाहयरु हुउ महु हरिय-विवेगु ॥

[५१३]

हुयउ मुम्मुर-मउ व तामरस-

दल-संचिउ सत्थरु वि चंद-किरण पुण सर विसेसहिं ।
गोसीस-चंदण-रस वि अंगि लग्ग हुयवह व सोसहिं ॥
इय विलवंतिय पुणु पुणु वि वियलिय-सयल-विवेय ।
उट्ठिर विहसिर चंकमिर भणिय गोसि मइं एय ॥

५१०. ५. क. निय.
५१२. १ क. किन्नु.

[५१४]

किह णु पिय-सहि चइवि धीरत्तु

एम्व वि तुहुं चिट्ठिहिसि किं न कुणसि केत्तिउ वि उज्जमु ।
जइ दंसहुं करि धरिवि विसम-बाणु तुह सो ज्जि निरुवमु ॥
अह किं-चि वि तक्कह-सवण- पच्चागयचेयन्न ।
संपत्तिय उज्जाण-वणि सा इह मइं सउं कन्न ॥

[५१५]

ता निरिक्खिवि मयण-आययणु

अवलोइवि सयलु वणु सु ज्जि मयणु अनियंत बालिय ।
सविसेस-समुल्लसिय- विरह-जलिर-हुयवह-करालिय ॥
गंतु मज्झि कयलिय-हरह निवडिय नीसाहार ।
भणइ य कहमवि मह पुरउ खलिरक्खर-पब्भार ॥

[५१६]

सहि करेविणु वेसु मयणस्सु

आगच्छसु मह पुरउ जेण ललहुं तेण वि विणोइण ।
तह चेव य कयइ मइं मिलिउ तुहुं वि इह विहि-निओइण ॥
इय जइ कहमवि सु वि सुहउ एइ एत्थ पत्थावि ।
ता अप्पउं सु-कयत्थु हउं मन्नहुं अकयत्था वि ॥

[५१७]

एत्थ-अंतरि मयण-आययणि

अ-लहंतउ रइ कुमरु परिभमंतु तत्थ वि पहुत्तउ ।
अह विम्हिय-मण-पसरु सुणिवि ताहं दोण्हं पि वत्तउ ॥
नणु मह नेवत्थिण वि तुहुं इह वि अच्छु पसयच्छि ।
तुह छम्मिण जिण गंतु तहिं पेच्छउं हउं जि मयच्छि ॥

---

५१४. ७. क. सेयन्न ५१६. २. क. सयल.
५१७. १. क. आयणिण.

[५१८]

इय भणेविणु ताल-रव-पुव्वु

पहसंतिहि तिहि दुहि वि चारु चारु इय जंपमाणिहिं ।
वियसंत-वयणंबुरुहु पत्तु सविहि तसु हरिण-नयणिहि ॥
इह उत्तम्मिवि गोरडी ठीय अहोमुह जाव ।
आलिंगिवि सिरि चुंविउण भणिय कुमारिण ताव ॥

[५१९]

सुयणु पच्छिम-दियहि कुसुमोह-

हरियंदण-रसिण तइं महिउ अंगु तह सुद्ध-वुद्धिण ।
महुरक्खर-रविण मह पुरउ पढिय थुइ भाव-सुद्धिण ॥
तिण हउं पीय-सुहा-रसु व पत्त-परस-उदउ व्व ।
हुयउ हरिस-पुलयंकुरिउ कप्पहुम-पोउ व्व ॥

[५२०]

अज्जु तुहुं पुणु किह णु ससि-वयणि

पसिऊण संभासिण वि कुणसि न मह संमाणु माणिणि ।
जं चिट्ठसि वसुमइहिं निसिय-नयण कलहंस-गामिणि ॥
ता दाहिण-भुय-लय सुहय- खंधि निवेसिवि मुद्ध ।
जंपइ – हुं हुं मइं मुणिउ तुह नेहु सुहासिय सुद्ध ॥

[५२१]

तुह विओएण सुहय हउं थक्क

विरहाणल-तविय-तणु जीवियंत-संपत्त-दुह-भर ।
तुह गोयरि अण्णयर रमहिं रमणि सय-सहस सुंदर ॥
अह भीडिवि वच्छ-त्थलिण वंधिवि भुय-पासेहिं ।
भणइ स-सज्झसु कुमरु ससि-मुहि वयणिहिं सरसेहिं ॥

---

५१८. ४. क. °णंवरुहु.

[५२२]

सुयणु वहुहिं वि वाम-नयणाहिं

नियं-सविहिहिं संठियहिं आसि विरसु मह अमय-पाणु वि ।
अइ-उण्हु चंदण-रसु वि तणुहु दाह-करु मलय-पवणु वि ॥
मुम्मुर-अग्गि-विसेसयर रयणीयर-किरणा वि ।
करवालाउ वि तिक्खयर मुत्ताहल-हारा वि ॥

[५२३]

एण्हि पुणु तुहु ति-जय-तिलयाए

तणु-संगम-अमय-रस- पसर-सित्तु पुव्वुत्तु सयलु वि ।
हउं मन्नउं परम-सुह- हेउ सेस-तरुणियण-वियलु वि ।
ता पसयच्छि सिणिद्ध-नियं- दिट्ठिण संभावेसु ।
मा तिल-तुस-तिब्भागिण वि महुवरि कोवु करेसु ॥

[५२४]

तयणु मह सहि सुहय-नेवत्थ

एस त्ति परिचिंतिरिय अकय-संक नियं-अंकि ठाविवि ।
जहण-त्थल-थण-वयण- पाणि-फरिस-सुहु परमु पाविवि ॥
सव्वंगालिंगणु करिवि सायरु लोयणि वामि ।
कुमरिण चुंविय वाल निरु मयणुज्जीवण-धामि ॥

[५२५]

एत्थ-अंतरि जणय-पासाउ

तुरंतउ पवर-नरु नाइदूर-देसम्मि पत्तउ ।
जंपेइ य गुरु-हरिस- रोम-राइ-रेहंत-गत्तउ ॥
सूर-नराहिव-नंदणह सविहि गहिर-सद्देण ।
हउं पेसिउ चिट्ठउं पुरउ कुमरह धरणिंदेण ॥

---

५२३. १. तुह.

[५२६]

चोल-सिंहल-निवइ-नय-चलणु

चेदीस-चिंता-रयणु जिय-कलिंग-वंगंग-नायगु ।
सिरि-लाड-नराहिवइ- विहिय-सेवु नय-इट्ठ-दायगु ॥
भोय-नराहिव-अंगरुहु कुमरह सेव-पवन्नु ।
अत्थि पहुत्तउ धवलहरि सेस-निवइ-सुह-वन्नु ॥*

[५२७]

इय सुणेविणु कुमरु नीहरइ

कह कह वि कयलीहरह जाव ताव सु जि भोय-नंदणु ।
संपत्तउ संनिहिहिं अह नमेवि तसु भुवण-मंडणु ॥
निज्जिय-रवि-रह-तुरय-रउ भुवणक्कमणि सुलोलु ।
निरुवम-लक्खणु पयड-अभिहाणु जलहिंकल्लोलु ॥

[५२८]

जो य अंगुल असिइ उस्सेहि

परिणाहिण नवनवइ आयईए सउ अट्ठ-उत्तरु ।
चउरंगुल पुणु सवण जन्नु-खुरिय उवलद्ध-वित्थरु ॥
वत्तीसूसिय-सिर-पवरु वीसइ-वाहुय-दंडु ।
सोलस-अंगुल-जंघ-जुउ गूढय-पट्ठि-वरंडु ॥

[५२९]

मडह-तलिणय-सवणु चउरंसु

वित्थिण्ण-निडालयलु कुडिल-कढिण-निम्मंस-वयणउ ।
थिर-पत्तल-नयणु निरु फुरुफुरंत-विलसंत-घोणउ ॥
सुघडिय-सम-मणिबंधु तणु- उयरु सु-दीहर-जंघु ।
सुललिय-चमकिय-पुलिय-वर- वग्गिय-गइ-निव्विग्घु ॥

* At the end of st. 526 क. ख. read ग्रंथाग्रं १५००. ५२८. ६. क. वत्ती-भूसियसिरयवरु. ५२९. १. क. समणु.

[५३०]

वइर-मरगय-पुलय-वेरुलिय-

सखि-सूरकंतंक-मणि- इंदनील-पमुहेहिं रयणिहिं ।
परिविलसिर-आहरण- विहिय-सोह-सव्वंगु धरणिहिं ॥
पसरिय-कित्ति तुरय-रयणु चियरिउ कुंवर-वरस्सु ।
अह नणु भुवणु वि अवकमइ एहु नियं-गुणिहिं अवस्सु ॥

[५३१]

इय विचिंतिवि जलहिकल्लोल-

अभिहाणिण पायडइ तुरय-रयणि तहिं आरुहेविणु ।
सविहागय-निव-सुयहं वहुहुं पुरउ स-हरिसु भणेविणु ॥
नणु धाविरहं तुरंगमहं को जिप्पइ कवणेण ।
सह वहु-कुमर-तुरंगमिहिं मुयइ तुरउ वेगेण ॥

[५३२]

ता खणद्धिण जलहिकल्लोलु

परिधाविरु विजिय-मण- पवण-वेगु वहुयर वसुंधर ।
अक्कमिउण गयउ अह सेस कुमर पसरंत-दुह-भर ॥
उहु आगच्छइ जाइ उहु उहु गउ दूर-पएसि ।
उहु सु न दीसइ — इय सुइरु चिलवहिं कुमरह रेसि ॥

[५३३]

अह समुब्भुय-नियय-अंगरुह-

पढमेल्लुय-विरह-दुहु सुणिय-पुव्व-उवइट्ठ-वइयरु ।
चउरंगिण निय-वलिण चलिउ सयल-पडिवक्ख-दुह-यरु ॥
आससेण-वसुहाहिवइ विहलिय-माण-मरट्टु ।
गयउ वसुंधर अइ-वहुय मउलिय-मुह-कंदुट्टु ॥

---

५३१. क. वहुहु पुरओ.

५३२. १. क. कल्लोल. ६. ७. ८. क. ओहु at all the four places.

५३३. १. क समब्भुव.

[५३४]

तयणु मोडिय-छत्त-दंडेण

मुसुमूरिय-तरुवरिण दलिय-सयल-गिरि-नियर-सिहरिण ।
उप्पाडिय-मंदिरिण खणिय-खोणि-तल-रेणु-पसरिण ॥
अंधीकय-जय-लोयणिण पलयाणिल-सरिसेण ।
निवइ स-सेन्नु विसंठुलिउ वलवंतिण पवणेण ॥

[५३५]

एत्थ-अंतरि नमिवि सिरि-सूर-

नरनाह-अंगुब्भविण भणिउ भावि-असमाण-रिद्धिण ।
वद्धाविसु हउं जि धुवु सामिसाल पइं कज्ज-सिद्धिण ॥
पसिय नियत्तसु जमिह रवि- किरण च्चिय जिय-लोइ ।
तम-भरु पसरंतु वि हरहिं जइ न त नहयलु जोइ ॥

[५३६]

इय विचित्तहिं वयण-रयणेहिं

कह-कहमवि विण्णविवि आससेणु नरनाहु वालिवि ।
सिरि-सूर-निवंगरुहु चलिउ कुमर-दिसि-मुह निहालिवि ॥
कमिण असेसि वि सेस-जणि निय-निय-ठाणि पहुत्ति ।
भमइ स-वाहु-विइज्जु महि सूर-नरिंद-सुओ त्ति ॥

[५३७]

विसइ सरवर-कूव-विवरेसु

गिरि-सिहरिहि आरुहइ नयरि पविसेइ पुणु पुणु ।
अणुधावइ काणणहं मणि धरंतु निय-सुहिहि गुण-गणु ॥
कुणइ सरीर-ट्ठिइ वि फल- पत्त-कंद-कुसुमेहिं ।
न रमइ पह-निवइहिं कइहिं गउरविहिं वि परमेहिं ॥

---

५३५. ४. क. वद्धाविज्जनु. ५३६. १. क. रयणाइं. ५३७. ४. क. अवधावइ; क. काण णहमण.

[५३८]

कमिण पुणु अणुदिणु वि परिगमिरु
संपत्तु महाडविहिं कह वि कूर-सावय-रउद्दिहिं ।
अह निसुणिवि गडयडिउ विहिउ विविह-सिंधुरिहिं भद्दिहिं ॥
णणु किं सणतुकुमार-नर- रयण-गहिर-झुणि एउ ।
इय चिंतिरु तसु संमुहउ धाइ मुट्ठि वंचेउ ॥

[५३९]

चमरि-केसरि-वग्घ-सद्दुल-
वण-वारण-सरह-हरि- हरिण-नउल-कलहंस-संकुलि ।
गुरु-तरुयर-गिरि-गहण- विउल-तडिणि-सरवर-समाउलि ॥
हिंडंतह तसु तहिं महिहिं पत्तु वसंतु दुरंतु ।
जहिं विरहिउ पिय-माणुसह गुण सुमरइ झूरंतु ॥

[५४०]

कसु व वर-तरु-कुसुम-मयरंद-
आमोय-वहलिय-सयल- वसुह-वलय-गिरि-विवर-अंवरु ।
सहयार-तरु-मंजरिहिं रेणु-पसर-पिंजरण-मणहरु ॥
किंपाग-दुम-कुसुम-रय- भरिय-दियंतरु एउ ।
वियलइ हियडुल्लउं जणहं मलयाणिलु महु-केउ ॥

[५४१]

तवहिं पहि-यणु भमर-झंकार
परहुय-रव निड्डुहहिं जणहिं खेउ केसुय असोय वि ।
वियइल्ल मालइ वउल कन्नियार दुह देंति गरुय वि ॥
नं चिट्ठइ रुट्ठिण विहिण पहियहं मंडिउ पासु ।
इय कसु सुहि ण अइक्कमइ एहु वसंतु हयासु ॥

५३९. ५. क. सरवरि. ६. क. हिंडंतहं.

[५४२]

गरुय-गिरिवर-गहण-पजलंत-
दावाणल-संगमिण जणिय-भुवण-संतावु निट्ठुरु ।
परिसोसिय-महि-वलय- वावि-कूव-सरि-सरु सुदुद्धरु ॥
वायंतउ झंझा-पवणु कय-तरु-पत्तस्साडु ।
कसु कसु न हवइ डाहयरु गिम्ह-यालि जिम्व भाडु ॥

[५४३]

विगय-पत्तहिं दलिय-कमलाहिं
परिवियलिय-पाणियहिं दूर-तसिय-सिरि-नलिणि-तरुणिहि ।
रवि-कुनिविण खर-करिहिं निहय-कंति-सयवत्त-वयणिहिं ॥
तह खर-पवणुद्धय-रइण उद्धुधुलिय-दिसेण ।
कु न संताविउ महि-वलइ गिम्हिण काउरिसेण ॥

[५४४]

सजल-जलहर-धार-सर-सेणि
घण-गज्जि-हुंकार-रवु विज्जु-पुंज-कन्निय-भयंकरु ।
महु-लुद्ध-धाविर-भमर- कुल-कयंव-केसर-विसप्पिरु ॥
निय-पिय-सहिय-सिहंडि-कुल- परितइडविय-कलावु ।
पाउस-पामरु विरहियह कसु न कुणइ संतावु ॥

[५४५]

नियवि सुरवइ-धणुहु गयण-यलि
कलहंस माणसि गमिर सरिय दो वि कूलइं निवाडिर ।
सिंजंत चायग महुरु जल-पवाह महियलु विहाडिर ॥
केयइ-सिहरि-सिलिंध-दुम- कुडय-विडवि-कुसुमाइं ।
कसु पाउसि नहि विरहियह फुट्टइं हियडुल्लाइं ॥

---

५४२. २. क. दावानल. ७. पत्तास्साडु.
५४३. १. क. °कमलाइं ७. उद्धुंधलिय.
५४५. २. क. माणस. ५. पवाहु.

[५४६]

विरल-जलहर-वरिसु पसरंत-
रयणीयर-किरण-भरु पिक्क-सालि-परिमल-मणोहरु ।
उज्जीविय-सरिय-सर- पउम-कमल-कल्हार-सुंदरु ॥
कुसुमिय-सत्तच्छय-विहिय- वंधुजीव-सिरि-सारु ।
दुह वि पयासिय-उदय-पिय- रायहंस-पवियारु ॥

[५४७]

हरिय-कवलण-मुइय-गोवग्ग-
सिंगग्ग-दारिय-धरणि जणिय-तरणि-किरणोलि-वित्थरु ।
परिसोसिय-सयल-महि- वलय-पंकु कय-पहिय-संचरु ॥
निय-निय-सामि-विओइयहं कय-असुहहं सत्ताहं ।
किह अइगच्छइ सरय-रिउ महियलि जीवंताहं ॥

[५४८]

मलिय-मालइ-वउल-वियइल्ल-
मंदार-तरुवर-विहवु विहिय-वयरि-तरु-कुसुम-फल-सिरि ।
पवियंभिर-तुहिण-कण- पसर-गरिम-परितुलिय-हिमगिरि ॥
तणुईकय-वासर-समउ दुगुणिय-रयणि-विभागु ।
पयडिय-पहिय-दरिद्दि-यण- विग्गह-विसम-विवागु ॥

[५४९]

परम-कुंकुम-निविड-धवलहर-
वहु-सगडिय-वर-तरुणि- सुरहि-तेल्ल-सुहि-विहिय-आयरु ।
पिय-पिययम-संग-सुहु गहिय-निविड-कंवलय-अंवरु ॥
धण-रहियहं पहु-उज्झियहं मणुयहं दुह पयडंतु ।
कालिहिं खद्धउ जाइसइ कइयहं इहु हेमंतु ॥

---

५४६. ४. उज्जाविय. ६. च्छत्तच्छय.

[५५०]

दुहय-ससहरु दइय-दिणइंदु

फल-भार-भज्जिर-वइरि हरिय-वल्ल-विंतागि-फल-भरु ।
कप्पासिय-तूयरिहिं कुसुम-पसर-संहार-दुह-यरु ॥
लोध्र-पियंगु-पसूण-भर- रय-रंजविय-दसासु ।
कुंद-कलिय-मालइ-कुसुम- हरिसु वियासिय-कासु ॥

[५५१]

सयय-निवडिर-तुहिण-कंपंत-

वज्जंत-दंतावलिहिं विहिय-बाहु-संबंध-हिययहं ।
सुहि-सज्जण-विरहियहं धण-समिद्धि-कंखियहं पहियहं ॥
सिसिरु हयासु दहावणउ किह कुसलावहु होइ ।
ठायहं ठाणंतरि सुहिउ जहिं संच ॥

[५५२]

इय विचिंतिरु फुरिय-संतावु

सिरि-सूर-निवंगरुहु वसुह-वीढि आ-वरिसु हिंडिउ ।
न य स-वयण-परिविहिय- निय-पइण्ण-लोविण विहंडिउ ॥
अह पुव्वज्जिय-सुकय-कय- दाहिण-नयण-प्फंदु ।
कुमरु महिंदस्सीहु लहु पसरिय-गरुयाणंदु ॥

[५५३]

कमिण पुणरवि पत्ति जय-जंतु-

तोस-यरि वसंत-महि- गहिय-विहवि सहयार-तरुवरि ।
विप्फुरिइहिं परहुइहिं मलय-अणिलि उवलद्ध-अवसरि ॥
अलि-उल-झंकाराराविहिं वोहिज्जंति अणंगि ।
दुगुणिय-पह-उच्छाह-गुणु हुयउ सूर-सुउ अंगि ॥

---

५५३. ६. क. उवलद्धि.

[५५४]

तयणु अग्गिम-मग्गि गच्छंतु
आइण्णइ महुर झुणि   रायहंस-सारसहं संतिय ।
पेच्छेइ य कुसुम-फल-   पत्त-रिद्धि वण-लय विचित्तिय ॥
अंभोरुह-रय-पिंजरिय-   मलयाणिल-संगेण ।
पीणिउ नासा-संपुडिण तह अंगोवंगेण ॥

[५५५]

हंत नियय-नियय-विसय-उवलंभ-
वावारिण इह वि मह   तुट्ठ एइ चत्तारि इंदिय ।
रसणा उण थक्क एह   एवमेव तण्हा-छुहद्दिय ॥
इय चिंततउ सलिल-फल- अहिकंखिरु तूरतु ।
तीर-पइट्ठिय-विविह-वणि   माणस-सरि संपत्तु ॥

[५५६]

तयणु स-हरिसु वण-गइंदु व्व
आलोडिवि सयलु सरु   रुइ-पमाणु पाणिउ पिएविणु ।
जा भुंजइ कुसुम-फल   तीर-सिहरि-सिहरहं गहेविणु ॥
अहरिय-नहयर-सुर-असुर-   किन्निर-गेय-निनाउ ।
ता जिय-सारस-हंस-सिहि   निसुणइ महुरालाउ ॥

[५५७]

अह – कहेरिसु गीय-उग्गारु
निम्मणुय-महाडयहिं   इय मणम्मि चिंतंतु सायरु ।
जा गच्छइ कय-हरिसु   अग्गिमम्मि मग्गम्मि तुरियरु ॥
ता तियसासुर-खयर-नर-   तरुणहं मणहरणीण ।
नयण-निमेसिण सुर-वहुहुं वेहम्महं तरुणीण ॥

---

५५४. ५. क विचित्तय.

५५५. २. क. तुट्ट. ४. क. इहु.

५५७. ५. क. तरुयरु.

[५५८]

मज्झि संठिउ गरुय-संतोसु
विज्जाहर-वंदियण- पढिय-कित्ति सव्वंग-सुंदरु ।
गोसीस-चंदण-रसिण जणिय-दुगुण-तणु-कंति-वित्थरु ॥
कुंडल-लिहिय-कवोल-यलु वर-मउडालंकारु ।
हार-विराइय-वच्छ-यलु कय-निरुवम-सिंगारु ॥

[५५९]

मयण-भवणह दार-देसम्मि
कयली-हर-अंतरिउ कणय-रयण-आसणुवविट्ठउ ।
कय-गीउग्गार-वर- पेच्छणीय-दंसणि पहिट्ठउ ॥
अइर-पयासिय-पुव्व-भव- संचिय-सुह-पब्भारु ।
पणय-लोय-आणंद-यरु पेच्छइ सणतुकुमारु ॥

[५६०]

तसु कहेरिस रिद्धि अइरेण
जाय त्ति चिंतिरु सणिउ सणिउ गहिवि पच्छिम वसुंधर ।
चिट्ठंतु छायहं तरुहु सुणइ पढिर मग्गण फुडक्खर ॥
पिसुण-मरट्ट-घरट्टु निरु नमिर-गुरुय-सिरि-हेउ ।
कउरव-वंसुज्जोय-गरु आससेण-कुल-केउ ॥

[५६१]

समर-निज्जिय-सयल-खयरिंदु
विज्जाहर-चक्कवइ नियय-तेय-अहरिय-दिवायरु ।
असिधारहं वीसमिर- सत्तु-सेणि गुण-रयण-सायरु ॥
नहयर-कामिणि-थण-सिहर- संगम-जणियाणंदु ।
जयउ जयउ भुवणब्भहिउ सणतुकुमारु नरिंदु ॥

---

५५८. ६. क. लिहिउ, ख. हिय.

५६०. ४. क. छायह.

५६१. ४. वासमिरु. ५. क. रयणि

[५६२]

अह विणिंच्छिवि — नूण सो चेव

इहु अम्ह कुल-कप्प-तरु आससेण-नरनाह-नंदणु ।
आगंतु वि तसु पयइं नमइं सूर-निव-भवण-मंडणु ॥
अह लहु उट्ठिवि सम्मुहिण आलिंगिउ सव्वंगु ।
सणतुकुमारिण सूर-सुउ हरिस-विराइय-अंगु ॥

[५६३]

तयणु महरिह-आसणुवविट्ठ

अन्नोन्न-वियसिय-वयण जणिय-पणय-आणंद-कंदल ।
विम्हारिय-पुव्व-दुह नियय-सयल-सुहि-सयण-वच्छल ॥
पढमय-मेलावग-उचिय- कय-पडिवत्ति-विहाण ।
चिट्ठहिं एगत्थ वि ति दु-वि खणु सुगहिय-अभिहाण ॥

[५६४]

एत्थ-अंतरि विहिय-सक्कारु

स-वयंसु नहयर-धुयहिं नियं-पियाहिं कारेवि भोयणु ।
चिर-दंसण-उल्लसिय- वाह-सलिल-संपुण्ण-लोयणु ॥
सणतुकुमारु भणइ—कहसु कह तुहुं अखलिय-सत्तु ।
वाहु-विइज्जु महाडविहिं इह वयंस संपत्तु ॥

[५६५]

कह वि चिट्ठहिं मह विओयम्मि

दढ-नेह जणणी-जणय तह ति मंति-सामंत-सज्जण ।
मह निसुणिवि अवहरणु कह व पिउहु वट्टंति दुज्जण ॥
अह कर-संपुड सिरि धरिवि सूर-नराहिव-पुत्तु ।
साहिवि नीसेसु वि खणिण निय-वइयरु पुव्वुत्तु ॥

५६२. ८. क. सणतुमारिण.

[५६६]

भणइ—पसियह मज्झ तुब्भे वि

नियं-वइयर-पयडणिण तुरय-रयण-अवहार-पमुहिण ।
ता कुमरु अ-सत्तु तसु कहिउ नियय-वुत्तंतु स-मुहिण ॥
स-दइय विज्जा-वल-मुणिय- तत्त-विसेस-समिद्ध ।
अणुजाणइ पत्थुय-विसइ विमलमइ त्ति पसिद्ध ॥

[५६७]

गुरु-परिस्सम-वसिण निद्दाए

घुम्मंति मह लोयणइं वीसमेमि ता इह वि कु वि खणु ।
इय जंपिवि उट्ठिउण मोत्तु तत्थ सयलो वि परियणु ॥
मज्झि गंतु कयली-हरह पुव्व-विहिय-सयणम्मि ।
निसियइ कुमरु स-वइयरह सवणि निविट्ठि मणम्मि ॥

[५६८]

तयणु निम्मल-दसण-किरणोलि-

परिधवलिय-सयल-दिसि चंद-वयण विमलमइ जंपइ ।
जह–निसुणसु कुमर तुहुं नियय-मित्त-वुत्तंतु संपइ ॥
किल तइयहं तुम्हह पुरउ तिण तुरंग-रयणेण ।
अज्ज-उत्तु इहु अवहरिवि परिखेवियउ खणेण ॥

[५६९]

तसिय-मय-कुलि भीय-सदूलि

परितुट्टिर-गिरि-सिहरि भमिर-तुरइ नासंत-कुंजरि ।
विलवंत-पुलिंद-यणि गलिय-विहव-निवडंत-तरुवरि ।
फुट्टिर-वंस-सहस्सि हय- कायर-जण-चेयणि ।
जलिर-दवानलि जम-भवण- सरिसइ गरुय-अरण्णि ॥

---

५६९. ८. दावातलि,

[५७०]

ता किमित्तु त्रि तुरउ जाहि त्ति
चिंतेवि विमुक्कु सिरि- आससेण-कुल-गयण-चंदिण ।
अह दीहर-सास-भर भरिउ तहिं जि सो ठिउ खणद्धिण ॥
नणु धिसि धिसि मइं एहु तुरउ विवरिय-सिक्खु न नाउ ।
इय चिंतंतु कुमार-वरु पयडिय-गरुय-विसाउ ॥

[५७१]

जा स-हत्थिण सिढिल-पत्ताहु
हय-रयणु करेइ लहु ता भमेवि महि-यलि तुरंगमु ।
वहु-सास-स्सम-हयउ पडिवि हुयउ जम-भवण-संगमु ॥
अह वहुयर-दुह-तविय-तणु आससेण-निव-जाउ ।
तण्हा-छुहहिं किलंतु कह कहमवि फुरिय-विसाउ ॥

[५७२]

पत्तु पत्तल-साह-सहसस्सु
सत्तच्छय-पायवह तल-पएसि जा ता खणद्धिण ।
अनिरिक्खिय-पुव्व-रवि- ताव-दुक्खु देव्वह निओइण ।
तइयहं मुच्छ-विलंघलिउ निवडिउ निस्साहारु ।
अह तक्खणिण वि पेक्खिउण तारिसु सणतुकुमारु ॥

[५७३]

भुवण-समहिय-रूव-विहवेण
पसरंत-जोव्वण-भरिण विहिय-चारु-सिंगार-अंगिण ।
उचिय-ण्णु-चूडामणिण अमय-महुर-मिउ-वयण-चंगिण ॥
अज्जउत्त-पुण्णोवचय- आयड्ढिइण नरेण ।
केण वि माणस-सरवरह जलु आणित्रि स-करेण ॥

[५७४]

कुमरु सायरु सित्तु सव्वंगु

ता पाविय-चेयणिण पीय-जलिण जंपिउ कुमारिण।
जह—भद्द कुओ सि तुहुं को व कह व कय-परुवयारिण ॥
तइं एहु ससहर-कर-धवलु अमय-महुरु आणीउ।
जीवाविउ हउं सप्पुरिस पाएविणु पाणीउ ॥

[५७५]

अह पयंपइ इयरु —निसुणेसु

मह वइयरु नर-रयण रम्मि पहिय-अवहरिय-आहिवि।
कमलक्ख-नामिण पयडु जक्खु वसहुं हउं एत्थ पायवि ॥
ता पेक्खिवि भुवणुत्तिमह तुह एह विसम अवत्थ।
आणिवि मइं माणस-सलिलु तुम्भि विहिय वीसत्थ ॥

[५७६]

तयणु पुणरवि भणिउ कुमरेण—

पलयाणल-डाह-समु मह सरीरि संतावु पसरिउ।
तह जह इहु उवसमइ ताम जाम सव्वंगु वियरिउ ॥
सलिलंजलि सारीरियहं संतावहं एयस्सु।
माणस-सरवर-सलिलु लहु अवगाहेवि अवस्सु ॥

[५७७]

तयणु जक्खिण अकय-विक्खेवु

परिकीलिर-खयर-वहु- चक्कवाय-कलहंस-कुंजरि।
कर-संपुडि कुमर-वरु करिवि नीउ माणस-सरोवरि ॥
अह संपीणिय-नयण-मणु सणतुकुमारु सरम्मि।
पविसइ तियसासुर-तिरिय- तणु-संताव-हरम्मि ॥

५७५. ३. क. The letter between आ and वि is unclear due to correction. ख. आहि° missing.

[५७८]

समय-मज्जिर-खयर-तरुणि-यण-
थण-अंगरागारुणिउ कमल-रेणु-परिविहिय-सोहलु ।
वण-कुंजर-गंड-यल- दाण-वारि-परिमलिण मंसलु ॥
तीर-ट्ठिय-पत्तल-वहल- साह-सिहरि-सच्छाउ ।
अवगाहइ माणस-सलिलु अविहिय-अमय-विभाउ ॥

[५७९]

तयणु ववगय-अंग-संतावु
जा लग्गउ नीहरिउ सरह गाढ-कय-चरण-संदणु ।
निय-पुण्ण-संचिय-कवउ आससेण-नरनाह-नंदणु ॥
ता मोडिय-तीर-दुमिण तोडिय-गिरि-सिहरेण ।
धंधोलिय-वण-चारणिण उक्खय-रय-पसरेण ॥

[५८०]

निद्दय-विहडण दलिय-मय-कुलिण
वेलविय-पुलिंदइण जणिय-डरिण अइ-उग्ग-पवणिण ।
संछाइय दिसि भरिय कुमर-नयण पुण रेणु-पसरिण ॥
तह वि कुमारु सु तियस-गिरि- चूला-अविचल-चित्तु ।
परिचिट्ठइ अक्खुहिय-मणु किं एहु इय चिंततु ॥

[५८१]

तयणु पसरिय-घोर-फुक्कार
रोसारुण-नयण-जुय दीह-काय अलि-गवल-सामल ।
जम-दूयहं संनिहय जमल-जीह विस-वेग-पिच्छल ॥
कुविय असेसस्स वि जयह कवलण-विहिहिं अ-चुक्क ।
केण वि वहलिय-गयण-यल विसहर-निवह विमुक्क ॥

[५९०]

इय भणेविणु गुरु-निहाएण

संभंत-सुर-कामिणिहिं निहय-वच्छ-तुट्टंत-हारहं ।
मुत्तावलि-संवलिय- गलिर-नयण-दल-नीर-धारहं ॥
नीसासिहिं सह परिमुयइ मुग्गरु भीरु कराल्लु ।
उवरि कुमार-सिरोमणिहिं निरु अप्पह खय-काल्लु ॥

[५९१]

तयणु मुग्गर-घाय-विहुरंगु

धरणी-यलि निवडियउ कुमरु खयर-सुर-तरुणि-दुह-यरु ।
ता रक्खस-तणउं बलु किंचि फुरिय-संतोस-सुंदरु ।
धावइ वग्गइ उप्पयइ घोसइ जय-जय-सद्दु ।
अह आगय-चेयन्न-भरु कुमरु विभाविय-भद्दु ॥

[५९२]

गुरु-मडप्फरु फुरिय-भुय-मूलु

उम्मूलिवि वड-विडवि गरुय-कोव-कंपंत-खंधरु ।
भू-भंगिण भीम-मुहु चलण-भरिण चालिय-वसुंधरु ॥
अरिरि पिसाय-अहम्म तुह वड-विडविण दलियंगु ।
कुणउ हरिसु वायस-कुलहं गलिय-जीय-सव्वंगु ॥

[५९३]

इय पयंपिरु समर-संरंभ-

अवलोयण-वाउलिय- खयर-तरुणि-दंसण-कयायरु ।
मूलग्गइं वड-तरुहु दलिवि करिण गुण-रयण-सायरु ॥
आससेण-निव-अंगरुहु कर-कय-वड-दंडेण ।
एग-पहारिण रिउ हणइ तह जह उद्दंडेण ॥

---

५९२. ९. जीउ.

[५९४]

गहिउ तक्खणि खुहिय-खोणिंद-
खयराहिव-दुस्सहिण   जीवियंत-पीडा-विसेसिण ।
अह वेविर-देहु भय-   भीउ चत्तु लहु पुरिस-यारिण ॥
मेल्लिवि गुरु-पुक्कार-रवु   वेयण-विहुरिय-पाणु ।
वज्जिय-लज्जु विमुक्क-मउ रक्खस-अहमु पलाणु ॥

[५९५]

अह कुमारह उवरि सुर-असुर-
खयराहिव-कामिणिहिं   हरिस-पुलय-विलसंत-अंगिहिं ।
वर-परिमलु मुक्क सिय-   कुसुम-वुट्ठि गयण-यल-संगिहिं ॥
जय-जय-रवु उग्घोसियउ   दुंदुहि पहय स-तोसु ।
सणतुकुमारु विनिद्दलिय- जक्ख-पयासिय-रोसु ॥

[५९६]

सरय-ससहर-सरिस-जस-पसर-
परिधवलिय-भुवण-यलु   मणि धरंतु पुव्वुत्त कामिणि ।
जा गच्छइ कित्तिउ वि   मग्गु ताव सुरवहु-स-धम्मिणि ।
पाविय तियसासुर-तरुणि- मज्झि महिम-अइरेग ।
नियइ स-संमुह आगमिर पवर नियंबिणि एग ॥

[५९७]

तयणु विम्हिय-मणिणि कुमरेण
गच्छंतिण तस्समुहु   दिट्ठ सत्त तस्सरिस बालिय ।
नंदण-वण-मज्झ-गय   पवर-रूव-गुण-विणय-कुसलिय ॥
पुव्व-दिट्ठ-तरुणिहि पुरउ तयणु भणिउ–नणु मुद्धि ।
काउ इमाउ णियंबिणिउ इय मह साहसु सुद्धि ॥

५९४. ७. क. वेहुरिय.

५९५. ७. क. पह संतोसु. ५९६. ४. क. कित्तिओ. ५९७. ५. गुरुविणय; ९. क. साहस.

[५८२]

वद्धु तेहिं वि नाग-पासेहिं

सव्वंगु कुमार-वरु तयणु जलहि-अक्खुहिय-हियइण ।
उद्धुणिय स-भुय-लइण अहिअ-संधि तोडिय कुमारिण ॥
अह गल-कंदल-लुलिय नर- रुंड-माल-वम्वालु ।
वयण-निवेसिय-पुरिस-सवु करयल-कलिय-कवालु ॥

[५८३]

घोर-विसहर-वद्ध-जड-मउडु

दढ-दड्ढ-घरिसण-फुरिय- रव-रउद्दु तडि सरिस-लोयणु ।
अणुगच्छिर-कडकडिर- दसण-सेणि-वेयाल-भीसणु ॥
अरि अरि सरि सरि इट्ठु कु वि इय साडोवु भणंतु ।
दिट्ठु कयंत-कराल-तणु रक्खसु इगु आवंतु ॥

[५८४]

ता वि तुट्टिर-तुंग-सिंगग्गु

उब्भंत-सत्ताउलिउ विहिय-गहिर-वुक्कार-वानरु ।
दढ-सिलयल-दलिय-पडिवक्खु खुहिय-विरसंत-कुंजरु ॥
गुरु-गिरि-वरु करयलि धरिवि खिविउ कुमर-उवरिम्मि ।
सुर-नहयर-कामिणि-नयण- जल-परिसित्त-सिरम्मि ॥

[५८५]

तयणु विसरिस-दंत-पंतीहिं

निम्मंस-सोणिय-तणुहिं चिविड-नहिहिं निरु सारि-कुच्छिहिं
दुमुहिहिं तिमुहिहिं चउमुहिहिं पण-मुहेहिं सिय-गहिर-अच्छिहिं ॥
वेयालिहिं पमुइय-मणिहिं जय-जय-रवु उग्घुट्ठु ।
अह उद्धूणिय-तणु खणिण पास-खिविय-गिरि-वट्टु ॥

---

५८३. ३. क. पडिसरिस. ख. घडिसरिस.

[५८६]

अहह पेच्छह सयल-जय-हरण-
रोसारुण-लोयणिण रक्खसेण जो मुक्कु गिरिवरु ।
सो लीलइं कंदुगु व खिविवि दूरि विप्फुरिय-मच्छरु ॥
धावइ को वि जय०भहिउ सुहडु किं पि जंपंतु ।
इय तियसासुर-नहयरहं वयणइं कुमरु सुणंतु ॥

[५८७]

पीण-मह-भुय-जंत-निप्पिट्ठु
सरसिच्छु-लट्ठि व गलिय- सयल-धाउ-रस-पसर-दाणिण ।
अरि रक्खस पाव तुहुं कुणसु तोसु दिय-गणहं अइरिण ॥
मइं जीवंति स-तेय-भर- विजिय-सेस-तेयस्सि ।
निल्लज्जिण किण घोसियइ जय-जय-रवु इयरेसि ॥

[५८८]

इय रु तुरिउ पसरंत-
दुप्पेच्छ-मच्छर-वसिण अरुण-नयणु धाविवि खणद्धिण ।
आवीडइ रक्खसह देहु निविड-भुय-दंड-जंतिण ॥
तह जह परिवियलिर-नयणु गरुय-मुक्क-पुक्कारु ।
रक्खस-अहमु मही-वलइ पडियउ नीसाहारु ॥

[५८९]

अह कहिंचि वि लद्ध-चेयन्नु
लहु पुणरवि उट्ठिउण फुरिय-कोवु सो रक्खसाहमु ।
जिण निहणिय-महिहरहं सिरइं पलउ पावंति निरुवमु ॥
तसिय-सुरासुर-नहयरिहिं पेक्खिज्जंतु — सु एउ ।
मुग्गरु वच्छ-त्थलि पडउ पाव तुह क्खय-हेउ ॥

५८८, १. क. पसरंतु.

[५९८]

ईसि विहसिर किंचि नमिरंग
चलणंगुलि-लिहिय-महि पाणि-पउम संवरिय-अंबर ।
चलियाहर-पल्लविय फुरिय-नयण-आणंद-जल-भर ॥
खलिरक्खर-गग्गर-गिरिहिं किंचि वियासिय-अत्थ ।
मुद्ध पयंपइ सिर-उवरि परिसज्जिय-नेवत्थ ॥

[५९९]

सुहय संपइ पसिय मह उवरि
एत्तो च्चिय चुय-वणह नाइदूर-देसोवसंठिउ ।
सुर-किन्नर-नर-महिय- मलय-निलय-देउल-गरिट्ठिउ ॥
पिय-संगम-अहिलास इय नामिण पत्त-पसिद्धि ।
चिट्ठइ विज्जाहर-नयरु पसरिय-गरुय-समिद्धि

[६००]

तहिं कियंतु वि कालु आगंतु
वीसमिउण निय-तणुहु अवहरेह गरुयरु परिस्समु ।
ता सयमवि होइसइ तुम्ह एय-वुत्तंत-अवगमु ॥
अह तासिं चिय कामिणिहिं कंचुगि-दंसिय-मग्गु ।
निव-धवलहरि कुमरु गयउ अइ-विम्हिय-सव्वंगु ॥

[६०१]

तयणु तप्पुर-सामि-नरवरिण
सिरि-भाणुवेगाभिहिण उट्ठिऊण अभिमुह-कयायरु ।
सीहासणि निय-करिण ठविउ कुमरु गुण-रयण-सायरु ॥
अह सिरि कय-करयंजलिण गुरु पडिवत्ति करेवि ।
भणिउ—कुणसु संतोसु मह धूय अट्ठ परिणेवि ॥

---

५९८. ६. क. गिरिहि, ख. गिरहिं. ६००. ६. क. कामिणिहि.
६०१. ८. क. कुण.

[६०२]

जमिह अम्हहं नियय दुहियाहं
विसयम्मि चिंताउरहं विहिय-विणय-पणमिर-सुरिंदिण ।
परिसाहिउ आसि सिरि- अच्चिमालि-नामिण मुणिंदिण ॥
जो अवहरिहइ दप्प-भरु जक्खह असियक्खस्सु ।
सो तुह धूयहं अट्ठहं वि हविहइ दइउ अवस्सु ॥

[६०३]

ता कुमारिण गरुय-विहवेण
तत्थेव य तक्खणि वि अट्ठ ताउ तरुयिण-सारिय ।
पसरंत-अणुराय-रस- सोहमाण परिणिय कुमारिय ॥
अह कय-नव-परिणीय-विहि विरइय-कंकण-बंधु ।
पविसइ रइ-मंदिरि कुमरु हुय-नव-वहु-संबंधु ॥

[६०४]

गुरु-परिस्सम-वसिण पुणु तस्सु
अइरेण वि रइ-भवणि धरणि-नाह-लीलइं पसुत्तह ।
समुवागय निद्द वहु तयणु सयण-सुहियण-विउत्तह ॥
गोसि विहंगम-कुल-रविण पयडिय-पडिबोहस्सु ।
तं पुरु सु परियणु ताउ नव पियतम अ-नियंतस्सु ॥

[६०५]

सिविणु किं एहु किं व मइ-मोहु
किं व जायउं सच्चवउं इंदयालु किं व किण-वि दरिसिउ ।
जं पुव्व-सपुर-सयण- दइय-विरह-दुहिओ वि हरिसिउ ॥
आसि किंचि हउं अट्ठहिं वि दइयहिं सह संबंधि ।
परि मह सिरि कुसुमिय-तरुहु डालि व भग्ग अ-संधि ॥

[६०६]

इय कुमारह विगय-नीसेस-
घर-परियण-पिययमह सुद्ध-धरणि-तल-संनिसन्नह ।
अवियक्किय झुणि सवणि पडिय एह गयण-यल-मग्गह ॥
हा सहि हा पिय हा जणणि हा भाविय-भत्तार ।
आससेण-नरवइ-तणय रक्खहि सणतुकुमार ॥

[६०७]

तह — सुलोयणि किमिह ताएण
किं जणणिहिं किं सहिहिं किं व नियय-देवय-विसेसिण ।
कि व तिण महि-गोयरिण आससेण-निव-सुय-कुपुरिसिण ॥
तियसासुर-नर-मय-महणु मई सुमरसु पसयच्छि ।
कामाउर-मण जेण तुह तत्ति करावइ लच्छि ॥

[६०८]

तयणु पाविण केण परिकुविय-
जमदूयालोइएण दसण-गणण-उच्छहिय-चित्तिण ।
परिखित्तउ नियय-करु वयणि सीह-पोयह कु-मंतिण ॥
अवहरमाणिण किं पि एहु मह अणुरत्तु कलत्तु ।
कुमरु पलोयइ नह-यलह संमुहु इय चिंतंतु ॥

[६०९]

किंतु न नियइ किं पि गयण-यलि
ता — एहु वि पुव्वु जिम्व इंदियालु किंचि वि मुणंतउ ।
ढंढुल्लइ जाव वणि स ज्जि तरुणि हियइण वहंतउ ॥
ता सुर-भवणह निवडिउ व महरिह-सिरि-अवतारु ।
इगु धवलहरु महाडइहिं नियइ तिलोयह सारु ॥

---

६०६. ७. and रक्खहि in ८ lost in क. ८. जो ण.
६०८. ३. क. °गगण.°

[६१०]

*अह सु विम्हिउ — जत्थ सउ तत्थ
पंचास वि इय मुणिरु सणिउ सणिउ धवलहरि पविसइ ।
ता निसुणइ मिउ-महुर- रविण लविर तिय इग महासइ ॥
जह – जय पणय-मणि च्छियरि कमल-गब्भ-गोरंगि ।
नमिरामर-नर-नायगहं रिउ-नासण-सव्वंगि ॥

[६११]

हुं खु दुरियहं हरणि ओं ह्रीं हि
संपाइय-इट्ठ-फलि खग्ग-गुलिय-अंजणुवसाहणि ।
फट्टकारिण हणिय-रिउ- सेणि पणय-आणंद-कारिणि ॥
जे तुह भत्तिहिं पय नमहिं जोगेसरि तुहुं तेसि ।
विहिहि अगोयरु सिविणहं वि फलु असरिसु वियरेसि ॥

[६१२]

इय पसीयसि किं न पणइ-यण-
चिंतामणि देवि मह गरुय-विणय-पणमंत-अंगह ।
तसु दइयह मुह-कमल- दंसणेण दुल्लंभ-संगह ॥
नियय-अवत्थहं सम-गुणहं निच्चु वि विणय-पराहं ।
किं जुज्जइ अंतर-करणु निय-जणणी-जणयाहं ॥

[६१३]

अह विसेसिण कुमरु सुमरंतु
हियय़ंतर-उल्लसिय पुव्व-दिट्ठ हरिणच्छि सु-चरिय ।
हुं हुं एस वि क वि तरुणि फुरिय-गरुय-अणुराय-विहुरिय ॥
मग्गइ गोरिहि पय-पुरउ पत्त-दसम-दस-काल ।
अइ-दुल्लंभउ को वि पिउ एण्हि मइं व सा वाल ॥

---

* The text of stanzas 610. 611, 612. 613, 614, 615, and 616 in क is mostly blurred and illegible.

[६१४]

इय विचिंतिरु जाव अग्गम्मि
चउ पंच वि पय खिवइ कुमरु ताव सुह-सील-सुद्धह ।
जय-पायड-गुण-गणह पुरउ सु-गुरु-भत्तीए सुद्धह ॥
गोरिहिं देविहिं भणिउ इहु पयडेविणु अप्पाणु ।
एहु ससि-मुहि पिउ आइयउ सो तुह गुणहं निहाणु ॥

[६१५]

सावमाण व तयणु तणुयंगि
जंपेइ गोरिहि पुरउ अज्जु वि देवि केत्तिउ पयारसि ।
कर-संठिउ साहिउण मज्झ दइउ जं नेय पयडसि ॥
जइ पुणु कुरु-कुल-गयण-ससि पेक्खउं सणतुकुमारु ।
ता जाणहि भगवइ करउं कु-वि कु-वि तसु उवयारु ॥

[६१६]

इय सुणंतु वि हरिस-वियसंत-
सव्वंग-पुलयंकुरिय- वयण-कमलु कुरु-वंस-मंडणु ।
एहु ससि-मुहि निय-दइउ पेक्खि पेक्खि पडिवक्ख-खंडणु ॥
कुणसु सु मणिण जि कप्पियउ चिट्ठइ तसु उवयारु ।
जं एहु हउं जि सु आइयउ पयडिय-मयण-वियारु ॥

[६१७]

अहव साहसु पसिय तुहुं कवण
कुरु-वंसह जस-कलसु को व सुयणु पइं दइउ मग्गिउ ।
ता कन्नय भणइ अणुसरिवि लज्ज अज्जवु निसग्गिउ ॥
जह साकेय-पुराहिवह समरसीह-निवइस्सु ।
अवितह-रूवह चंद-जस- अभिहाणह दइयस्सु ॥

६१४. १. क. तुहं.

[६१८]

धुय सुनंदा नाम हउं अन्न-

दियहम्मि उ मह जणय- पयहं पुरउ संपत्त-मेत्तिण ।
एगयरिण दूयगिण नमिर-सिरिण त्रिणत्तु जत्तिण ॥
जह – गयउर-नयर-प्पहुहु आससेण-निवइस्सु ।
निज्जिय-भुवण-नियंविणिहि सहदेविहि दइयस्सु ॥

[६१९]

अत्थि नंदणु भवण-अब्भहिय-

चक्काहिव-सिरि-तरुणि- रमणु अतणु-गुण-रयण-सायरु ।
सोहग्गिय-सिरि-तिलउ रिउ-मरट्ट-घट्टण-कयायरु ॥
पुण्णिम-ससि व समग्गहं वि विमल-कलाहं निहाणु ।
रूविण जसिण जयब्भहिउ सणतुकुमारभिहाणु ॥

[६२०]

इय सुणंदह जइ न संबंधु

नर-रयणिण तेण सह हवइ विहिण ता नूण हारिउ ।
मह जणएण तयणु नणु जुत्तु एहु इय संपधारिउ ॥
आससेण-नरवइ-पुरउ स-वलिण गच्छंतेण ।
निय हउं सिरि-गयउर-नयरि हरिसु पयासंतेण ॥

[६२१]

अन्न-अवसरि सहिहिं परियरिय

कंदप्प-पूयण-विहिण गइय आसि हउं नयर-काणणि ।
ता मयणह पयडह जि विहिय पूय मइं हसिरि सहियणि ॥
तयणंतरु निय-घरि गइय केण-वि विहिहि वसेण ।
अइव-दुरंतिण उप्परिण हउं गहीय दोसेण ॥

---

६१९. ३. अनणु॰.

६२१. १. वसरि. २. क. पूइण. ६२२. ३. क. कहंकचि.

[६२२]

तयणु अविहिय-तणु-परित्ताण
वहु-मंत-तंत-ण्णुइहिं कह कहिंचि अइगमिय जामिणि ।
गोसम्मि उ तहिं जि गय मयण-भवणि हिययाहिरामिणि ॥
न उण सु तारिसु सच्चविउ पयडीहुयउ अणंगु ।
तो सविसेसिय-दुहिहिं हउं विहुरीहुय सव्वंगु ॥

[६२३]

किंतु पयडीहूय-कंदप्प-
नेवत्थिण सहिहिं तहिं तह कहिंचि तइयहं विणोइय ।
जह अइरिण पुव्व-दिण- संभवाहं दोसहं वि मोइय ॥
तयणंतरु पुणु अवहरिउ आससेण-निव-पुत्तु ।
दुट्ठ-तुरंगिण ता खणिण भुवणु वि हुयउं दुहत्तु ॥

[६२४]

हउं विसेसिण मुणिय-वुत्तंत
पसरंत-दुह-विहुर-तणु पत्त मुच्छ सहि-यणिण कहमवि ।
निय निय-घरि अह परु जु किंपि तं तु न मुणेमि सयमवि ॥
किं पुण केण-वि नहयरिण विलविर हरिवि विमुक्क ।
इह इय चिट्ठउं मंकडि व नियह पलंवह चुक्क ॥

[६२५]

सो उ संपइ कह वि अन्नत्थ
खयराहमु गयउ इय गोरि-देवि-पय-पउम-पणमिर ।
इह चिट्ठउं हउं जणय- जणणि-दिण्णु निय-दइउ मग्गिर ॥
अह विहसेवि स-ताल-रवु भणइ कुमरु – पसयच्छि ।
इहु सु मयणु हउं किं न नियसि समरसीह-निव-वच्छि ॥

---

६२३. ३. क. विणाइय ६२४. ४. क. पर. ८. मकडि. ६२५. ४. क. हउं missing

[६२६]

अह सया-वि हु विसम-पगईए

कंदप्पह तह तसु वि　　ससि-मुहीए लज्जाउलत्तिण ।
विम्हारिय-तस्समय-　　उचिय-विहिहि रायाउरत्तिण ॥
मह मणहरणिय स ज्जि एह इय परिचिंतंतेण ।
सा कुमरिण कामिणि भणिय विम्हिय-मण-पसरेण ॥

[६२७]

चइवि संभमु मुइवि अवमाणु

विहिऊण पसाउ अणु　　सरिवि राउ सो पुव्व-दंसिउ ।
जो तइयहं पयडियउ　　उद्दिसेवि तइं निय-वयंसिउ ॥
पसरिय-अणुरायाणलिण　　उवताविय-अंगस्सु ।
कि न वियरसि पसयच्छि तुहुं मह नेहह सव्वस्सु ॥

[६२८]

किं न सुमरसि सुयणु जं नयर-

उज्जाणि कीलण-गयह　　मज्झ कंठि तइं मयण-वुड्ढिण ।
निक्खेविय कमल-वर-　　माल पूय कय भाव-सुद्धिण ॥
मह नेवत्थिण सहिहिं सहुं आरंभिय-कीलाए ।
तह तह परिरंभणु विहिउ मह जि सु-वीसंभाए ॥

[६२९]

इय भणंतिण कुमर-रयणेण

तसु लज्ज-अहोमुहिहि　　वयण-कमलु दाहिणिण हत्थिण ।
उक्खेविणु भणिउ – नणु　　सुयणु लद्ध तुहुं मइं कयत्थिण ॥
चिंतामणि व अहन्न-घरि　　दुलह इमम्मि वणम्मि ।
ता पसियसु अवलोयणिण　　धरिवि सु णेहु मणम्मि ॥

---

६२६. ५. क. विहि.

६२९. ९. क. णेह.

[६३०]

अह वियासिय-वयण जा किंचि

सा मुद्ध समुल्लवइ ताव दिट्ठ हय-विहि-विसेसिण ।
रोसारुण-लोयणिण गयण-ठिइण तिण खयर-पुरिसिण ॥
अहह जियंतह फणिवइहि चूडामणि कु छिवेइ ।
कु व केसर पंचाणणह जग्गंतह वि गहेइ ॥

[६३१]

इय भणंतिण विरसु रसिरस्सु

परिकंपिर-तणु-लयह संनिहीउ तसु तरुणि-रयणह ।
अवहरिउ कुमारु लहु अह मुएमि सुर-सिहरि-सिहरह ॥
तह जह पर-पिय-मण-जणिय- पावह फलु पेक्खेवि ।
निहणु उवेइ हयासु इहु सय-सक्करउ हवेवि ॥

[६३२]

इय विचिंतिरु तुरिउ अलि-गवल-

दल-नीलिण नह-यलिण लग्गु गंतु सो पाव-नहयरु ।
जा ताव निरिक्खिउण कुमर-चरिण सरि सिहरि पुरवरु ।
गुरु लहु लहुयरु लहुयतमु उद्धु उद्धु गमिरेण ।
कह मइं दिट्ठउ जाइसइ एहु इय चिंतंतेण ॥

[६३३]

हणिउ मुट्ठिण कुलिस-कढिणेण

निस्संकु कवाल-तलि तयणु गलिर-रुहिर-च्छडाविलु ।
अयकंदिय-पडिरविण भरिय-गयण-गिरि-धरणि-मंडलु ॥
मुह-कंदरह विणिस्सरिय- दीहर-रसणा-सप्पु ।
कसु सोहग्गु न हुयउ लहु सो नहयरु गय-दप्पु ॥

[६३४]

अह विइज्जइ कुमर-घायस्सु

वीहंतु व तक्खणिण खयर-अहम-जिउ नट्ठु वेगेण ।
ता नहयर-सवह तसु वयणु अ-नियमाणिण व तरणिण ॥
अत्थ-सिहरि-सिहरह परइ गंतु विहिउ आवासु ।
हय-रिउ कुमरु वि तसु पियह सुमरंतउ संभासु ॥

[६३५]

निसिय-ससहर-किरण-सर-भरिण

कर-कलिय-कराल-तणु कुसुय-कंति-कोदंड-लट्ठिण ।
नहयर-वह-वइयरिण तविय-मणिण इव मयण-धट्ठिण ॥
रयणि-समागमि तह कह वि परिसल्लिउ सव्वंगु ।
असुहिण सुहिण व घत्थियउं जह न मुणइ निय-अंगु ॥

[६३६]

नणु हयासु सु सत्तु निद्दलिउ

लीलाए वि एहु पुणु किह णु भुवण-दुज्जउ जियव्वउ ।
हुं हुं अत्थि उवाउ मइं जिणणि रिउहु एयह वि लद्धउ ॥
जइ जीवंतु स-नयणुल्लिहिं हरिण-नयणि पेक्खेसु ।
ता एयह मयणह रिउहु तुरिउ जलंजलि देसु ॥

[६३७]

इय विचिंतिरु कुमरु अडईए

ढंढोल्लिवि को-वि खणु गयउ कह वि धवलहरि तम्मि वि ।
ता ससि-मुहि संभमिण उत्तरीउ संवरिवि विहसिवि ॥
उट्ठिवि संमुह हरिस-भर- खलिरक्खर-वयणेहिं ।
पुच्छइ पच्छिम कह मुइर वाह-सलिलु नयणेहिं ॥

६३७. १. क. ख. वाहु.

[६३८]

अह समासिण निव्विड-नेहाए

तहि सारय-ससि-मुहिहि　　पुव्व-उत्त कह सयल साहिय ।
ता पसरिय-हरिस-भर　　सा मयच्छि कुमरिण विवाहिय ॥
अह पाविय-चक्कि-स्सिरि व　　फुरिय-हरिस-वावारु ।
तीए सुनंदह कामिणिहि　　सविहि वइट्ठु कुमारु ॥

[६३९]

अरिरि ससहर तवहि तुहुं अज्जु

मलयाणिल तुहुं फुरहि　　लेहि पसरु सहयार तं पि हु ।
हलि कोइलि लवि तुहुं वि　　तुमि वि भमर झंकार पयडहु ॥
अरि अरि धट्ठय कुसुम-सर　　पुरिखु होहि तुहुं अज्जु ।
एह पाडेसइ सयलहं वि　　तुम्हहं मत्थइ वज्जु ॥

[६४०]

तह सुलोयणि एहि जह तुज्झु

क-वि अक्खउं वत्तडी　　इय भणंतु पविसेइ अंगह ।
जा ताव समुल्लसिय-　　रोस-पसर गयणयल-मग्गह ॥
तसु खयरह कुमरिण हयह　　आयण्णिय-वुत्तंत ।
संझावलि-नामिय लहुय　　भइणि तत्थ संपत्त ॥

[६४१]

किंतु कुमरह वयण-हरिणंक-

अवलोयण-अमय-रस-　　सित्त झीण-तणु-कोह-यवह ।
मयणाणल-तविय-तणु　　हूय स ज्जि सव्वंग-दुस्सह ॥
ता गंधव्व-विवाह-विहि　　अणुसरेवि परिणीय ।
कुमरिण संझावलि वि निय-　　वसुकय-सिण उवणीय ॥

---

६३८. ६. ता पाविय. ६३९. २. क, ख, मलयाणल. ६४०. १. तुज्झ.

[६४२]

अह कुमारहं सुकय-सयलब्भ-

हिय-इच्छिय-अत्थ-कर　　पढिय-सिद्ध गुरु-कमुवणामिय ।
संझावलि-कामिणिहिं　　दिण्ण विज्ज पण्णत्ति-नामिय ॥
तेण वि साहिय अइरिण वि　उवएसिय-विहि-पुव्वु ।
विज्ज स पयडंतिण नियय-　मणि उच्छाहु अउव्वु ॥

[६४३]

एत्थ अंतरि पहिण गयणस्सु

सासाउल खुहिय-मण　　खयर-कुमर दो तत्थ आगय ।
पणमंति य आयरिण　　कुमर-वरह तसु पाय-पंकय ॥
तयणु कुमारिण भणिउ—किं　एहु इय चिंतंतेण ।
नणु के कत्तु व कह व तुमि　इह आगय वेगेण ॥

[६४४]

अह पयंपहिं खयर—नर-रयण

वेयड्ढह गिरि-वरह　　विहिय-सिरिहि गंधव्व-नयरिहि ।
नाहेहिं खयराहिविहिं　　चंडवेग-सिरिभाणुवेगिहिं ॥
पेसिय अम्हि नियंगरुह　एहु रह-रयणु गहेउ ।
चंदसेण-हरिचंद इय-　　नामय तुम्हहं हेउ ॥

[६४५]

सुणिय-निहणिय-तणय-वुत्तंतु

रोसारुण-नयण-दलु　　खयर-वलिण संछन्न-नह-यलु ।
नाणाविह-समर-धर-　　पत्त-कित्ति जिय-पिसुण-मंडलु ॥
असणिवेग-अभिहाणु खयराहिवु गरुय-मरट्टु ।
आगच्छंतु सुणेवि कय-　नहयर-मण-संघट्टु ॥

---

६४२. ३. क. सिद्धु गुरुकमुणामिय.
६४४. ५. क. °भाणुविगिहिं.

[६४६]

ता पसीउण तुम्हि नर-रयण

रह-रयणि इहारुहह तुरिउ एत्थ-अंतरि पहुत्तय ।
खयरिंद ति वहु-वलिण चंडवेग-सिरिमाणुवेगय ॥
जाव य ति वि कुमरेण सह सुह-दुह-कह अक्खित ।
अइवाहइं तहिं कालु कु-त्ति रण-रस-पुलइज्जंत ॥

[६४७]

ताव निसुणित्ति तणय-वुत्तंतु

साडोवु समुल्लसिय- रोसु जमु व तिहुयण-भयंकरु ।
सद्दाविवि मंडलिय- सचिव-नियरु निय-रज्ज सुंदरु ॥
असणिवेगु पभणेइ – लहु चल्लहं संवहिऊण ।
अज्जु जिम्वेसहुं सुय-वहय- कुमरह वलु मलिऊण ॥

[६४८]

ता पयंपिउ पवर-मंतीहिं

नणु नाह न सत्तु लहु इय मुणेवि अवगण्णियव्वउ ।
कु व एगु महावलह मह इमो त्ति न उवेहियव्वउ ॥
वड्ढंतिण हुयवह-कणिण डज्झइ सयलु वि लोउ ।
किज्जइ सीहिण एगिण वि करि-घड-हणणि विणोउ ॥

[६४९]

धरणि-गोयरु एहु अहयं तु

विज्जाहर-चक्क-पहु इय मुणेवि रिउ मावहीलह ।
कि न रामिण रावणु सु हरिण कंसु सु न नीउ पलयह ॥
इय वलवंतिहिं थिर-मणिहिं दिट्ठ-सत्तु-सत्तेहिं ।
सु वियारेवि विहेउ खमु रण-संरंभु निवेहिं ॥

६४८. २. क. तणु.
६४९. ६. क. थिरगमणिहिं.

[६५०]

इय विचित्तहिं वयण-रयणहिं

जंपंत वि मंति-वर अवगणेवि सो खयर-सामिउ ।
चउरंगिण बल-भरिण चलिउ कुविय-विहि-रज्जु-दामिउ ॥
समग-समाहय-विप्फुरिय- समर-तूर-निग्घोसु ।
पुव्व-पयट्ट-अणेग-रण- सत्तु-विजय-संतोसु ॥

[६५१]

फुरिय-गरुयर-विविह-अवसउण-

डिसिद्धु वि सुय-मरण- असुह-तिमिर-आवरिय-लोयणु ।
लहु पत्तु महाडइहिं तीए उवरि तोरविय-संदणु ॥
अह जा खयराहिव-सहिउ कुमरु उद्ध जोएइ ।
भुवण-भयंकरु ता गयणि कोलाहलु निसुणेइ ॥

[६५२]

तयणु किं एहु फुट्टइ बंभंडु

वेयालु व कु-वि कुविउ जलनिहि व्व खुहियउ अयंडि वि ।
जं सुम्मइ पलय-घण- गहिरु सद्दु ठिउ भुवणु भंडिवि ॥
इय-चिंतिर-खयराहिविहिं सहिउ सु सणतुकुमारु ।
जा चिट्ठइ ता खणिण तहिं पत्तु सु नहयर-सारु ॥

[६५३]

अह खणद्धिण विहिय-संनाह

विज्जाहर-पहु ति दु वि चंडवेग-सिरिभाणुवेगय ।
खयरिंदिण तेण सह ढुक्क नियय-सेन्नेण संगय ॥
किंतु खणेण वि दो वि तिण असणिवेग-खयरेण ।
हय-विप्पहय विहिय घण व झंझाणिल-पसरेण ॥

६५२. ५. गहिरसदु. ९. क. नहयरु.

[६५४]

तयणु नासिर-सेन्न भज्जंत

ते दो वि निरिक्खिउण कुमर-वरिण अखलंत-पसरिण ।
मा भायह नियह खणु दलिसु दप्पु इमह त्ति भणिरिण ॥
पण्णत्तिहि विज्जह वसिण कय-चउरंग-वलेण ॥
खग्ग-खणक्खण-रव-खुहिय- पडिवक्खिय-खयरेण ।

[६५५]

निसिय-करयल-कलिय-करवाल-

लय-निद्दय-निद्दलिय- सत्तु-कुंभि-कुंभयड-लक्खिण ॥
धणु-जंत-विमुक्क-सर- निहय-भडिण रण-मग्ग-दक्खिण ॥
छुरिय-घाय-पसरिय-रुहिर- छड-अरुणिय-गयणेण ।
मुग्गर-पहर-विणिद्दलिय- उत्तिमंग-सुहडेण ॥

[६५६]

सत्ति-भल्लय-सेल्ल-वावल्ल-

नाराय-मुसुंढि-गय- वज्ज-चक्क-कत्तरिय-कुंतिहिं ।
निहणंतिण करि-तुरय- सुहड-सत्थ वहु-विह-विभत्तिहिं ॥
उवसाहिउ खण-मेत्तिण वि असणिवेग-खयरिंदु ।
तयणु सु परिविप्फुरिय-कुरु- वंस-गयण-रयणिंदु ॥

[६५७]

खयर-वियरिय-रहवरारूढु

सुर-नहयर-तरुणियण- मुक्क-पंचविह-कुसुम-वुट्ठिउ ।
स-परिक्कम-सुर-असुर- खयर-सुहड-मण-जणिय-तुट्ठिउ ॥
भुवणब्भंतर-वित्थरिय- निरुवम-कित्ति-कलावु ।
पत्तु तहिं चिय धवलहरि पसरिय-महुरालावु ॥

[६५८]

तयणु तक्खणि विणय-पणयाहं ।
गुरु-हरिसिण पुलइयहं धम्म-कम्म-निम्मल-विवेगहं ।
दुण्हं पि खयर-प्पहुहुं चंडवेग-सिरिभाणुवेगहं ॥
वयणिण नियदइयउ दुवि त्रि वेप्पिणु सणतुकुमारु ।
सिरि-गंधव्व-पुरम्मि गउ कय-रिउ-कुल-संहारु ॥

[६५९]

अह अणुक्कम-गहिय-नीसेस-
विज्जाहर-रज्ज-सिरि फुरिय-गरुय-खयराहिवत्तणु ।
उवसाहिय-विज्ज-सय- सहसु पणय-इच्छिय-पयच्छणु ॥
चंडवेग-खयराहिविण भणिउ इयर-दियहम्मि ।
पहु भुवणस्सु वि इच्छियइं पूरसि तुहुं हिययम्मि ॥

[६६०]

ता पसीऊण मह वि एयाउ
सय-संखउ कन्नयउ समगमेव परिणेउ सामिउ ।
तह गेण्हउ रज्जु इहु हउं हवेमि जह मोक्ख-गामिउ ॥
जम्हा एत्तिउ कालु इह ठिउ तुह मग्गु नियंतु ।
रज्ज-धुरंधरु को-वि नियनंदणु अ-निरिक्खंतु ॥

[६६१]

जमिह पत्तउ आसि अइसइय-
नियनाणिण मुणिय-जगु अच्चिमालि-अभिहाणु मुणि-वरु
तिण अक्खिउ — चक्कवइ आससेण-कुल-गयण-ससहरु ।
तुह कन्नहं सय-संखहं वि होहिइ पिउ जय-सारु ।
भाणुवेग-धूयहं वि सु जि पिययमु सणतुकुमारु ॥

६६१. क. संखह.

[६६२]

तसु पसाइण तुहुं वि निच्चिंतु

स-कुंव-रज्जहं विसइ होउ होसि सद्धम्म-साहणु ।
ता जंपिउ मइं — कहसु साहु-वसह तसु मुणण-कारणु ॥
ता आइट्ठउं मुणि-वरिण जो तुरइण हरिऊण ।
पाडिज्जिहिहि महाडइहिं तत्तु वि आणेऊण ॥

[६६३]

चिर-समज्जिय-सुकय-माहप्प-

आयड्ढ-उत्तिम-चरिय- विजिय-जगिण उचियत्त-दक्खिण ।
माणस-सरि मुच्चिसइ करयलेण कमलक्ख-जक्खिण ॥
असियक्खह जक्खह नियय- रिउहु जु हणिहइ दप्पु ।
सो जाणिज्जसु निय-दुहिय- हियय-प्पिउ अवियप्पु ॥

[६६४]

भणिउ मइं — अह किह णु मुणि-नाह

नर-रयणह तसु वि असियक्ख-जक्खु सो हुयउ वइरिउ ।
ता सूरिण भणिउ — नणु अप्पु चेव सुह-असुह-पेरिउ ॥
जायइ सयलस्सु वि जयह सुहि सत्तु व जिय-लोइ ।
एत्थ वि खयराहिवइ तुहुं हेउ इमो च्चिय जोइ ॥

तहाहि —

[६६५]

दीवि एत्थ वि कणयपुर-नयरि

निय-तेय-निज्जिय-तरणि फुरिय-कित्ति पडिवक्ख-खंडणु ।
पणय-प्पिउ दाण-रुइ धीर-चरिउ दुन्नय-विहंडणु ॥
सारय-रयणीयर-सरिस- वहु-गुण-रयण-निहाणु ।
आसि नराहिवु जय-पयडु विक्कमजस-अभिहाणु ॥

---

६६२. १. क. तुंह.
६६४. ३. क. वरिउ

[६६६]

तसु विसप्पिर-कुल-पसूयाहं
सरइंदु-उज्जल-जसहं	कुंद-कलिय-सम-दंत-पंतिहिं ।
वियसंत-मुह-पंकयहं	उत्तसंत-सिसु-हरिण-नेत्तिहिं ॥
अंतेउरियहं रइ-समहं	चिट्ठइं पंच सयाइं ।
ताहिं य सह भुंजंतु निवु	चिट्ठइ विसय-सुहाइं ॥

[६६७]

तहिं वि धण-कण-रयण-कलहोय-
समुवहसिय-वेसमण-	विहवु नयर-नर-पवर-वुड्ढिउ ।
ससि-निम्मल-नियय-गुण-	वसुवलद्ध-जस-कित्ति-रिद्धिउ ॥
निरुवम-रूवु थिर-प्पगइ	इगु सत्थाहह पुत्तु ।
आसि पसिद्धउ धरणियलि	नामिण नागदत्तु ॥

[६६८]

तसु वसुंधर-पवर-सिंगार
असवण्ण-लायण्ण-निहि	महिय-देव-गुरु-पाय-पंकय ।
नव-जोव्वण तरुण-मण-	रयण-हरण-विहि-विगय-संकय ॥
मिउ-भासिर थिर-चंकमिर	गुरु-गुण-रयण-समिद्ध ।
हियय-प्पिय पिय आसि जगि	विण्हुसिरि त्ति पसिद्ध ॥

[६६९]

इयर-वासरि रायवाडियहं
गच्छंतउ धरणिवइ	विहिय-चारु-सिंगारु मग्गिण ।
अवलोयइ विण्हुसिरि	विजिय-तियस-सुंदरि निसग्गिण ।
अह तद्दंसणि तक्खणिण	पसरिय-गुरु-कंदप्पु ।
विहुरिय-अंगोवंगु परिचिंतइ विविह-वियप्पु ॥

---

६६६. ७. विट्ठहिं

[६७०]

जइ न भुञ्जइ विसय-सुहु अञ्जु

सह ससहर-वयणियए जिय-रइए तरुणीए एइए ।
ता मण्णउं अप्पु मय- निव्विसेसु संगहिउ अरइए ॥
दूरि वसंतइ वल्लहइ न हवइ मणि संतोसु ।
चक्कु दुहिज्जइ रवि-विरहि तहिं कु-वि अन्नु कि दोसु ॥

[६७१]

अह निउत्तिहिं नरिहिं सा बाल

नेयाविणु निय-भवणि निविण विविह पडिवत्ति कारिवि ।
अंतेउरि परिखिविय जय-पहाण एह इय वियारिवि ॥
पत्तावसरि पवत्तिउण विण्हुस्सिरि उवभुत्त ।
तह जह मयण-हुयासणह समियह कह संवुत्त ॥

[६७२]

अह निसामिय-निवइ-वुत्तंतु

अ-लहंतु मग्गंतउ वि नागदत्तु निय-पियहि विरहिण ।
सुहि-सयणिहिं पूरिउ वि स-घरु मुणिरु उव्वसिउ भूइण ॥
सोइज्जंतउ सज्जणिहिं खलिहिं खलीकिज्जंतु ।
निरु परिचिट्टइ कह कह न नयरि असेसि भमंतु ॥

[६७३]

गलिय-परियणु चइय-सुहि-सयणु

संपीणिय-पिसुण-मणु दलिय-माणु परितविय-सज्जणु ।
संपिंडिय-डिंभ-यणु चत्त-पाण-भोयण-विलेवणु ॥
विण्हुस्सिरि तुहुं कहिं गइय चइउ ममं ति भणंतु ।
दिट्ठउ विण्हुस्सिरि-ज्झइण निवइण कह-वि भमंतु ॥

६७०. ३. क. एइय.
६७२. ८-९. क. कह कह नयरि.
६७३. १. क. परिहणु.

[६७४]

न उण कहमवि निविड-नेहेण

परिमुक्किय विण्हुसिरि अह कयावि हय-विहि-निओइण ।
निव-दइयहिं सेसियहिं अमरिसेण ओसह-पओइण ॥
सज्जण-गरहिय-विहिण परिउज्झिय-भोगुवभोय ।
सा पत्तिय पंचत्तु लहु विहलिय-इह-पर-लोय ॥

[६७५]

अह नराहिवु तीए विरहेण

परिसुन्नउं तिहुयणु वि मन्नमाणु तक्खणि वि मुच्छिउ ।
तयवत्थ-विण्हुसिसरिहि उवरि पडिउ परिमउलियच्छिउ ॥
अह हाहाविरु मंति-यणु विलविरु नयर-पहाणु ।
कुणइ चिगिच्छ नराहिवह पसरिय-सोय-निहाणु ॥

[६७६]

निवु वि किंचि वि पत्त-चेयन्नु

उवलद्ध-वहुयर-असुहु फुरिय-गरुय-वियलत्त-वइयरु ।
खणु उट्ठइ खणु सुयइ खणु हसेइ खणु रुयइ दुहयरु ॥
दइयए पुणु अ-कुणंतियए न कुणइ भोयणु किंपि ।
न वि य विमुंचइ पिययमहि तसु संनिहि ईसिं पि ॥

[६७७]

न वि य छिविउ वि देइ इयरस्सु

ता सचिविहिं मंतिउण कह वि दिट्ठि वंचिवि नरिंदह ।
उप्पाडिवि विण्हुसिरि खिविय नेउ मज्झम्मि विविणह ॥
ता अ-नियंतउ निय-दइय भोयणु जलु वि न लेइ ।
अंसु-जलाविल-नयणु निवु विक्कमजसु विलवेइ ॥

---

६७४ ४. क. दइयहि. ८. क. पत्तिय.

[६७८]

अह नराहिवु स-पिय अ-नियंतु

मा मरिहइ इय समगु　　सचिव-जणिण सयलेण मंतिवि ।
कायव्वउं जइ कह वि　　सत्थु हियउ पहुहु त्ति चिंतिवि ॥
भणिउ नमेविणु नरवरह　　पुरउ — देव पसिऊण ।
भोयणु कुणसु पसन्न-मणु　　निय-पिययम दट्ठूण ॥

[६७९]

तयणु — कहि कहि कत्थ कत्थत्थि

सा ससि-मुहि विण्हुसिरि　　इय भणंतु उट्ठेवि नरवरु ।
वयणेण सचिवहं चडिवि　　तुरइ गहिय-निय-सार-परियरु ॥
पत्तु तइज्जह लंघणह　　अंति चउत्थ-दिणम्मि ।
जत्थ खिवाविय विण्हुसिरि　　चिट्ठइ तत्थ वणम्मि ॥

[६८०]

ता निरंतरु पूइ-पब्भार-

किमि-संकुल-सयल-तणु　　काय-सहस-आवट्ट-लोयण ।
वहु-गिद्ध-सिगाल-सय-　　सुणय-सहस-परिविहिय-भोयण ॥
विगलिय-दसण कराल-मुह　　पूइ-गंध-वीभच्छ ।
दिट्ठ नरिंदिण विण्हुसिरि　　विहय-सहस-पडिहत्थ ॥

[६८१]

अह नराहिवु फुरिय-वेरग्गु

धिसि जीए निमित्तु मइं　　सील-रयणु लीलइं कलंकिउ ।
परिचत्तु कुल-क्कमु वि　　सुयण-वग्गु सयलु वि धवक्किउ ।
अब्भुवगय पागय-किरिय　　वित्थारिय अवकित्ति ।
भुवणि वि अप्पु विगोइयउ　　तसु एरिस मुत्ति त्ति ॥

---

६७८. २. क. मरिहइ य. ८. क. मण.

६८०. ९. पडिहच्छ.

६८१. ८. क. भुवणु.

[६८२]

इय विचिंतिरु रज्जु पंजरु व

सुहि-सयण वि वंधण व	विसय-सुहु वि विस-विडवि-फलु इव ।
तारुण्णु वि जल-लवु व	जीवियं पि करि-कलह-सवणु व ॥
तरुणिउ दुग्गइ-सरणिउ व	हियउ वि सुर-धणुहु व्व ।
विग्गहु सयलावइ-गिहु व	पिय-संगु वि असुहु व्व ॥

[६८३]

धरिवि हियइण मुणिय-परमत्थु

नीसेसु वि परिहरवि	भणिय-वत्थु-वित्थरु खणद्धिण ।
स-कुडुंवह सयलह वि	करिवि सुत्थु सह रज्ज-रिद्धिण ॥
गंतु तहा-विह-मुणि-वरहं	पुरउ फुरिय-रोमंचु ।
गेण्हइ चरणु नराहिवइ	अवगय-पाव-पवंचु ॥

[६८४]

तयणु निंदइ पाव-कम्माइं

पडिवज्जइ गुरु-भणिउ	पायछित्तु तव-चरणु सेवइ ।
अणुसीलइ मुणि-किरिय	मुणइ सयल-सत्थत्थु केवइ ॥
तह जह जायउ अइरिण वि दुविह-समहिगय-सिक्खु ।
अणुचरियंतिम-सयल-विहि सहलीकय-निय- दिक्खु ॥

[६८५]

खविवि गुरुयरु पाव-पब्भारु

उवसंचिवि	सुकय-भरु	परिहरेवि तणु इहु उरालिउ ।
तइयम्मि सुर-घरि गयउ	नागदत्तु पुणु दुह-करालिउ ॥
समुवज्जिय-गुरु-पाव-भरु	पसरिय-दुह-पब्भारि ।
मरिवि चउ-ग्गइ-भव-गहणि	निवडिउ भव-कंतारि ॥

[६८६]

अह ठिइ-क्खइ सुकय-कय-रक्खु
सो तस्सु सुरालयह चविवि पवर-वासर-मुहुत्तिण ।
सिरि-विक्कमजस-तियसु नयरि रयण-पुरि सुप्पवित्तिण ॥
सिविण-सइंण उवलक्खइयउ कसु वि महिब्भह पुत्तु ।
जायउ कय-सुहि-सयण-सुहु वहु-लक्खण-संजुत्तु ॥

[६८७]

तयणु जणइण सिविण-अणुरूवु
जिणधम्मु इय नंदणह दिण्णु नामु गरुयरिण रिद्धिण ।
कम-जोगिण वालगु वि सहिउ सरय-ससि-सुद्ध-वुद्धिण ॥
गुरुहु पसाइण पत्तु लहु सयल-कलोयहि-पारि ।
तह संपाविय-जस-पसरु जिण-सासणह वियारि ॥

[६८८]

काल-जोगिण कित्ति-सेसत्ति
संपन्नइ तप्पियरि मिलिवि सयल-सज्जणिण सो च्चिय ।
तम्मंदिरि पहु विहिउ तयणु तेण उवलद्ध जच्चिय ॥
गुरु-गुण-धम्म-समज्जिणिय महियल-पयड-पयास ।
निरुवम-कित्ति-पुरंधि निय- पह-पंडुरिय-दसास ॥

[६८९]

एत्थ अंतरि भमिवि संसारि
सिरि-सीहउरम्मि पुरि नागदत्त-जीवु वि स-कम्मिण ।
उववन्नु तहा-विहह कसु वि दियह गिहि पुत्त-भाविण ॥
कोहण-पगइ स-मच्छरिउ अ-विहिय-स-कुलायारु ।
अग्गिसम्म-नामिण पयडु अमुणिय-वेय-वियारु ॥

---

६८६. ५. क. सपवत्तिण; ७. क. कसु हि.
६८८. ३. सो ज्जि य.

[६९०]

अह तहाविह-गुरुहु पय-मूलि
परिवायग-वउ गहिवि परियडंतु वसुहहं समग्गहं ।
निय-धम्मिण पत्त-जसु मज्झि वाल-तवसिहिं उदग्गहं ॥
विहिहि निओइण रयणउर-निव-भवणम्मि पहुत्तु ।
अह नरवाहण-नरवरिण निसुणिवि तव-वुत्तंतु ॥

[६९१]

भणिउ – महरिसि कुणसु तुहुं अज्जु
मह मंदिरि पारणउ तयणु तेण वालय-तवस्सिण ।
जिणधम्मु तहिं गयउ दट्ठु फुरिय-रोसिण हयासिण ॥
भणिउ – नराहिव पारणउं तुह घरि करिसु अवस्सु ।
महियल-गयह अहो-मुहह वणियह जइ एयस्सु ॥

[६९२]

ठविवि पट्ठिहिं कंस-पत्तीए
उण्हुण्हु पायस-असणु देसि जमिह मइं अज्जु एरिसु ।
गोसम्मि वि आयरिण गहिउ नियमु चिट्ठेइ असरिसु ॥
अह नरनाहिण विहि-वसिण निव्वंधिण जिणधम्मु ।
भणिवि अणिच्छंतु वि कह-वि कारावउ तं कम्मु ॥

[६९३]

तयणु अगहिय-नामु सु हयासु
उण्हुण्हु पायस-असणु सणिउ सणिउ भुंजइ पहट्ठउ ।
जिणधम्मु वि तब्भणिय- विहिण सुद्ध-महियलि निसिट्ठउ ॥
पट्ठि निविट्ठुण्हुण्हयर- कंस-पत्ति-दाहत्तु ।
भावइ भव-उव्विग्ग-मणु विमल-विवेय-पवित्तु ॥

---

६९१. २. क. अज्ज. ५. दट्ठु.

६९३. ५. निसट्ठउ.

[६९४]

अहह अरि जिय करिसि म म रोसु

इयरस्सु कस्सु वि उवरि विहि-वसेण कु व कु व न पावइ ।
भव-विविणि दुहावणइ मण-अगोयर वि विविह आवइ ॥
निय-सुह-असुहइं पुव्व-भव- समुवज्जियइं चएवि ।
को गिण्हइ जसु अवजसु व भद्दु अभद्दु व देवि ॥

[६९५]

जलिर-मंदिर-सरिसु संसारु

निरुवद्दवु मोक्ख-पुरु दुहय विसय सुह-हेउ सिव-पहु ।
तणु चंचल धम्मु थिरु सुहउ सुगुरु खलयणु दुहावहु ॥
अप्पु वि अ-नियंतिउ पिसुणु सु-नियंतिउ सु जि मित्तु ।
ता जिय वट्टसु इयरुवरि राय-दोस चइत्तु ॥

[६९६]

जलहि-सुरगिरि-गहिर-थिर-मणह

इय तस्सु विचिंतिरह सो हयासु वालय-तवस्सिउ ।
अइ-मंथरु भुंजिउण उण्ह-उण्हु परमन्नु हरिसिउ ॥
सेट्ठिहि पट्टिहि कह कह वि जा उप्पाडइ पत्ति ।
ता उक्खिडिय स रुहिर-वस- मंस-न्हारु-जुय त्ति ॥

[६९७]

अहह धिसि धिसि पाव-तवसिइण

किह एइण धम्म-निहि पुरिस-रयणु एरिसु विडंविउ ।
निक्कारणि निवइण वि किह अ-कज्जु एहु एहु कराविउ ॥
नहि पर-लोइ वि निय-कयहं सुह-असुहहं संसारि ।
छुट्टिज्जइ गुरु-गुरुएहिं वि विसम-विवागि अ-सारि ॥

---

६९४. ४. क. विणिवि. ५. विविहिह.

६९६. ५. क. उण्हउण्ह. ६. पिट्ठिहि.

[६९८]

इयं निसामिरु देव-गुरु-वयण-

परमामय-सित्त-तणु	राय-दोस-परिहरिय-माणसु ।
आगंतुण नियं-भवणि	बहु-दुहत्तु निय-कज्ज-अणलसु ॥
मेलिवि संघु चउव्विहु वि	तह सुहि-सज्जण-लोउ ।
विहिउण पुय-सक्कारु तसु	सो निय-कुल-उज्जोउ ॥

[६९९]

करिवि निय-घर-सुत्थु सुहि-सयण-

धण-धन्नु परिच्चइवि	धरिवि हियइ जिणनाह-सासणु ।
पडिवज्जिवि वर-वरणु	गंतु गिरिहिं गेण्हेवि अणसणु ॥
पुव्व-दिसिहिं उस्सग्गि ठिउ	गमइ पणरस दिणाणि ।
इय सेसासु वि तिसु दिसिसु	पिहु पिहु पन्नरसाणि ॥

[७००]

इय दु-मासिउ उग्गु तव-कम्मु

अइ-दुक्करतरु करिवि	ढंक-कंक-वग-उलुग-कागिहिं ।
सिंचाण-सिगाल-विग-	वण-विराल-भल्लुंकि-सुणगिहिं ॥
खज्जिर-पट्ठि-पएसु सुर-	सिहरि-सिहर-थिर-चित्तु ।
मरिवि सु हुयउ सुराहिवइ	सोहम्मम्मि पवित्तु ॥

[७०१]

सु वि तहाविह-नियय-दुच्चरिय-

परिखेइय-सुहि-सयणु	वाल-किरिय-परिसीलणुज्जउ ।
वुह-वग्गिण अवगणिउ	मरिवि नियय-दुक्कय-विइज्जउ ॥
अग्गिसम्मु सोहम्म-सुर-	मंदिरि तियसिंदस्सु ।
एरावणु वाहणु हुयउ	वसिण स-कय-कम्मस्सु ॥

६९९. ४. विरवरणु.

[७०२]

पत्त-अवसरु विहिय-सिंगारु

अभिओगिय-सुर-गणिण नीउ पुरउ तियसाहिरायह ।
तहंसणि करिवरु वि अणुसरंतु गरुयर-विसायह ॥
चिक्काराख-भरिय-दिसि तसिउ पयट्टउ जाव ।
वज्जंकुस-करु तियस-पहु तहिं आरूढउ ताव ॥

[७०३]

तयणु दुगुणीहुयउ करि-राउ

तियसिंदु वि दुगुण-तणु चउ-सरीरु अह हत्थि-नाहु वि ।
सुर-सामि वि चउ-गुणिउ तयणु अट्ठ-गुण हूय ते दु-वि ॥
किं बहुइण तह तह सुइरु खेइवि गरुय-विसाइ ।
आरूढउ तियसाहिवइ तइयहं तहिं करि-राइ ॥

[७०४]

इय निरंतरु तेसि दोण्हं पि

तियसेसर-गयरायहं फुरिय-गरुय-सुह-दुह-विसेसहं ।
सुइरज्जिय-निय-नियय- कम्म-वसिण गच्छंत-दिवसहं ॥
पुव्वयरु वि करिवरु चइवि पडियउ भवि चउरंगि ।
धम्मिय-जण-उवकंप-यरि पसरिय-दुह-सव्वंगि ॥

[७०५]

तियस-सामि वि चविवि ठिइ-खइण

सिरि-हत्थिणाग-पुरिहिं आससेण-मेइणि-मयंकह ।
सहदेविहि पिययमह कुच्छि-कमलि अणहुव-कलंकह ॥
चउदह-सिविणुवसूइयउ हुउ गुण-रयण-निहाणु ।
नंदणु भुवणाणंद-यरु सणतुकुमारभिहाणु ॥

७०२. १. क. आरूढउ.

७०४. ३. क. दुहं. ७०५. ६. अणहुय.

[७०६]

भमिवि चउ-गइ-भव-अरण्णम्मि
बहु-भेय-परिप्फुरिय- जम्म-मरण-सहसिहिं कयत्थिउ ।
विलवंतउ पर-वसिउ दास-पेस-अधणत्त-दुत्थिउ ॥
तारिस-निय-कम्मह वसिण अभिहाणिण असियक्खु ।
हुउ वेयड्ढ-महागिरिहिं एरावण-जिउ जक्खु ॥

[७०७]

इय समासिण कहिवि वुत्तंतु
तुह संतिउ मुणि-वसहु अच्चिमालि अन्नत्थ विहरिउ ।
तुह अंतर-वास-कइ भाणुवेगु पुणु गहिवि कुमरिउ ॥
मह वयणिण माणस-सरह सविह-देसि गंतूण ।
ठिउ पिय-संगम-नामु पुरु सुर-पुर-समु रइऊण ॥

[७०८]

तयणु तइयहं तह तुमं तेण
परिणाविउ अट्ठ निय- दुहिय किं तु तुह पाय-जुयलह ।
पत्थाविण सेव हउं करिसु धरिवि इहु मज्झि हिययह ॥
तइं मिल्लेविणु एक्कलउ भाणुवेगु निय-ठाणि ।
गउ ता पहु मरिसिज्ज तुहुं इहि अवराह-पयाणि ॥

[७०९]

चंडवेगिण भणिवि इय कुमरु
परिणाविउ वित्थरिण कन्नयाहं तहं सउ अणूणउं ।
ता भुंजइ विसय-सुहु गरुय-खयर-रज्जिण सम्वाणउं ॥
चंडवेग-खयरिंदु पुणु स-कुडुंब वि निय-रिद्धि ।
सणतुकुमारह देइ लहु सारय-ससि-सम-वुद्धि ॥

७०६. ४. परिवसिउ.

[७१०]

अह तहाविह-गुरुहं पय-मूलि
विज्जाहर-चक्कवइ एहु गंतु चारित्तु सेवइ ।
इय गच्छइ कालु कु-वि कुमर-वरिण पुणु अज्जु केम्वइ ॥
अम्हहं पुरउ समग्गहं वि संलत्तउ एगंति ।
जह कीलण-कइ एह लहु मानस-सर-सामंति ॥

[७११]

ता सुनंदा-पमुह-दइयाहिं
सारेण य परियरिण विहिय-सेवु इह अज्जउत्तउ ।
जावागउ ताव नर- रयण एत्थ तं पि हु पहुत्तउ ॥
एत्थंतरि कयलीहरह वियसिय-मुह-अरविंदु ।
उट्ठेविणु नीहरइ कुरु- वंस-गयण-रयणिंदु ॥

[७१२]

तयणु दो वि हु विहिय-तक्काल-
पाउग्ग-विहाण लहु जणिय-सयण-आणंद-वित्थर ।
पुव्वज्जिय-तियस-गिरि- तुंग-पुण्ण-पब्भार-सुंदर ॥
भुवणब्भंतर-वित्थरिय- निम्मल-कित्ति-कलाव ।
सिरि-वेयड्ढ-महागिरिहिं गया ति सरल-सहाव ॥

[७१३]

ता विसेसिण खयर-सेणीसु
दोसुं पि सव्वायरिण नियय आण अइरिण पयारिवि ।
पणमंतहं नहयरहं उचिउ रज्ज-अहिसेउ कारिवि ॥
परिणेविणु नाणा-विहउ विज्जाहर-कुमरीउ ।
अह अप्पिण वियसिय-मुहिउ घेप्पिणु अंतेउरीउ ॥

[७१४]

सूर-नरवइ-तणय-वयणेण

निसुणेविणु जह जणय- जणणि-सयण चिट्ठंति दुक्खिण ।
आऊरिय-गयण-यलु विविह-खयर-खोणिंद-लक्खिण ॥
निय-माहप्पु समग्गह वि जयह मज्झि पयडंतु ।
सणतुकुमारु कुमार-वरु हत्थिणाग-पुरि पत्तु ॥

[७१५]

तयणु स-हरिसु जणणि-जणयाहं

अहिणंदइ पय-कमल कुणइ गरुय-पडिवत्ति सयणहं ।
संभूसइ पणइ-यण जणइ तोसु जय-जंतु-वयणहं ॥
सविह-निवेसिय-सूर-सुय- वयणिण निय-वुत्तंतु ।
जणणी-जणयाइय-जणहं कहइ साइ-पज्जंतु ॥

[७१६]

अह निहित्तु व अमय-कुंडम्मि

संपाविय-सुरतरु व गिह-पसूय-वर-कामधेणु व ।
उवलद्ध-चिंतामणि व चक्कवट्टि-रज्जाहिसित्तु व ॥
आससेण-वसुहाहिवइ निय-सुहि-सयण-समेउ ।
चिंतइ पसरिय-हरिस-भरु विलसिर-गरुय-विवेउ ॥

[७१७]

अहह धीरिहिं सुकुल-उप्पत्ति

अच्चब्भुय-रूव-सिरि जीवियव्वु उवसग्ग-वज्जिउ ।
पंडिच्चु जयब्भहिउ विउल-भोग-धणु स-भुय-अज्जिउ ॥
रज्जु जयस्स चमक्क-यरु कित्ति परक्कम-सार ।
लब्भइ धम्म-वसिण भुवणि विलसिर-गुरु-वित्थार ॥

७१६. १. कुमंमि; २. क. ख. सुरुतरु.

[७१८]

इय-विचिंतिरु गरुय-चउयरिण

कारेवि वद्धावणउं नियं-पुरम्मि सयलम्मि निवइण ।
निय-रज्जि निवेसिउण कुमर-रयणु पसरंत-रिद्धिण ॥
अणुजाणाविवि सुहि-सयण गुरुयण-भत्ति करेवि ।
चारय-बंध विमोइउण जिणवर सक्कारेवि ॥

[७१९]

कसु वि तारिस-गुरुहु पय-मूलि

वहु-नरवइ-सुय-सहिउ स-दइओ वि विस्संभराहिवु ।
निसुणेविणु धम्म-कह हियइ धरिवि जिण-वयणु कय-सिवु ॥
संसारिय-सुह-विरय-मणु पडिवज्जिवि चारित्तु ।
आससेणु सो राय-रिसि सु-गइहिँ गयउ पवित्तु ॥

[७२०]

काल-जोगिण पुण सउण्णेहिँ

भरहेसर-चक्कवइ- विहिण सुहिण छक्खंड-वसुमइ
उवसाहिय अणुकमिण वरिस-सहस-कालम्मि अइगइ ॥
वहुविह-समर-वसुंधरहं पसरिय-कित्ति-लएण ।
सणतुकुमारिण स-भुय-वल- पाविय-अब्भुदएण ॥

[७२१]

अह सुनंदा-नाम-थी-रयण-

पमुहाण जयब्भहिय- पिययमाण चउसट्ठि-सहसहं
अच्चब्भुय-भुय-वलहं नरवईण वत्तीस-सहसहं ॥
सिंधुर-तुरय-रहाहं पिहु पिहु चउरासी लक्ख ।
नव निहि चउदह रयण मण-इच्छिय-वियरण-दक्ख ॥

---

७२१. ६. क. सहंसहं.

[७२२]

सुइर-सचिय-सुकय-जोगेण

इयरो वि भरहाहिवइ- उचिउ विहउ अइरिण समज्जिवि ।
संपत्तउ नियं-नयरि किति-दइय दह-दिहि विसज्जिवि ॥
एत्थंतरि सोहम्मिइण सुर-राइण साणंदु ।
दिट्ठ तहाविह-सिरि-सुहउ सणतुकुमारु नरिंदु ॥

[७२३]

तयणु सायरु भणिउ वेसमणु

मह वयणिण भद्द लहु पुरउ गंतु सहदेवि-तणयह ।
चक्किकस्सु चउत्थयह सोल-सहस-वर-जक्ख-पणयह ॥
सणतुकुमारह एहु मह कोसल्लिउ वियरेज्ज ।
तह तुहुं तसु चक्काहिवइ- रज्जहिसेउ करेज्ज ॥

[७२४]

ता कयत्थउ अप्पु मन्नंतु

आयसिण नियं-पहुहु तुरिउ तुरिउ सहरिसु नमिप्पिणु ।
सीहासण-छत्त-वर- मउड-हार-रयणाइं वेप्पिणु ॥
कुंडल-चामर-पाउयहं जुयलइं तह वर-माल ।
पायवीढ-रयणिण सहिय विलसिर-सिरिहि वम्वाल ॥

[७२५]

गंतु गयउर-नयरि कुरु-वंस-

जस-कलसह पय-पुरउ विणय-नमिरु वेसमणु जंपइ ।
सोहम्मिय-सुर-वरिण पेसिउ म्हि तुह पुरउ संपइ ॥
तह कोसल्लिउ दिव्वु एहु पेसिउ तुम्हहं जोग्गु ।
काराविउ पुणु चक्कवइ- रज्जहिसेउ उदग्गु ॥

---

७२४. ७. वणमाल.

[७२६]

जेण पच्छिम-जम्मि किल जत्थ

सुर-मंदिरि आसि तुहुं गरुय-रिद्धि-वित्थरु पुरंदरु ।
सोहम्मि तहिं पि इहु हुयउ एण्हि सुर-नियर-सुंदरु ॥
इय तुह गुरु-बंधव-मइहिं कारावइ पडिवत्ति ।
तह मह मुहिण महायरिण तुम्ह पयासइ भत्ति ॥

[७२७]

इय सुणेविणु चक्कि परिओस-

वियसंत-वयणंबुरुहु कोसलीउ सयलु वि पडिच्छइ ।
वेसमणह पुणु पवरु स-सविहम्मि आसणु पयच्छइ ॥
एत्थंतरि सुरु वेसमणु अभिओगिय-तियसेहिं ।
जोयण-महिहिं समुद्धरिय- रय-कयवर-तणएहिं ॥

[७२८]

वइर-मरगय-पुलय-वेरुलिय-

ससि-सूरकंत-प्पमुह पंच-वन्न-रयणिहिं विणिम्मिउ ।
निय-किरणिहिं अवहरिय- तिमिरु रयण-पेढउं कराविउ ।
तदुवरि निरुवम-निय-महिम- निज्जिय-तियस-विमाणु ।
अहिसेयहं मंडवु विहिउ तिहुयण-सिरिहि निहाणु ॥

[७२९]

तस्सु अंतरि पुव्व-दिसि-समुहु

सीहासणु संठविवि पायवीढु तहि पुरउ ठाविवि ।
सु-मुहुत्तिण नर-रयणु पणय-पुव्वु आसणि निवेसिवि ॥
अह खीरोय-महोयहिहि मणि-कंचण-कलसेहिं ।
आणेविवि निम्मलु सलिलु अभिओगिय-तियसेहिं ॥

---

७२७. २. क. °णंबुरुहुं. ५. क. ख. सविहिंमि.

[७३०]

तयणु मागह-गग-वरदाम-

पमुहुत्तिम-तित्थ-जल कुसुम-गंध-ओसहि गहेविणु ।
जय जय चिरु नर-रयण महियलि त्ति पुणु पुणु भणेविणु ॥
विज्जाहर-नर-सुर-गणिहिं मंगलि पयडिज्जंति ।
मग्गण-सयण-किमिच्छियहं इच्छिइ वियरिज्जंति ॥

[७३१]

पडह-मद्दल-तिलिम-ढक्काहिं

कंसालय-ताल-वर वंस-वेणि-काहलिय-वुक्कहिं ।
वज्जंतिहिं पडु-रविण करडि-भंभ-भेरिय-हुडुक्कहिं ॥
नट्टारंभि पयट्टियहिं तहिं आगंतु खणेण ।
रंभ-तिलोत्तिम-उव्वसिहिं सुर-सामिहि वयणेण ॥

[७३२]

अइ-महंतिण विहव-जोएण

चक्काहिव-रज्ज-अहिसेय-महिम वेसमणु विरइवि ।
उवसाहइ सुरवइहि पुरउ पुव्व-वुत्तंतु सयलु वि ॥
सणतुकुमारु वि नर-रयणु पाविय-चक्कवइत्तु ।
उवभुंजइ छक्खंड महि असम-सुहामय-सित्तु ॥

[७३३]

अवर-वासरि स-परिवारस्सु

सोयामिणि-नाडयह रंग-मज्झि सहरिसुवविट्ठह ।
कय-भूसण-सयल-तणु तियसु एगु ईसाण-कप्पह ॥
नियय-पहा-पसरुवहसिय- सेस-तियस-तणु-कंति ।
कज्ज-वसिण संपत्तु सुर- सामिहि सविहम्मि त्ति ॥

[७३४]

अह सुरिंदिण विहिय-सक्कारु

परिसाहिय-कज्ज-विहि नियय-ठाणि सो तियसु पत्तउ ।
स-वियक्कु सोहम्मिइहि सुरिहि तयणु तियसिंदु वुत्तउ ॥
जह पहु एइण सुरवरिण पसरिय-तेय-भराहं ।
निय-तणु कंतिण पह हरिय सव्वेसिं पि सुराहं ॥

[७३५]

तयणु पभणिउ तियस-नाहेण

नणु एइण पुव्व-भवि विउल-भाव-सुद्धिण पचित्तिण ।
संचिण्णु आयंबिलय- वद्धमाणु तवु एग-चित्तिण ॥
इय तव-तेइण तेण इहु असरिस-कंति-कलावु ।
हुयउ तियसु ईसाण- सुर-पहु-सम-सिरि-सब्भावु ॥

[७३६]

पुण वि पणमिवि भणिउ तियसेहिं

पहु पसिय कहेसु नणु भुवण-मज्झि किं कसु वि अन्नह ।
एयारिस-तेय-सिरि अत्थि एत्थ चिर-चिन्न-पुन्नह ॥
ईसि हसेविणु सुर-वइण तयणु भणिउ — नणु हंत ।
एयह पुण्णइं काइं क व तेय-स्सिरि विलसंत ॥

[७३७]

का व अवरह ति-जय-रंगम्मि

विलसंतह खयर-सुर- असुर-पहुहु सयलह वि मिलियह ।
पुव्वज्जिय-तव-सिरि व देह-पह व जा मणुय-मित्तह ॥
आससेण-कुल-कमल-सर- मंडण-कलहंसस्सु ।
सणतुकुमार-नराहिवह ससहर-विमल-जसस्सु ॥

---

७३६. ६. क. चित्त. ८. क. कांइं.

७३७. ७. संइसा. ९. क. ससह.

[७३८]

एत्थ-अंतरि तियस-पहु-सहह
मज्झम्मि वि सुर-कुमर   दोण्णि किंचि संजाय-मच्छर।
नणु माणव-मेत्तयह   इहु घडेइ कह इय विचिंतिर ॥
तियसराय-वयण-स्सवण-   समणंतरु पसरंत।
कुणहिं संक पत्थुय-विसइ   तयणंतरु तूरंत ॥

[७३९]

तियस-सत्तिण वड्डय-रूवेण
सिरि-गयउर-नयरि लहु   पत्त तयणु दोवार-पालिण।
संभालिय दो वि तसु   चक्कवइहि ते अइर-कालिण ॥
तयणु पवेसाविय लहु वि   जवणिय-अंतरिएण।
तक्खणु सणतुकुमारिण वि   कारिय-मज्जणएण ॥

[७४०]

भणिउ — साहह केण कज्जेण
इह आगय तुब्भि अह   भणहिं हरिस-वियसंत-लोयण
लहु जवणिय-अंतरिण   दिट्ठ-चलण-अंगुट्ठ वंभण ॥
जह — पहु तुह रूव-स्सिरिहि अवलोयण-कज्जेण।
दूरह आगय अम्हि अह   जंपिउ चक्कहरेण ॥

[७४१]

एहु जइ ता तुम्हि अवरण्हि
आगच्छह मह पुरउ   दो वि भद्द अत्थाण-मंडवि।
जिह पेच्छह मइं विहिय-   सव्व-अंग-सिंगारु पुणरवि ॥
इय चक्काहिव-भासियउं   सुणिवि तियस ते ताव।
गमहिं कहिं चि वि चक्कवइ सहहं वईसइ जाव ॥

---

७३८. १. क. पहह.
७४१. ४. क. मइ; ५. क. पुणुरवि; ८. क. गमइहिं.

[७४२]

अह पढंतिण वंदि-विंदेण

गायंतिहिं गायणिहिं नच्चिरेहिं नड-नट्ट-जल्लिहिं ।
किज्जंतिहिं मंगलिहिं अकय-सुकय-जण-हियय-सल्लिहिं ॥
मग्गण-सयहं मणिच्छियइ वियरिज्जंतइ दाणि ।
चक्क-प्पहुहु नियट्टियइ इय मज्जणय-विहाणि ॥

[७४३]

संख-सद्दिण मुणिय-मज्झण्ह-

भंकारि भेरि-रविण वार-तरुणि-कहियम्मि अवसरि ।
वीसंतइ तूर-रवि सेवगम्मि गच्छंति निय-घरि ॥
नच्चणि-नड-नट्टारइहिं निय-निय-ठाण-गएहिं ।
सयलेहि य अहिगारिइहिं खेय-विणोय-रएहिं ॥

[७४४]

लहु मिलंतिहिं धावमाणेहिं

पडिसवणिय-माणविहिं वज्जिरेहिं अवसरिय-संखिहिं ।
परिसोहिज्जंतियहिं अतिहि-सत्तसालहिं असंखिहिं ॥
अग्गासणियग-वंभणिहिं सज्जीकिज्जंतेहिं ।
किविणाणाह-वणीमगहं भत्तिहिं दिज्जंतेहिं ॥

[७४५]

वार-तरुणिहिं सारविज्जंति

निव-भोयण-वेइयए वेज्ज-मंत-वाइएहिं पहुत्तिहिं ।
भुंजय-जणि आगयइ वइसदेव-आहुइहिं हुंतिहिं ॥
तुरिउ चकोरय-पंजरिहिं संचारिज्जंतेहिं ।
वायस-पिंडिहिं तरु-सिहर- फलगि खिविज्जंतेहिं ॥

---

७४२. २. क. गातिहि.; ४. क. किज्जंतिहि. ९. इमय.
७४४ २. क. माणविहि. ९. क. भत्तिहि. ख. भात्तहिं.

[७४६]

साालि-सिहरिणि-सूव-पक्कन्न
महु-सप्पि-तीमण-दहिय-	दुद्ध-पउर-पाणय सु-वंजण ।
लहु महुर-कसाय-कडु-	तित्त-लवण-हिय भुवण-रंजण ॥
निवइ-निउत्तय-माणविहिं	रसवइ सुह-सय-लंभ ।
निप्फाइय अइरिण-जणिय-	वुड्ढि-धाउ-संदब्भ ॥

[७४७]

तयणु सक्कर-दक्ख-खज्जूर-
अक्खोड-दाडिम-कलम-	सालि-दालि-वंजण-सुसक्किय ।
घय-उण्ह लवण-सिसरिय	सुहि-सेव-मोयग-मुरुक्किय ॥
वर सुकुमारिय सक्कुलिय	मंडिय भुइहुडिया य ।
वेज्ज-विहिण भुंजय-जुइण	चक्कवइण भुत्ता य ॥

[७४८]

अह लवंगय-एल-घणसार-
जंबीरिय-जाइफल-	तय-तमाल-दल-जाइवत्तिय ।
कक्कोलय-पूगिफल-	नागवल्लि-कप्पूर-वत्तिय ॥
जहरिहु वियरिय सेवयहं	नमिरुत्तिम-अंगाहं ।
तयणंतरु तिण गहिय-रस	इय -सयलहं भोगाहं ॥

[७४९]

तयणु मिगमय-परिमलुग्गार-
हरियंदण-घुसिण-सिरिखंड-अगुरु-कप्पूर-पंकिण ।
सयवत्ति-चंपय-करुणि-	जाइ-कुसुम-दल-परिमलंकिण ॥
सुकय-विवाग-सहस्स-भवु करिवि विलेवणु अंगि ।
ओलग्गाविवि आहरण सुर-विइण्ण सव्वंगि ॥

---

७४७. १. क. सक्क.

[७५०]

अह सहाविय-कंति-पब्भार-

अवहत्थिय-सुर-असुर- ताराालि-ससहर-दिवायरु ।
निम्माणय-कम्म-कय- संधि-बंधस-व्वंग-सुंदरु ॥
कय-असरिस-सिंगार-विहि परिहिय-देव-दुगुल्लु ।
बंदि-विंद-उग्घुट्ठ-जसु निय-परियण-सोहिल्लु ॥

[७५१]

सव्व-अवसरि विउल-अत्थाण-

वर-मंडवि उवविसिवि निय-निउत्त-पुरिसेहिं स-हरिसु ।
सद्दावइ चक्कवइ वड्डय ते वि तहिं एंति असरिसु ॥
हरिसु वहंता निय-मणिण किं पुण चक्कवइम्मि ।
सच्चवियम्मि विसेसयर विरइय-सिंगारम्मि ॥

[७५२]

अहह धिसि धिसि वि-रसु संसारु

जमिमस्सु वि नरवरह एत्तिए वि अंतरि इमेरिस ।
संजायइ विसम दस जणिय-सुयण-सुहि-ताव-पगरिस ॥
इय परिचिंतिर तियस दु-वि लहु विहलिय-मुह-छाय ।
भणिय नरिंदिण – तुम्हि किह दीसह हय-मुह-राय ॥

[७५३]

अह पयंपहिं तियस – चक्किकह

किं न नियहि निययं-तणु जमिह अत्थि जो कंति-वित्थरु ।
तह मज्जण-कालि तु न पुणिहं नयणु सहस त्ति नरवरु ॥
तणु किं एइ भणंति इय चिंतिउ निय-तणु जाव ।
नियइ निरिक्खइ ससि-रस्सिण ओहल्लियं पि न ताव ॥

७५३. १. क. तियस खि. २. निरिक्खि.

[७५४]

तयणु तक्खणु मणु सम्मुक्खिविवि

छक्खंड-खोणीयलहं　　नवहं निहिहिं चउदहहं रयणहं ।
बत्तीस-सहसहं गरुय-　मउड-बद्ध-नरवइहिं अणहहं ॥
जक्खहं सोलस-सहस-परिसंखहं आण-कराहं ।
चउसट्ठि य सहसहं सुकुल-　विलयहं भत्ति-पराहं ॥

[७५५]

अ-थिरु जोव्वणु धणु अ-साहीणु

सुहि-सयणु स-अत्थ-रुइ　सलिल-विंदु-चंचलु सरीरु वि ।
इय दुहयरि भव-गहणि　रमइ किह णु इह पुरिसु धीरु वि ॥
इय चिंतिरु उव्विग्ग-मणु गहिउ-कामु चारित्तु ।
सणतुकुमारु समुल्लवइ　भव-कंतार-विरत्तु ॥

[७५६]

अहह अहमिह भइ तुम्हेहिं

नित्थारिउ भवु जत्तिहिं वितह-रूव-अहिमाण-पत्थउ ।
बुड्डंतु महन्नवहं　मज्झि देवि निय दो-वि हत्थ उ ॥
तयणु तियस वज्जरहिं मणु चक्क-प्पहुहु सुणेवि ।
धन्नु महायस तुहुं जि पर जो एत्तियमेत्ते वि ॥

[७५७]

विलिय-कारणि चइवि चक्कित्तु

चारित्त-गहणूसुयउ　　हुयउ जमिह तुह अज्ज दुज्जय ।
संकंत य संति तणु-　मज्झि रोग ओसह-अ-सज्झय ॥
नणु कह जाणह तुब्भि इय चक्कवइण पुट्ठम्मि ।
पयडिय-रूविहि सुरिहि सुरपहु-वइयरि सिट्ठम्मि ॥

---

७५४. ३. क. चउदयहं.

७५५. ५. क. वीरु.

[७५८]

अहह धिसि धिसि कम्म-परिणामु

कु-वि दारुणु भुवणह वि   अइव तुच्छ संपय समग्ग वि ।
चलु परियणु मणु अथिरु   सरय-अब्भ-सम दइय-संग वि ॥
तणु पुणु एहु अणत्थ-फलु   सयलासुइहि निहाणु ।
अ-वुह-जणिय-पडिकम्म-विहि   वितह-रूव-अभिमाणु ॥

[७५९]

जमिह एयह पढम-उप्पत्ति-

हेऊ वि विवेइ-जण-   गरहणिज्जु उव्वेय-कारणु ।
पगईए वि निग्गुणउं   नवहिं असुइ-विवरिहिं दुहावणु ॥
कप्पूरागरु-मिगमयहं   वहु-भोगुवभोगाहं ।
एहु सरीरु विणास-यरु   दुह-यरु निस्संगाहं ॥

[७६०]

सुक्क-सोणिय-रुहिर-वस-मंस-

मज्जासुइ-पूइ-रस-   मुत्त-अंत-पित्त-प्पलाविउ ।
नव-छिद्दु मलाविलउं   विहिण असुइ-दलिएहि घडाविउ ॥
इय जह जह परिचिंतियइ   तणुहु सुइत्तणु किंपि ।
तह तह दीसइ असुइमउ   सयलु वि विवुहेहिं पि ॥

[७६१]

जाव अज्ज वि सयण साहीण

जा लच्छि न परिहरइ   जाव भियग वट्टंति वस-गय ।
जा पिययम पिय-करिय   जाव आण खंडहिं न अंगय ॥
जाव न जायइ विहुर-यरु   तणु परिणाम-असारु ।
ता क-वि किज्जउ धम्म-विहि   पर-भव-कय-साहारु ॥

[७६२]

इय विचिंतिरु मेरु-थिर-चित्तु
कुरु-वंसह जस-कलसु आससेण-नरनाह-नंदणु ।
उज्झेविणु धण-रयण- सयण-सुहड-करि-तुरय-संदणु ॥
बहु-वित्थरिण पहाविउण जिण-वर-तित्थु पवित्तु ।
उसहदत्त-सूरिहि पुरउ पडिवज्जइ चारि ॥

[७६३]

अहह नरवर चरिउ अणुसरिउ
तइं भरह-नराहिवह वसुह सयल लीलइं चइंतिण ।
आराहिउ जिणवरहं गुरुहुं वयणु इय उज्जमंतिण ॥
इय उववूहिर पय नमिर सणतुकुमार-मुणिस्सु ।
तियस गंतु वइयरु सयलु साहइं तियसिंदस्सु ॥

[७६४]

किं तु सज्जण तें जिं ति जि दइय
ति जि नरवर ते ज्जि सुहि ति ज्जि तणय ति जि नियं-सहोयर ।
ति ज़ि संदण ति ज्जि भड ति जि तुरंग ति जि गंध-सिंधुर ॥
ते ज्जि चउद्दह रयण ति जि जक्खहं सोल सहस्स ।
पुट्ठि न छड्डहिं निय-पहुहु सणतुकुमार-मुणिस्स ॥

[७६५]

अहह सामिय पणय-कारुणिय
विलवंतउ भिच्च-यणु सयलु एहु किह किह वि उज्झसि ।
परिवालसु कित्तिय वि दियह वलिवि एमेव सुज्झसि ॥
पुव्वि पि हु भरहाहिवह उसह-जिणिंद-सुयस्सु ।
जायउं केवल-नाण-धणु निय-पय-पालंतस्सु ॥

---

७६२. २. क. कुरव सह.

७६४. ६ क. ति जि चउ°

[७६६]

कह व भुय-बल-दलिय-रिउ-कुलह

तुह नाह विरहिण भुवणु विविह-खुद्द-विद्दविउ हविहइ ।
कु व अ-सरणु विलविरह एण्हि तरसु उवयारु करिहइ ॥
इय विलवंत परिब्भमिय सयल ति जा छम्मास ।
विगय-त्ताण अणाह परिमिल्लिर-गुरु-नीसास ॥

[७६७]

राय-रिसिण वि तियस-गिरि-सिहर-

थिर-चित्तिण सीह-अवलोइएण वि हु ति न निरिक्खिय ।
तयणंतरु निय-नियय- ठाणि पत्त अच्चंत-दुक्खिय ॥
राय-रिसी वि हु पुव्व-कय- भोग-हलिय-कम्मंति ।
एगागी उज्जय-हियउ चरणि जणिय-जम्मंति ॥

[७६८]

विहिय-छट्ठह तवह पज्जंति

गुरु-वयणिण अन्नयरि ठाणि गंतु विहरंतु मह-रिसि ।
पुव्वज्जिय-असुह-निय- कम्म-सेस-उदयम्मि असरिसि ॥
गोयर-चरियहं परिभमिरु कत्थ वि भवणि लहेइ ।
छेलिय-तक्किण उल्लियउ वीणाउरु भुंजेइ ॥

[७६९]

तयणु वेयण सीसि तणु-दाहु

उक्कोउ पुणु लोयणहं कुच्छि-सूलु पाउम्मि अरिसय ।
वच्छ-त्थलि तोडु करि कंपु पाय-मूलेसु रप्फय ॥
पुट्ठि जलोयरु कंधरहं गंड-माल खय-काल ।
पाउब्भुय सव्वंगि पुणु कुट्ठ-व्वाहि कराल ॥

---

७६७. ७. क. कंमंति.

[७७०]

इय दुरंतिहिँ जीय-पज्जंत-
समयावह-दुहयरिहिँ हुयहिँ बहुहिँ अन्निहिँ वि वाहिहिँ ।
सयलस्सु वि भुवण-यल- जणहु जणिय-गुरु-हियय-दाहिहिँ ॥
सुरगिरि-चूल व अविचलिर- माणसु सणतुकुमारु ।
चिट्ठइ अहियासंतु निरु सुमरंतउ नवकारु ॥

[७७१]

अह निरिक्खिय सु-मुणि-चरिएण
अइ-विम्हिय-माणसिण भणिउ सहहं सोहम्म-इंदिण ।
जह – पेक्खहु सुर-गणहु चरिउ चक्क-पहु-मुणिहि भाविणं॥
जो छट्ठट्ठ-दुवालसम- पमुह-तविण विविहेण ।
सोसइ धम्म-सरीरु भव- भावुव्विग्ग-मणेण ॥

[७७२]

न उण वाहिहिँ विहुर-जय-जंतु-
ववरोवण-कारिहिँ वि बहु-विहाहिँ पीडिज्जमाणु वि ।
सिक्कारु वि मुयइ न य उवयरेइ तणु भण्णमाणु वि ॥
भुवणस्सु वि सारीरिइहिँ वाहि-विसेस-हराहिँ ।
उप्पन्नाहिँ वि ओसहिहिँ आमोसहि-पमुहाहिँ ॥

[७७३]

इय भणंतह तियसनाहस्सु
मणि विम्हिय सयल सह गुण सुणेइ तसु नित्र-मुणिंदह ।
भुवणुत्तर-सुचरियह आससेण-कुल-गयण-चंदह ॥
किं पुण ति जि पुव्वुत्त सुर दो-वि अ-सद्दहमाण ।
आगय राय-रिसिहि पुरउ वेज्ज-रूवु धरमाण ॥

[७७४]

खसुहु खासह जरह अरुईए

कर-कंपह रप्फयहं गंडमाल-वाहीए सोसह ।
अरईए भगंदरह सूल-रुजह अन्नह वि दोसह ॥
विहिउ त्रिगिच्छ खणद्धिण त्रि करहुं देहु निरवज्जु ।
एहु सु-त्रिणिच्छिवि मुणि-वसह अम्ह वयणु पडिवज्जु ॥

[७७५]

इय पयंपिर तियस पुणुरुत्तु

पक्खंतरि परिभमिर भणिय साहु-वसहिण ति – साहह ।
किं वाहिर रोग अह अंतरा वि तुब्भे विसोहह ॥
ता स-त्रियक्किय भणहिं सुर – नणु मुणि वाहिर रोग ।
फेडिवि अम्हि करहुं खणिण सयलि वि सज्जा लोग ॥

[७७६]

तयणु दाहिण-करिण परिमुसिवि

निय-वामह करह नव- तरणि-किरण-दिप्पंत अंगुलि ।
उवदंसिवि तहं सुरहं पुरउ भणिउ मह-रिसिण – नणु सलि ॥
मह अंतर-रोगहं तणी एहि पुणु केत्तिय-मेत्तु ।
किं तु सहेवा पच्छइ वि अज्जु ति सहउं निरुत्तु ॥

[७७७]

अह – महा-मुणि नूण जइ तुहुं जि

इह-अंतर-रोग-हरु इय भणंत चलणेसु निवडिवि ।
दु-वि साहहिं तियस सुर- पहु-पसंस अप्पाणु पयडिवि ॥
सणतुकुमार-महारिसिहि आसिव्वाउ वहेगि ।
सुर घरि गंतु सुर-प्पहुहु तव्वुत्तंतु कहेवि ॥

---

७७५. ६. तो.

[७७८]

वपु रि धीरिम कट रि सरलत्तु

अरि उवसमु हुंहुं वयण- मण-निरोहु निउंछणउं खंतिहिं ।
वलिकिज्जहुं संजमह तवह तह य तसु इ-कंतिहिं ॥
इय पुणु पुणरवि सुर-सहहं दु-त्ति ति तियस जपंत ।
सणतुकुमार-महारिसिहिं चिट्ठहिं गुण गायंत ॥

[७७९]

राय-रिसि वि हु निय-गहीरत्त-

अवहत्थिय-दुध्दुयहि सयल-रोग निरु सम्म-करणिण ।
अहियासइ जिणवरिण भणिय-विहिण भावइ य हियइण ॥
एंतु खलिज्जइ जलनिहि वि लहरि-भिन्न-कुलसेलु ।
न उ पुव्वज्जिय-असुह-निय-कम्म-विवागह मेलु ॥

[७८०]

जिय अयाणुय विहिउ सयमेव

तइं पच्छिम-जम्मि इहु पावु कम्म-पब्भारु गरुयउ ।
तिण दुक्कहिं एउ तुह दुसह दुक्ख-दंदोलि बहुयउ ॥
नासंतिहिं वि न छुट्टियइ निय-दुक्कय-कम्माहं ।
ता वलिकिज्जहुं हउं रिउहुं समइ समुहु पत्ताहं ॥

[७८१]

इय पमाइण राग-दोसेहिं

मिच्छत्तिण अविरइहिं विहिउ जमिह हय-मोह-घत्थिण ।
तसु पाव-महद्दुमह फलइं लेसु जिय तुहुं स-हत्थिण ॥
नहि लब्भंतइ स-कय-फलि पुरिस परम्मुह हुंति ।
सह-धाविर निय-छाय नहि के-वि हु छड्डिवि जंति ॥

७७८. ५. क. कंतिहि.

७८०. २. क. ख. जंमि. ३. पाव. ४. दुक्कइ.

७८१. ५. क. सुहुं; ख. हु.तु

[७८२]

इय विचिंतिरु चरणु अणुचरिवि
अहियासिवि पुव्व-निय- कम्म-जणिय-गुरु-वाहि-वेयण ।
परिसीलिवि सयल-जिण- कहिय किरिय चिर-पाव-भेयण ॥
उसह-भरह-पमुहुत्तिमहं पुरिसह[६] चरिय सरंतु ।
जिणवर-वयण-महोसहइं निच्चु वि हियइ धरंतु ॥

[७८३]

सुहिण कुमरहं भावि मंडलिय-
निव-रज्जि वि अइगमिवि वरिस-सहस पन्नास पिहु पिहु ।
चक्कित्ति समणत्तणि वि लक्खु लक्खु इय सव्वओ वि हु ॥
परिवालेवि अहक्कमिण तिण्णि वरिस-लक्खाइं ।
आउय-अंति खविवि असुह- कम्म-रोग-दुक्खाइं ॥

[७८४]

समय-नीइण गंतु सम्मेय-
गिरि-रायह सिहर-तलि मासिएण तव-कम्म-जोगिण ।
निय-पावइं विहडिउण विहिय-सुद्धि निम्मल-विवेगिण ॥
सणतुकुमार-सुरालयइ गयउ सु सणतुकुमारु ।
मह-रिसि गुरु-गुण-रत्त-मणु पाविय-जीविय-सारु ॥

[७८५]

तत्थ महरिह-विसय-सुक्खाइं
सुरनाह-सामाणियहं सुरहं उचिय चिर-कालु सेविवि ।
कम-जोगिण पुणु तउ वि निय-ठिईए पज्जंतु पाविवि ॥
होउ विदेहि निवंगरुहु सेविय-चरणायारु ।
सुगहिय-नामु सु सिज्झिहइ खविय-पाव-पब्भारु ॥

---

७८३. १. क. सु and कु mixed in कुमरहं.
७८४. ७. क. सु missing.

[७८६]

इय निरंतरु मणिण जिणचंद-

मुणिनाह-सीसुत्तिमह सुयण-सुहय-गुण-रयण-भूरिहि ।

सुमरंतिण अणुदिणु वि नाम-मंतु सिरिचंद-सूरिहि ॥

सिरि-हरिभद्द-मुणीसरिण विरइउ लेसिण एहु ।

सणतुकुमार-नराहिवह चरिउ सुकय-कुल-गेहु ॥

इति श्रीश्रीचंद्रसूरि-क्रम-कमल-भसल-

श्रीहरिभद्रसूरि-विरचित-श्रीमदरिष्टनेमि-चरिते

श्रीसनत्कुमारचक्राधिराज-चरितं समाप्तमिति* ॥

* * *

---

* ॐ. मंगलं महा श्रीः ॥

सनत्कुमारचरित

गुजराती भाषांतर

मलयाचलनां वनो जेनो केशपाश छे; उत्तुंग मेरुशिखर रूपी उत्तमांग (=मस्तक)थी जे पंकायेली छे; चंद्र ने सूर्य जेनां लोचन छे; तारकश्रेणि जेनी श्वेत दंतपंक्ति छे; गिरिराज हिमालय अने विंध्य जेनुं कठिन अने स्थूळ स्तनयुगल छे; कालिंदी नदीनो जलसमूह जेनी रोमावलि छे; स्वर्गंगाना पुलिन जेनां जघन छे; सागर जेनुं अंबर छे—

एवी पृथ्वीवधूने मंडित करतो, पोताना मंदराचळ वडे बाकीना बधा द्वीपोनां माहात्म्यना झळहळाटने खंडित करतो, हजारो पहाडो नगरो खाणो गामो नदीओ अने देशोथी समृद्ध एवो महान जंबूद्वीप छे. ए जंबूद्वीपमां प्रसिद्ध भरतक्षेत्रमां—ज्यां, रात्रे चंद्रोदय थतां घरनी भींत परनां चित्रोमांनी तरुणीओ, जगद्-वल्लभ सूर्यनो अस्त थतो जाणीने भारथी द्रवित थता चित्त वाळी, चंद्रकांत मणिमांथी स्फुरतां जळप्रवाहथी भराई आवेली आंखो वाळी, जाणे के भरपूर दुःख प्रसरवाथी कंठमार्ग भराई आव्यो होय तेम, सूर्यना विरहे रडी रही छे;

ज्यां, गिरिराज समा ऊंचा गजराजोना गंडस्थलमांथी गळता मदजळथी भोंय छंटाती होवाने लीधे, अने राजसमूहनां श्वेत छत्ररत्नो वडे (सूर्यना) तीक्ष्ण किरणोनुं निवारण थतुं होवाने लीधे सौ लोको (जेमने मनमानी वस्तु आपवामां दक्ष एवा राजवीओए संतुष्ट कर्या छे), ग्रीष्मऋतुमां पण वर्षाऋतुने संभारतां नथी—

एवा ए भरतक्षेत्रमां, जेम मुक्तारत्न स-गुण (=दोरा सहित), कोटना (=गळाना) अलंकारमां रहेलुं, सुनिवेश (सुंदर स्थाने स्थापित) होवाथी आनंददायक, रत्नाकर(=समुद्र)रूपी असामान्य वंशमां जन्मेलुं, अति पवित्र, पाणीदार, सज्जनना हृदय उपर विराजेलुं अने हाथीने पीडाकारक होय छे, तेम तेना जेवुं हस्तिनापुर नगर हतुं, जे गुणवाळुं, गढरूपी अलंकारथी युक्त, सुंदर घरोने लीधे आनंददायक, असामान्य अने उत्तम वंशोनुं उद्भवस्थान, अतिपवित्र, सारा वेपारीओथी युक्त, सज्जनोनुं मन हरनारुं, उपद्रवरहित अने अमरावतीना जेवा

सौंदर्यथी झळहळतुं हतुं; शत्रुओए (कदी पण) तेनी मर्यादानो भंग कर्यो न हतो. (४४४–४४८).

त्यां अश्वसेन नामे राजा हतो. ते 'सूर' (=१. सूर्य, शूर) होवा छतां संताप शमावनार हतो; बहु 'दान' वाळो होवा छतां 'मद' रहित हतो; 'गय-पिय' (=१. प्रिया रहित, २. हाथी जेने प्रिय छे तेवो) होवा छतां, पोतानी पत्नीनुं मन हरनारो हतो; 'दोषाकर' (=१. चंद्र, २. दोषसमूह)नुं खंडन करनारो होवा छतां कुमुदवनने सुंदर संतोष आपनारो हतो, धर्मबुद्धि वाळो होवा छतां 'परार्थ-रुचि' (=१. पारकाना द्रव्यनी रुचि वाळो, २. परमार्थ करवानी रुचि-वाळो) हतो, 'जलनिही' (=१. जलनिधि, २. जडतानुं धाम) न होवा छतां 'समुद्र' (=१. समुद्र, २. मुद्रायुक्त) हतो; बहु मानी होवा छतां अमानी (=निर-भिमान) हतो; 'सिव'नो (=१. पार्वतीनो, २. मांगल्यनो) संग तेने प्रिय होवा छतां ते 'रुद्र' (=१. शंकर, २. उग्र) न हतो. (४४९). ते उन्नत तेम ज नम्र हतो; 'विउस' (=१ दूषित, २. विद्वान) तेम ज अतिशय कुलीन हतो; अति समर्थ तेम ज क्षमाशील हतो; शीलवान तेम ज सुंदरतानुं धाम हतो; जगतना लोकोनी आंखोने सुखदायक, तेजना मोटा भंडार समो अने पृथ्वीमां साररूप हतो. (४५०).

सहदेवी एवा नामे जाणीती तेनी पटराणी हती : अनुपम रूप, लावण्य अने गुणो रूपी रत्नोना विषयमां ते रोहणाचळनी भोंय समी हती; कुंदकळी समी तेनी दंतपंक्ति हती; कुवलयनी पांखडी समुं तेनुं नयनयुगल हतुं; तेणे वदनथी कमळनी कांतिने पराजित करी हती; तेनी वाणी कलहंसी अने सारसी समी मधुर हती; शरदऋतुना चंद्र समो तेनो कीर्तिकलाप (बधे) प्रसर्यो हतो. जेवी शंकरने गौरी, मुरारि(=विष्णु)ने लक्ष्मी, चंद्रने तारा, देवराज इंद्रने उर्वशी, पांडवोने द्रौपदी, तथा कृष्णना पुत्र प्रद्युम्न (=कामदेव)ने रति अने दशरथपुत्र रामने सीता, तेवी गुणरत्नोथी समृद्ध ते तेनी मनमानीती हती. (४५१–४५२).

पूर्वभवना पुण्ये करीने पवित्र होईने, एक बीजा प्रत्ये असाधारण प्रेमथी अनुरक्त चित्त वाळां एवां तेमनो, धर्मने बाधा न पहोंचे ते रीते विषयसुख भोग-वतां, केटलोक काळ वीत्यो.

कोई एक अवसरे, सहदेवी रात्रे सुखशय्यामां सूती हती त्यारे तेणे स्वप्नमां, प्राणीओने सुखरूप, गुणवंत अने मनहर एवी नीचेनी वस्तुओ पोताना मुखमां प्रवेश करती जोई : हाथी, सिंह, वृषभ, अभिषेक, चंद्र, सूर्य, ध्वज, कळश, माळा,

कमळसरोवर, समुद्र, विमान, रत्नसमूह अने अग्नि. एटले गभरायेला मुखे एक-दम उठीने, विनयपूर्वक हाथ जोडीने, तेणे राजाने स्वप्नो कह्यां. (४५३–४५४). एटले शरदपूनमना चंद्रनो उदय थतां जेम समुद्र, मेघमाळा दृष्टिए पडतां जेम मोर, सूर्य ऊगतां जेम कमळसरोवर, कमळझूंड जोतां जेम राजहंसो, अने वसंत-उत्सवमां जेम आंबो, तेम जेनी शोभा द्विगुणित थई छे तेवो राजा, स्वप्नोथी सूचित सद्भाग्यनुं ज्ञान थतां, केमेय अने कयांये जाणे के समातो न हतो. (४५५). पछी पृथ्वी परना चंद्र रूप ते राजा, आनंदथी गद्गद वाणी वडे पोतानी प्रिया सहदेवीनी समक्ष बोल्यो, "देवी, देव, दानव अने मानव जेना चरणकमळने नमे छे तेवा जिनेश्वर जेवुं, नव निधि अने चौद उत्तम रत्नना स्वामी एवा चक्रवर्ती जेवुं, त्रण जगतने सुखकारक पुत्ररत्न तने प्राप्त थशे.' (४५६).

एटले जाणे के अमृतरसना कुंडमां डूबी होय, जाणे के चिंतामणि मळ्यो होय, जाणे के चक्रवर्तीनी राज्यरिद्धि पामी होय, जाणे के घरमां ज कल्पवृक्ष ऊग्युं होय, जाणे के तात्कालिक कोई उत्तम मंत्र सिद्ध थयो होय ते रीते हर्षथी विकसित मुखकमळ वाळी देवी मस्तक पर अंजलि रचीने संतोषथी वारंवार बोलवा लागी, 'एम ज हो.' (४५७).

ए प्रमाणे एक बीजाने आनंदपूर्वक धर्मनी अने धार्मिकोनी कथाओ कहीने ते बंनेए रात्रिनो बधो शेष भाग विताव्यो. पछी अरुणोदय थतां बंदीजनो राज-भवन पर आव्या. मंगळ वाजिंत्रना नाद साथे करताळ ऊंची करीने गंभीर अने हर्षयुक्त ध्वनिथी तेओ आ प्रमाणे बोलवा लाग्या, 'उदयाचळनी पासे आवी लाग्यो होवा छतां, दृष्टिगोचर न होवा छतां, पोतानो तीव्र प्रताप हजी प्रसार्यो न होवा छतां, गुणरत्नोनो समूह हजी वेर्यो न होवा छतां, कमळोने आनंद आपतो सूर्य, गर्भस्थ सत्पुरुषनी जेम, जगतमां प्रतिपक्षीओनुं तेज हरी ले छे, सौने संतुष्ट करे छे अने सज्जनोने हर्षथी प्लावित करे छे. (४५८–४५९). एटले देवीना स्वप्नने अनुरूप ज, जाणे के बंदीजनो भण्या एम अत्यंत हर्षपूर्वक चिंतवता राजाए, नियुक्त करेला अधिकारीओ द्वारा, बंदीओने घणुं तुष्टिदान अपाव्युं. ते पछी शय्या-मांथी ऊठीने हर्षथी विकसित मुखे राजाए सर्व प्रातःकर्म पताव्युं. (४६०).

पछी सुंदर शणगार सजीने, जेणे पोतानो दारसंग्रह सफळ कर्यो छे, अने आनंदथी स्फुरता रोमांच वडे जेनो देह शोभे छे तेवा, कुरुवंशना उत्तम आभूषणरूप ते

राजाए पोताना कर्मचारीओ पासे स्वप्नवेत्ताओने बोलाव्या, अने तेओ तरत ज आवी पहोंचतां, तेमने माटे आसन मंडाव्यां. (४६१). पछी विविध प्रकारे तेमनी आगता-स्वागता करीने राजाए ते स्वप्नविशारदोने देवीए जोयेलां स्वप्नो कह्यां. तेमणे पण पोताना स्वप्नशास्त्र प्रमाणे अर्थनिर्णय करीने कह्युं, 'आ शास्त्रमां स्वप्नो सामान्यतः बोंतेर कह्यां छे; तेमां पण त्रीश महास्वप्नोने लोकोए उत्तम गण्यां छे. तेमांये चौद स्वप्न अत्यंत प्रशस्त छे, अने तीर्थंकर तथा चक्रवर्तीना जन्मना संकेतरूप ए स्वप्नो पुण्यशाळी, धन्य अने भावि सद्‌गतिना सुख वाळी राजराणीओने आवे छे. तेमांथी पण राणीओना मुखकमळमां प्रविष्ट सात अने चार स्वप्न वासुदेव अने बळदेवनो जन्म सूचवे छे. पूर्वोक्त स्वप्नोमांथी बाकीनां एकएक स्वप्न जोईने राजा, प्रधान, सामंत, सार्थवाह, शेठ वगेरे पुरुषरत्नोने जन्म आपनारीओ जागी ऊठे छे. तो, हे स्वामी, तारी राणीए जे स्वप्नसमूह जोयो तेथी तमने आखा जगतथी चडि-यातो एवो कोईक विशिष्ट पुत्र थशे.' (४६२–४६४).

एटले 'ए बराबर' एम राजाए स्वप्नविशारदोना बधां वचन अभिनंदित करीने, पोताना कर्मचारीओ द्वारा पछी बधा स्वप्नपाठकोने पोतपोताने स्थाने पाछा जवानी रजा आपीने पोतानी प्रियाने विशेषरूपे स्वप्नपाठकोए कहेली स्वप्नोनी वात कही. (४६५). पछी राजानां वचन सांभळीने, देहलता संतोषामृतनी वर्षाथी सिंचाई होय तेम, देवी अतिशय रोमांच प्रगट करती हर्ष अने अनुनय साथे कहेवा लागी, 'देवनां अने गुरुनां चरणोनी कृपाथी मने एम ज थाओ, एम ज थाओ, जेथी हुं आ भवमां तेम ज परभवमां बधां सुखोनो आवास बनुं.' (४६६). ते पछी पुत्रनुं उत्तम रत्न समुं मुख जोवाना सुखनी तृष्णा वाळी देवीए अनेक देवोनी लाखो मानताओ मानी, जिने-श्वरनां चरणकमळने पूज्यां, गुरुजनोनां चरण आराध्यां, सेंकडो ओसड पीधां, पोताना गर्भना विघ्ननिवारण माटे अनेक रक्षाओ करी. पछी पृथ्वी परना चंद्र रूप राजाए आनंदपूर्वक जेनुं दोहद पूर्युं छे तेवी तेणे क्रमे क्रमे पूरा दिवसो विताव्या.

पछी ते देवीए, अत्यंत शुभ दिवसे, बधा दोषथी मुक्त एवा समये, बधा गुण अने लक्षणरूपी रत्नोना निधान, जेणे विधिओनुं विज्ञान प्रगट कर्युं छे तेवा, जगतने आनंदकारक पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. (४६७–४६८). एटले ब्राह्मणो अने बटुको वेद-पाठ करवा लाग्या, गायको गावा लाग्या, बंदीओने दान देवावा लाग्यां, मांग-लिक विधि थवा लाग्यो, अनेक वाजित्रना समूह वागवा लाग्या. राजाए पुत्रनुं 'सनत्कुमार' एवुं, धराधर सहितनी (=समग्र) धरतीना लोकोने माटे उत्तम–

सुखोना निधिरूप, नाम पाड्युं. (४६९). आथी राजाना हृदयमां प्रमोद थयो, देवीनुं मन आनंदित थयुं, पृथ्वी परना सज्जनोने घणो हर्ष थयो, बंदीलोकोने परितोष थयो, विद्वानो तुष्ट थया, दुर्जनो अत्यंत डरी गया. अथवा तो (कहोने के) कुमारना नामनुं श्रवण करीने समग्र धरती, भावी महान उदयथी अत्यंत हर्ष धरवा लागी. (४७०).

पर्वतनी कंदरामां सिंहकिशोरनी जेम जेनी गतिने कोई अवरोध नथी तेवो कुमार क्रमे क्रमे कीर्ति प्राप्त करतो, मित्रो अने स्वजनोने आनंदित करतो, दुर्जनोनां मनभंग करतो, आठ वर्षनो थयो. ते वीरोना हृदयने संतोष आपतो हतो, सुभटोनी वातो सांभळीने उल्लसित थतो हतो, उत्तम पुरुषोनां चरित्र सुणतो हतो अने विद्वानोनी सभामां ठरतो हतो. (४७१).

ते पछी राजाए मोटा उत्सव साथे मांगलिक दिवस अने मुहूर्त जोईने आनंदपूर्वक ते उत्तम कुमारने उपाध्यायनी पासे मूक्यो. एटले अति प्रसन्न चित्ते अनेक गुणोना आश्रयरूप एवा कलाचार्ये कुमारने थोडाक ज दिवसोमां समस्त कलासागरनी पार पहोंचाड्यो. (४७२). परिणामे, पूनमना चंद्रनी जेम पोतानी ज्योत्स्नाना व्यापथी जगतना अंतराळने भरी देनार, निर्मळ कलाओनो निलय, गंभीरतामां सागर, स्थिरतामां धरती, ऊंचाईमां हिमालय एवो कुमार सज्जनोथी सेवातो, बुद्धिमानोथी वखाणातो, आखा जगतमां पोताना गुणोए करीने प्रसिद्ध थयो. (४७३).

वळी तेनी साथे एक ज समये जन्मेलो, साथे ज धूळमां रमेलो, साथे ज जेणे गुणोनां रत्नाभूषण प्राप्त कर्यां छे तेवो, साथे ज कीर्तिमान बनेलो, साथे ज शत्रुओने परास्त करनारो, समसुखियो अने समदुखियो, समान रूपश्री धरावतो, सथोसाथ ज जुवान थयेलो, समानशील, तेनी जेम ज मित्रो अने सज्जनोने सुखदाता, साथे ज रमतगमतमां भळतो, शूर राजाना चरण सेवतो, कालिंदी देवीनो पुत्र, सज्जनोने सुंदर आनंद आपतो, बाल्यवयमां पण वृद्धसमो, पूर्वजो प्रत्येना आदरथी शोभतो, परस्त्रीनी कामनाथी रहित, एवो तेनो बालसखा, नाम प्रमाणे ज प्रकट स्वरूप धरावतो, महेन्द्रसिंह नामे हतो. (४७४–७५). ए प्रमाणे अतिशय लावण्यथी विलसता, भरजोबनथी थनगनता, प्रचंड शत्रुनुं खंडन करता, मित्रो ने स्वजनोने संतुष्ट करता, दुर्जनोनो ध्वंस करता, दृढ प्रतिज्ञा वाळा,

प्रौढ सुंदरीओना मानरूपी महान वृक्ष कापवामां कुठार समा, ते बंने राजकुमारो अत्यन्त गौरवथी पृथ्वीमां विहरवा लाग्या. (४७६).

आ रीते तेओ आनंदप्रमोद करता हता तेवामां कोई एक समये वसंतोत्सव आवी पहोंच्यो. ते समये विरहीजनोने अतिशय पीडता सहकार वृक्षो मोजथी मंजरीओनो शणगार सजवा लाग्यां. मलयानिलनी साथोसाथ प्रसरता भ्रमरोना घेरा गुंजारव परदेश जवाने आतुर एवा प्रवासीओने निवारवा लाग्या. (४७७). वृक्षटोचे बेठेली, आम्रमंजरीना भक्षणथी हर्षित बनेली कोयल मदनराजानो राज्याभिषेक थयानी घोषणा त्रिभुवनमां मधुर रवे करवा लागी. "पेलो अभागियो शिशिर ओ गयो–वसंतना दिवसो तेनो कोळियो करी गया !" एम, विकसित थयेला कुमुदरूपी मुख वडे कुमुदिनीरूपी तरुणोओ हसी ऊठी. (४७८). शीत आसव खूब पीधो होय तेम बकुलवृक्षोनुं झूंड घूणतुं हतुं; रतूमडी कान्ति धरता आंबाओ पण सोहामणा लागता हता–तेओ जाणे के अंदर न समातो 'राग' बहार उभरातो दर्शावता हता. तो तरुलता पवनना हळवा झोलाथी फरकता किसलयरूपी करोना अभिनय द्वारा, भ्रमरना गुंजारवरूपी गीत साथे लास्यनृत्य प्रकट करती हती. (४७९). जेम कोई विचित्र, अतिशय स्निग्ध, रसिक अने भोगीओना संसर्गथी प्रख्यात बनेली एवी कृशांगी गणिका सौना हृदयने संतुष्ट करे, ते प्रमाणे गौशीर्षचंदनतरुनी लता के जे अतिशय स्निग्ध, पातळी, लीली अने सर्पना संसर्गनी ख्याति वाळी हती ते सौना हृदयने संतुष्ट करती हती.

आम आवो वसंतोत्सव ज्यारे वनराजीमां प्रसर्यो अने ते सकळ पृथ्वीमां तेम ज अश्वसेन राजामां अनंद प्रगटाववा लाग्यो (४८०), त्यारे अंगे असामान्य शणगार सजीने ते बंने उत्तम कुमारो पोताना खास परिजन साथे, मित्रो अने स्वज्जनोने प्रसन्न करता, हर्षपूर्वक नगरना उद्यान तरफ ऊपडया. थोडी क्षणमां ज मन अने पवन जेवी गति वाळा अश्वरत्नो वडे, बंदीलोकोना स्तुतिपाठ साथे, तेओ पोताना नगरना उपवनमां आवी पहोंच्या. (४८१). ते पछी तेओ फळ, फूल अने पत्रथी लचतां चंपा, सुंदर आंबा, नाळियेरी, अशोक, चंदन वगेरे भात-भातनां वृक्षोनी वसंतश्री नीरखवा लाग्या. ते वेळाए महाराजाने वशवर्ती एवा सनत्कुमारे प्रफुल्लित वदने महेन्द्रसिंहने आ प्रमाणे सहर्ष कह्युं. (४८२), 'मलयानिलनी लहरो अथडातां जेम नीलकमळनी पांखडी फरके, तेम मारी जमणी

आंख फरके छे. तेथी हुं मानुं छुं के कोई मनगमता माणसनुं दर्शन हाथवंतमां छे'. ए पछी पोताना मित्र वडे आ वातनुं समर्थन पामेलो सनत्कुमार ज्यां अनेक प्रकारना मांगलिक विधि थता हता तेवा मदनमंदिरने द्वारे पहोंच्यो. (४८३).

ते वेळाए शणगार सजीने अने अनेक सखीओथी वींटळाईने, कान्तिथी स्फुरतां सुंदर सर्वांग वाळी, लालित्यथी इन्द्रने पण क्षुब्ध करती, जोवा मात्रथी ज तरुणोने उत्तप्त करीने तेमनो विवेक हरती एवी एक नितंबिनीने अश्वसेन राजाना कुमारे मालतीनां पुष्पो चूंटती जोई. (४८४). 'हे मालती, कुसुमोथी समृद्ध आ उत्तम लताओनी वच्चे तुं ज खरेखर जन्मी छे, जेने आ तरुणीरत्नना हाथना स्पर्शनुं फळ प्राप्त थयुं छे'–ए प्रमाणे चिंतावता, अने अनिमिष नयने एकध्यान जोता कुमारनी प्रत्ये पेलीए पण अनुरागपूर्ण दृष्टिपात कर्यो (४८५), अने ते पछी ते पोतानी सखीओ समक्ष बोली, "आ कोई 'नवल्ल' लागे छे." एटले एक सखीए सहेज हसीने कह्यु, 'हुं तने समज पाडुं : ए 'वल्ल' नथी ज. ए तो छे आ पृथ्वीना तिलकरूप'. एटले बीजीए कह्युं, 'सखीओ, तमे मारुं कहेवुं पण सांभळोः जेने आपणी प्रिय सखीए जोयो छे ते आ 'अशोक' छे एम ज समजो.' (४८६). तो वळी बीजी एक के जे बोलवामां विचक्षण हती तेणे पोतानी सखीनुं हृदय समजी जईने कह्युं, 'तमे कशुं जाणती नथी. आ तो अमारी प्रिय सखीए अत्यंत भक्तिपूर्वक जे प्रकट पूजाविधि करी छे तेनो स्वीकार करवा माटे साक्षात् अनंग ज सर्वांगे पुलकित थतो प्रगट थयो छे (४८७), माटे जलदी जलदी प्रिय सखी पोताने हाथे भक्तिपूर्वक पुष्कळ कपूर, कस्तूरी, अगर अने चंदननो लेप, फळ अने सुगंधी फूलमाळा वडे कामदेवनी पूजाविधि करे जेथी करीने भगवान मदन तेने शीघ्र फळे–मनमान्युं वरदान आपे.' (४८८).

आ बधुं साचुं छे एम समजीने जेनुं वदनकमळ प्रफुल्लित थयुं छे तेवी ते वाला मदननी पूजासामग्री लईने, कुमारनी पासे जईने, पोताना हाथमां कमळमाळ लईने, विस्मित थता मन वाळा एवा तेना कोमळ कंठमां ते आरोपीने, हरिचंदन वडे तेना वक्षःस्थळ पर लेप करीने, भक्तिपूर्वक तेना चरणकमळमां नमीने, तथा पोताना मस्तक पर अंजलि धरीने बोली, 'हे प्रणयीजनवत्सल मदन, जे रीते मारा उपर निर्मळ करुणा करीने तुं स्वयं प्रगट थयो, ते ज रीते तुं अत्यारे प्रसन्न था अने मने मनमान्युं वरदान आप. केम के महान लोको जे कार्य माथे ले छे ते असाध्य होय तो पण सिद्ध थाय छे.' (४८९–४९०). ते वेळा, 'शुं पूर्वे आ (स्त्रीरत्न) न

हतुं ? जो हतुं तो शुं में न जोयुं ? जो जोयुं तो शुं चित्ते न चड्युं ? जो चित्ते चड्युं तो बीजा कशा बलवत्तर कारणे ते मनमांथी नीकळी गयुं ? केम के देव, दानव, मानव अने विद्याधरने पण हर्ष करवाने समर्थ आना जेवो बीजो कोई सुंदर संदर्भ विधाताए रच्यो नथी. (४९१). वळी जेणे विष्णुने श्रीपति निर्माण कर्यो, कामदेवने रतिपति, इन्द्रने उर्वशीपति, रामदेवने सीतापति, चंद्रने तारापति, तेणे ते बधुं, हुं मानुं छुं के अवश्य आवुं स्त्रीरत्न निर्माण करवानी आतुरता हृदयमां धरीने, ते माटे अभ्यास करवा निमित्ते ज प्रवृत्ति करी छे' (!)(४९२)–आ प्रमाणे विचार करता अने हर्षथी रोमांचित थता कुमार प्रत्ये महेन्द्रे सहेज हसीने कह्युं, 'त्रिभुवनना विजेता तरीके वंदीओ जेनुं कीर्तिगान करे छे तेवा हे स्वामी कामदेव, आ गजगामिनी, चंद्रमुखी, कोकिलस्वरी सुंदरीने तुं मनमान्युं वरदान केम आपतो नथी ?' (४९३).

एटले मन, वचन अने काया उपर प्रबळ संयम राख्या छतां उत्तम तरुणीना करस्पर्शथी थयेला हर्षने कारणे जे अतिशय रोमांचित थयो छे तेवा कुमारने पोताना मित्रना वचनथी मधुर हास्य प्रगटयुं, अधरोष्ठ फरक्यो, वदन प्रफुल्लित थयुं, नयन विकस्यां अने दांतनी आभाथी जाणे के भुवन श्वेत बन्युं. (४९४). एटले, 'अरे, आ शुं ?' ए प्रमाणे विचारती अने अत्यंत गभराटथी जेना हाथ, पग अने होठ कंपवा लाग्या छे तेवी ते कुमारी द्विगुणित बनेली मुखशोभा साथे थोडीक क्षण त्यां ऊभी रही, त्यां तो ऊंचा हाथ करीने एक बंदीए कुमार समक्ष अवसरयोग्य स्तुतिपाठ कर्यो, 'हे प्रभु, एकचित्ते सांभळो. अत्यारे भूंड स्वाबोचियामांना चीया वडे, हाथीनुं झूंड पोतानी सूंढथी उछाळेला फोरांओ वडे, तो हरणोनुं टोळुं धीमे धीमे वागोळता मुखे क्याराओमां बेसीने तापने हठावी रह्यां छे. तापनी शांतिने अर्थे बंने भुजंग प्रियाना वदननुं (वदनने प्रिय) सरस चंदन सेवे छे. तथा तप्त अंगवाळा प्रवासीओ तरुछायानो आशरो ले छे.' (४९६). एटले सूर्य माथे आव्यो जाणीने पोतानी सखीओ साथे कुमारी, देहमात्रथी अने शून्य चित्ते, जेमतेम करीने पोताना घर तरफ चाली. कुमार पण घणे लांबे समये प्राप्त थयेली राज्यलक्ष्मी जाणे के हाथमांथी सरी गई होय तेम, मन, वचन अने कायाथी पहाड जेवो जड बनी जई क्षणेक त्यां ऊभो रह्यो. (४९७).

पछी महेन्द्रसिंहना कहेवाथी कुमार ते उद्यानमांथी केमे करीने मात्र देह वडे पोताना आवासमां पहोंच्यो. आखा जगतना वस्तुसमूहने तणखला सम (निःसार)

लेखतो ते जेमतेम शरीर टकावी रह्यो. बीजा कोईने अंदर प्रवेशवानो निषेध करीने ते पेली तरुणीनी समग्र लीलानुं ज स्मरण करतो रह्यो. (४९८). वळी कमळनां चंचळ दळ समान नेत्रो वाळी, गजगामिनी, कलहंसना जेवी मधुरभाषिणी, पूर्णचंद्रमुखी, अनन्य विभ्रमवती एवी ते सुंदरीने कामातुर थईने क्षणे क्षणे संभारतुं तेनुं मन, विवेकरहित थईने, घडीक मोह, घडीक विस्मय तो घडीक आनन्द अनुभववा लाग्युं. (४९९). पछी कुमारनो आ वृत्तांत सांभळीने बीजुं कामकाज छोडी दई तेनो मित्र तरत ज त्यां आवी पहोंच्यो अने कहेवा लाग्यो, 'हे स्वामी, तमारा शरीरनी आवी अवस्थानुं शुं कारण छे ते कृपा करीने कहो.' एटले लांबा, ऊना निःश्वासथी जेनो कोमळ अधर सुकाई गयो छे तेवा कुमारे कह्युं, "मारो पूर्ववृत्तांत तारी पासे खुल्लो छे. (५००). ते मृगाक्षीनी वात सांभळवाने उत्कंठित थयेलुं मारुं मन तेना श्रवणयुगलनी निकटता इच्छे छे, तेना लोचननी मित्रता इच्छे छे, तेनी रूपश्रीने निहाळवा इच्छे छे. आ हताश हैडुं तेना संगमनी आशामां उतावळे आगळ ने आगळ दोडच्युं जाय छे अने केमेय वार्युं रहेतुं नथी. (५०१). एटले मित्रे तेने कह्युं, 'हे स्वामी, चालो आपणे ते ज उद्यानमां जइए. पोताना रूप वडे जगतनी तरुणीओने जीतनारी ते सुन्दरांगी भाग्ययोगे त्यां आवी पण होय'. एटले वहेली सवारे ऊठीने केवळ पोताना मित्रना ज साथमां कुमार, सुंदरीनुं दर्शन झंखतो, उद्यानमां गयो. (५०२).

पछी त्यां पहोंचतां ते बोल्यो, "हे भाई, तुं जो तो खरो. आ ए ज मदनमंदिर छे, आ ए ज रत्नभूमि छे, आ ए ज मारा सहोदर समुं अशोकवृक्ष छे. आ मलयानिल पण ए ज छे, जे ते चंद्रमुखी पासे हती त्यारे सुंदर लागतो हतो. पण ते बालानो दुःसह वियोग थतां जे हवे प्रलयानिलथी पण चडी जाय छे. (५०३). ए प्रमाणे दीर्घ निःश्वास नाखता, विरहदुःखथी घेरायेला, करुण विलाप करता कुमारने पोतानां अंगो फरकवाथी कार्य सिद्ध थवानुं जेने सूचन मळ्युं छे तेवा मित्रे कह्युं, "हे स्वामी, तुं प्राकृत जननी जेम खिन्न शा माटे थाय छे ? ए कार्य माटे हुं आखी रात ने दिवस मथीश. (५०४). तो मने आदेश आप. जेनुं हृदय मारा स्वामीना दृढ गुणोथी आकर्षायुं छे तेवी ते स्वामीना चित्तरत्ननी चोरटीने हुं पाताळमांथी, पृथ्वीतल उपरथी के आकाशमांथी रमत मात्रमां पकडीने दृष्टिगोचर करी दईश; नहीं तो, आ पृथ्वी पर हुं मारुं नाम पण नहीं धारण करुं." (५०५). ए प्रमाणे जेमतेम करीने कुमारने मदनमंदिरना आंग-

णामां राखी, तेनो आदेश प्राप्त करीने ते पेली तरुणीनी शोधमां जेवो नीकळ्यो, तेवी ज तेणे ते ज गोरीनी चंद्रमुखी सखीने सामे जोई–तेणे पुरुषनो वेश पहेर्यो हतो, अने विकसित नेत्रे, लतओने पडछे ते जई रही हती. (५०६). एटले महेन्द्र-सिंह कुमारे तेने बोलावी, ' हे सुतनु, मने कहे, आ शुं वात छे ? तें जेनी वात पण न थई शके तेवो आ पुरुषवेश पहेरेलो देखाय छे.'

एटले ते गोरी पासे आवी, हसीने कहेवा लागी, 'हे सज्जन, तुं एकचित्त थईने मारो वृत्तांत सांभळ. (५०७). आगले दिवसे आ ज उद्यानमां मारी सखी अद्‌भुत शणगार सजीने मदनपूजा माटे आवी हती. ते वेळा तेणे मदनमंदिरना द्वार पर, भुवनना शिरोमणिरूप कोईक एवा नररत्नने जोयुं जेणे पोताना रूपथी कामदेव, देवेन्द्र अने विष्णुने पण जीती लीधा हता. (५०८). ते पछी, तेना हृदयनो भाव जाणी गयेली सखीओना कहेवाथी तेणे तेने भूलथी मदन समजी लईने तेनी पूजा करी. मारी मुग्ध सखीए पोताने हाथे तेनां बधां अंगोपांग उपर चंदननुं विलेपन कर्युं. एटले तेना अतिकोमळ अने विरल हस्तस्पर्शथी तेनुं अंग तरत ज आकुळ थयुं. (५०९). " हे सुतनु, हवे घणो समय थई गयो, तो आपणे जइए", ए प्रमाणे सखीओए कह्युं एटले ते मुग्धा जेमतेम करीने शून्य चित्ते मात्र पोताना देह वडे ज ते उद्यानमांथी पोताना आवासमां पहोंची. ते पछी, जेने लाग मळ्यो छे तेवा कामदेवे ते बाळाने एवुं आलिंगन दीधुं जेने परिणामे तेनी दशा अत्यंत विकराळ बनी गई. (५१०). एटले तरत ज तेनी पासे पहोंची जईने सखीओए पहेली रात्रे चंद्र ऊगतां अने मलयानिल वातां जेनो विरहाग्नि सळगी ऊठ्यो छे तेवी ते मुग्धाने लई जईने मणिमय फरसबंध उपर करेली कमळनी पथारीमां सुवाडी. एटले तो एनो विरहताप एटलो गाढ थयो के जाणे तेने प्रलयना अग्निमां फेंकी होय ! (५११). "आ पथारी शुं सूर्य किरणोनी बनावेली छे, अथवा तो ते वडवानलमांथी उत्पन्न थई छे, के पछी कल्पांत समयना अग्निमांथी प्रगटी छे, अथवा तो वीजळीमांथी तेनुं निर्माण थयुं छे, के पछी वज्राग्निमांथी ते उद्‌भवी छे ? अमराईनी मंजरीओने अथडाईने वही आवतो मलयपवन पण देह दझाडतो मारो विवेक हरी ले छे. (५१२). कमळपांखडी छायेली शैय्या अडायाना अग्निनी बनेली लागे छे. चंद्रकिरणो पण बाणने टपी जाय छे. अंगे लगाडेलो गोशीर्षचंदननो रस जाणे के अग्निने पण शोषी ले तेवो छे"—

ए प्रमाणे जेनो बधो विवेक गळी गयो छे तेवी, वारंवार विलाप करतो, घडीक हसती, घडीक भमती तेने में सवार थतां आ प्रमाणे कह्युं (५१३), "वहाली

सखी, तुं केम धैर्य तजीने आम वर्ती रही छे ? कशो पण उद्यम केम करती नथी, जेथी करीने हुं ते ज अनुपम कामदेवने मारा हाथे पकडी लावीने तने बतावुं ?" एटले, एनी वात सांभळतां जेनुं चेतन कांईक पाछुं वळ्युं छे एवी ते बाळा मारी साथे अहीं उद्यानमां आवी पहोंची. (५१४). ते पछी मदनमंदिरमां तपास करी,, आखुं उद्यान जोई वळीने ते बाळाए ज्यारे पेला कामदेवने कयांये न जोयो, त्यारे सविशेष प्रजळता विरहाग्निथी त्रासेली ते असहाय बनी, कदळीमंडपमां जईने पडी अने जेम-तेम करीने मारी समक्ष तूटक वचनो बोलवा लागी, (५१५) "हे सखी, तुं ए कामदेवनो वेश धारण करीने मारी समक्ष आव, जेथी ए विनोद वडे हुं कांईक आश्वासन मेळवुं." में ए प्रमाणे जेवुं कर्युं तेवो ज तुं भाग्ययोगे मने अहीं मळ्यो. एटले जो आवी परिस्थितिमां केमेय करीने ए सुभग अहीं आवी लागे तो हुं अधन्य होवा छतां मारी जातने अतिशय धन्य मानीश.' (५१६).

ए ज वेळाए. मदनमंदिरमां कशुं सुख न मलतां कुमार भमतो भमतो त्यां ज आवी पहोंच्यो. विस्मयथी विकसित मने तेणे पेलां बंनेनी वातो सांभळीने कह्युं, 'हे विशाळनेत्रा, तुं मारो पोशाक पहेरीने अहीं ज रहे, तारा छद्मस्वरूपे हुं त्यां जईने ते मृगाक्षीने मळुं.' (५१७). एटले पेला बंनेए ताळी पाडीने हसतां हसतां कह्युं, "सरस, सरस." विकसता वदनकमळ साथे कुमार ते हरिणाक्षीनी पासे पहोंच्यो. उत्ताप पामेली ते गोरी नीचे मुखे ऊभी हती. तेने आलिंगन दईने, चूमीने कुमारे कह्युं (५१८), " हे सुतनु, आगले दिवसे तें शुद्धबुद्धिथी कुसुमसमूह तथा हरिचंदनना लेप वडे मारुं अंग पूज्युं अने शुद्धभावे मधुर अक्षरना ध्वनि साथे मारी समक्ष स्तुति-पाठ कर्यो, तेथी में जाणे के सुधारसनुं पान कर्युं, जाणे के मारो परम उदय थयो, अने कल्पवृक्षना छोडनी जेम मने हर्षथी रोमांचना अंकुर फूट्या. (५१९). तो पछी आजे हे चंद्रमुखी, हे मानिनी, तुं कृपा करीने वाणीथी पण केम मारो सत्कार करती नथी, अने धरती पर दृष्टि खोडीने, हे कलहंसनी गतिवाली, तुं केम खडी रही छे ?" एटले पोतानो जमणी भुजलता ते सुभगना स्कंध पर मूकीने ते मुग्धा बोली हँ, हँ, मधुरभाषी, में तारो शुद्ध स्नेह जाण्यो ! (५२०). हे सुभग, तारा वियोगे मारुं शरीर विरहाग्निमां तप्युं, अने जीवननो अंत आणे एवुं भारे दुःख हुं पामी; पण हे सुंदर, तारा संपर्कमां तो बीजी लाखो रमणीओ रमती हशे." एटले कुमारे गभराईने ते चंद्रमुखीने भुजपाशमां बांधी लई, वक्षःस्थळ साथे भीडीने रसिक वचनो कह्यां (५२१), "हे सुंदरी, मारी पासे अनेक सुंदर नेत्रो वाळी स्त्रीओ होवा छतां मारे माटे अमृतनुं

पान पण नीरस, चंदननो रस पण अतिशय उष्ण, मलयपवन पण शरीरनो दाहक, चंद्रनां किरणो अडायानी आगथी पण बदतर अने मोतीना हार तरवारथी पण वधु तीक्ष्ण बनी गयां हतां (५२२). पण हवे त्रिभुवनना तिलक समा तारा देहसंगरूपी अमृतरसना प्रवाहथी सींचायेला मने, बीजी बधी सुंदरीओना साथ विना पण एनी ए बधी चीजो परम सुखप्रद लागे छे. तो हे विशालाक्षी, तुं तारी स्नेहपूर्ण दृष्टिथी मारो सत्कार कर, अने मारा उपर तलना फोतराना त्रीजा भाग जेटलो पण रोष न करीश." (५२३). एटले 'मारा प्रेमीनो वेश पहेरेली आ मारी सखी ज छे' ए प्रमाणे निःशंकपणे धारती, कामने उद्दीपित करनारी ते बाळाने पोताना अंकमां स्थापीने, हाथ वडे जघन, स्तन ने मुखनुं पूरेपूरुं स्पर्शसुख पामीने, सर्वांगे आलिंगीने कुमारे तेने स्नेहपूर्वक वाम लोचन उपर निर्भर चुंबन कर्युं. (५२४).

ते वेळा तेना पिता तरफथी मोकलायेलो कोई विशिष्ट पुरुष उतावळे तेनी नजीकमां आवी पहोंच्यो, अने अत्यंत हर्षथी रोमांचित शरीर वाळो ते गभीर स्वरे सूरराजाना कुमार (महेंद्रसिंहने) कहेवा लाग्यो, "महाराजाए कुमारनी पासे मने मोकल्यो एटले हुं आपनी समक्ष उपस्थित थयो छुं. (५२५). जेना चरणमां चोल अने सिंहलना राजाओ नमे छे, जे चेदिराजने चितानुं कारण छे, जेणे कलिंग, वंग अने अंगना राजाओने जीत्या छे, लाटनो राजा जेनी सेवा करे छे, जे साची राजनीतिनो सलाहकार छे एवो कुमारभृत्य भोजराजनो पुत्र बीजा राजवीओ सहित राजमहेलमां आवी पहोंच्यो छे." (५२६). ए प्रमाणे सांभळीने कुमार जेमतेम करीने कदळीमंडपमांथी ज्यां बहार नीकळतो हतो, त्यां ते भोजराजानो पुत्र पोते ज तेनी पासे आवी पहोंच्यो, अने तेणे नमीने कुमारने एक जगविख्यात अश्वरत्न भेट धर्युं. ते अश्व जलधिकल्लोल नामे जाणीतो हतो, उत्तम लक्षणो वाळो, अतिचंचळ, अने आखा भुवनमां गति करवामां सूर्यना रथना घोडाओने पण वेगमां जीती जाय तेवो हतो. (५२७). ऊंचाईमां ते एंशी आंगळ, विस्तारमां नव्वाणु अने लंबाईमां एक सो आठ हतो. कान, जानु अने खरीनो विस्तार चार आंगळ हतो, तेनुं उन्नत मस्तक बत्रीश हतुं, भुजदंड वीश अने जंघा सोळ आंगळ हती. एनुं पीठनुं माळखुं गूढ हतुं. (५२८). कान पातळा अने लांबा हता, कपाळ चोरस अने विस्तीर्ण हतुं. मुख कुटिल, कठण अने मांस वगरनुं हतुं. आंखो स्थिर अने सांकडी, नसकोरां चंचळ अने फफडतां हतां. तेना पहोंचा एकसरखा अने सुघटित हता, पेट पातळुं हतुं,

जांघ लांबी हती, सुललित चमत्कृत पुलित अने वल्गित गतिओ ए निर्विघ्ने करी शकतो हतो (५२९), तेना सर्वांगे वज्र, मरकत, पुलक, वैडूर्य, चंद्रकान्त, सूर्यकान्त, इंद्रकान्त वगेरे रत्नोथी चमकतां आभरणोनी शोभा हती. "खरेखर पोताना गुणोथी आ आखा जगतने पण ओळंगी जई शके तेम छे ए चोक्कस वात छे." (५३०) ए प्रमाणे विचारीने, ते जलधिकल्लोल नामना उत्तम अश्व पर चढीने, त्यां आवी पहोंचेला अनेक राजकुमारोनी समक्ष कुमारे हर्षमां आवीने कह्युं, "चालो जोईए, घोडदोडमां कोण कोने जीते छे," अने बीजा अनेक कुमारोना घोडा साथे कुमारे पोतानो घोडो पण वेगपूर्वक छूटो मूक्यो. (५३१).

एटले मन अने पवनथी पण वेगीलो जलधिकल्लोल दोडतां दोडतां अर्धी क्षणमां ज धरतीनो सारो एवो भाग ओळंगी गयो. बीजा बधा राजकुमारो "ओ आवे, ओ जाय, ओ दूर क्यांये पहोंच्यो, अरे ओ देखातो पण नथी" ए प्रमाणे वधती जती चिंताना भार साथे क्यांय सुधी कुमार माटे विलापवचन बोलता रह्या. (५३२). एटले, जेने पुत्रनुं पहेलवहेलुं विरहदुःख उत्पन्न थयुं छे एवो सर्व शत्रुओने कष्टकर अश्वसेन राजा पूर्वोक्त वृत्तांत सांभळीने पोतानी चतुरंग सेना साथे मान-अभिमान बाजुए मूकी, करमायेला मुखकमळे, पृथ्वीना मोटा प्रदेश उपर फरी वळयो. (५३३). एवे समये छत्रना दंड भांगी नाखता, वृक्षोने उखेडता, पर्वतोना सर्व शिखरो तोडता, घरो पाडता, धूळ उछाळीने धरती खोदता, जगतना लोकोनी आंखोने आंधळी करता, प्रलयपवन जेवा प्रबळ झंझावाते राजानी सेनाने छिन्न-भिन्न करी नाखी. (५३४). एवी स्थितिमां शूर राजाना पुत्रे (महेन्द्रसिंहे) महाराजाने कह्युं, 'हे महाराज, जेमां असामान्य समृद्धि प्राप्त थवानी छे तेवी भावी कार्यसिद्धिनी हुं तने निश्चयपूर्वक वधामणी आपुं छुं. माटे कृपा करीने तुं पाछो वळ. केम के आ संसारमां अंधकारनो जथ्थो गमे तटलो फेलाय तो पण सूर्यकिरणो ज तेनो नाश करे छे. तने विश्वास न होय तो आकाशनी सामे जो'. (५३५). ए प्रमाणे चमत्कारयुक्त उत्तम वचनो वडे वीनवी, अश्वसेन राजाने जेमतेम करी पाछो वाळीने, शूर राजानो कुमार जे दिशामां सनत्कुमार गयो हतो ते दिशा नोंधीने ऊपडयो. बीजा बधा लोको क्रमे क्रमे पोतपोताने स्थाने पहोंची गया, त्यारे एक शूर राजानो कुमार मात्र पोताना बाहुबळनो साथ लईने पृथ्वी पर भमवा लाग्यो. (५३६).

ते सरोवर, कूवा अने गुफाओमां पेसतो, पर्वतनां शिखरो उपर चडतो, वारंवार नगरोमां प्रवेशतो अने पोताना मित्रना गुणो मनमां धरीने जंगलोमां दोडादोड

करतो. फळ, फूल, कंद अने पांदडांथी ते शरीरने टकावी राखतो. मार्गमांना राजाओ तेनो गमे तेटलो सारो सत्कार करता तो पण तेनुं मन तेमां राचतुं नहीं. (५३७). क्रमे क्रमे, दिन प्रतिदिन चारे तरफ फरतां ते अकस्मात् क्रूर रानी पशुओथी भयंकर एवी घोर अटवीमां आवी पहोंच्यो. भद्र जातिना अनेक हाथीओनी गर्जना सांभळीने 'शुं नरोत्तम सनत्कुमारनो आ गंभीर ध्वनि तो नहीं होय ?' ए प्रमाणे विचारीने ते मूठीओ वाळीने तेमनी सामे दोडतो. (५३८).

ए रीते चमरी गाय, केसरी सिंह, वाघ, दीपडा, जंगली हाथी, सरभ, वानर, हरण, नोळिया अने कलहंसनी वसति वाळी तथा मोटा मोटा झाडो, पहाडो, जंगलो विशाळ नदीओ अने सरोवरोथी भरपूर एवी पृथ्वी पर ते रखडतो हतो, त्यां एक वार जेमां विरही पोताना प्रियजनना गुणो स्मरीने झूरे छे एवी, (५३९). कष्टकारक वसंत-ऋतु आवी पहोंची. वृक्षोनां उत्तम पुष्पोना रस अने परिमलथी जेणे आखा पृथ्वीमंडळने, गिरिगुफाओने अने आकाशने भरपूर कर्यां छे, आम्रमंजरीनो रज प्रसरवाथी ऊपजेला रातापीळा रंगने कारणे जे मनोहर लागे छे, किम्पाक वृक्षना परागथी जेणे दिशाओ भरी दीधी छे तेवो, वसंतना ध्वज समो, मलयपवन लोकोना हृदयने विकळ करी दे छे. (५४०). भ्रमरोना गुंजारव प्रवासीओने तप्त करे छे, कोयलनो टहुकार दाह करे छे, केसूडा अने अशोक खेद उपजावे छे, विचकिल, मालती, वकुल अने करेण अतिशय दुःख दे छे. रोपे भगयेला विधाताए प्रवासीओ माटे जाणे के फांसाओ न गोठव्या होय ए रीते वसंत वर्ते छे. आ हताश वसंत कोनो सुखेथी वीतशे ? (५४१)

पर्वतोना प्रचंड जंगलोमां सळगता दावानळने साथ आपीने जेणे जगतने संताप्युं छे, जेणे पृथ्वीमंडळनां वाव, कूवा, नदीने सरोवरने सूकवी नाख्यां छे, जेणे वृक्षनां पर्णो खेरवी नाख्यां छे तेवो निष्ठुर, दुर्धर झंझावात ग्रीष्मऋतुमां वाय छे, त्यारे एवो कोण छे जेने ते दाह न करतो होय ? (५४२) जेनां पत्र खरी गयां छे, श्री नष्ट थई छे, जळ साव ओसरी गयुं छे एवी अतिशय त्रस्त, सौन्दर्यवती नलिनी-तरुणीना कमळवदननी कान्ति दुष्ट रविराजाए कठोर कर वडे नष्ट करी. वळी वंटोळियाए उछाळेली रजथी जेणे दिशाओ धूंधळी करी नाखी छे तेवा कापुरुष ग्रीष्मे आ पृथ्वीमंडळमां कोने नथी संताप्या ? (५४३).

सजळ मेघनी जळधारानी बाणावळी वाळो मेघगर्जनानो हुंकार करतो, [illegible]ळीना पुंजनी पणछ वडे भयंकर, पुष्परसमां लुब्ध थईने दोडता भ्रमरोनां टोळांनी [illegible]माळी फेलावतो, मयूरमयूरीनां वृंदो वडे कलाप विस्तारतो एवो पामर

(व्याध ?) **वर्षाकाळ** क्या विरहीने संतापतो नथी ? (५४४). आकाशमां इन्द्रधनुष्यने, मानस सरोवर जता कलहंसोने, बंने कांठाओने तोडी पाडती नदीओने, मधुर कलरव करता चातकोने, धरतीनुं तळियुं नष्ट करता जळप्रवाहने, तथा केतकी, शिखरी, शिलिन्ध्र अने कुटज वृक्षोनां पुष्पोने—ए बधुं जोईने, वर्षाकाळमां क्या विरहीजननां हैडां नथी फाटी जतां ? (५४५).

जेमां वादळो क्वचित् वरसे छे, चंद्रकिरणो सभर विस्तरे छे, खोलेला पद्म, कमळ अने कल्हार वडे नदी अने सरोवरो शोभे छे, सप्तच्छद अने बंधुजीवने फूलोथी जे समृद्ध करे छे, जेणे जळप्रिय राजहंसनो संचार द्विगुणित कर्यो छे (?) (५४६), जेमां लीलुं घास चरीने प्रसन्न थयेलुं गोवृंद शींगडांनी अणीथी भोंयने खणी रह्युं छे, जेमां सूर्यनी किरणावलि विस्तरे छे, आखा पृथ्वी-मंडळनो पंक जेमां शोषायो छे, जेमां प्रवासीओ संचार करी रह्या छे तेवी आ **शरदऋतु** जगतमां स्वामीथी वियुक्त बनीने जीवता लोको माटे दुःखकर होईने कई रीते वीते ? (५४७).

जेणे मालती, बकुल, विचकिल अने मंदार वृक्षोनो वैभव नष्ट कर्यो छे, जेणे बोरडीने फूल अने फळथी समृद्ध करी दीधी छे, झाकळकणोना प्रसरता प्रभावथी जेणे हिमालयना गौरवनी स्पर्धा करी छे, जेमां दिवस टूंका बन्या छे ने रात्रिनो गाळो बेवडो थयो छे, जेणे प्रवासीओ अने दरिद्रोने घणुं देहकष्ट आप्युं छे (५४८), जेमां सुखी लोको उत्तम केसर, बंध महालय, सगडी, सुंदरी अने सुगंधी तेलनो आदर करे छे, जेमां प्रिया अने प्रियतम परस्परनुं संगसुख माणे छे, जेमां कामळीनां वस्त्रो लपेटवामां आवे छे, जे प्रियाविरहित अने स्वामीत्यक्त लोकोने दुःखकर छे एवो आ काळभरख्यो **हेमंत** क्यारे वीतशे ? (५४९).

जेमां चंद्र दुःखद छे, सूर्य वहालो लागे छे, फळना भारथी बोरडी भांगी पडे छे, वाल अने रींगणी फळरहित बनी गयां छे, कपास अने तुवेरनां फूलोनो संहारक होवाथी जे दुःखकर छे, लोध्र अने प्रियंगुना पुष्पसमूहमांथी ऊडता पराग वडे जेणे दशे दिशाओने रंगी दीधी छे, जेणे कुंदनी कळीने अने मालतीना फूलने प्रफुल्ल कर्यां छे, काशफूलने विकसाव्यां छे (५५०), जेमां मित्रो अने स्वजनोथी विरहित लोको अने धनसंपत्ति झंखता प्रवासीओनी दंतावलि अविरत पडता झाकळथी कडकडे छे अने तेमना हाथ अने हृदयनो संबंध थाय छे—एवो

दुःखदायक अभागियो शिशिर कई रीते कुशळदायक थाय—जेमां कोईपण सुखी माणस एक स्थळेथी बीजे स्थळे संचार करतो नथी ? (५५१).

आ प्रमाणे विचार करतां अने संताप अनुभवतां, श्री शूर राजानो पुत्र पृथ्वीपीठ पर एक वरस भम्यो; परन्तु पोताने मोंए करेली प्रतिज्ञाना लोपथी ते विखंडित न थयो. पछी, ज्यारे क्रमशः फरी पाछो जगतना प्राणीओने तुष्ट करनार वसंतोत्सव आवी पहोंच्यो, ज्यारे आम्रवृक्षोए वैभव धारण कर्यो, कोयलो फरकवा लागी, मलयपवनने अवकाश मळ्यो, अने ज्यारे भ्रमरकुळना झंकारध्वनिथी कामदेव जाग्रत थवा लाग्यो, त्यारे पूर्वोपार्जित सत्कृत्योने लीधे पोतानो जमणी आंख फरकी ऊठवाथी जे आनंदित थयो छे एवा शूरसुत कुमार महेन्द्रसिंहनो, रस्ते (आगळ वधवाना) उत्साहनो गुण, शरीरमां द्विगुणित थयो. (५५२–५५३).

त्यार पछी आगळना मार्गे जतो ते राजहंस अने सारसोनो मधुर ध्वनि सांभळवा लाग्यो; फळफूल अने पत्रनी समृद्धिथी आकर्षक वनेली वनलताओने ते जोवा लाग्यो. कमळना परागथी रंजित मलयानिलना संपर्कथी तेणे नासिकापुटमां तथा अंगोपांगमां प्रसन्नता अनुभवी. (५५४). 'अरे, पोतपोताना विषयनी प्राप्तिना व्यापारथी मारी आ चार इंद्रियो जो के अत्यारे तुष्ट थई छे, तो पण आ जीभ भूखतरसथी पीडाती एम ने एम ज रही छे !'—आ प्रमाणे विचारतो, जळ तथा फळने झंखतो, कांठा पर विविध वनो वाळा मानससरोवर पासे ते शीघ्र आवी लाग्यो. (५५५). एटले वन्य गजराजनी माफक आखुंये सरोवर सहर्ष खूंदी नाखी, यथारुचि पाणी पीने, ज्यारे कांठेनां वृक्षोनी टोचेथी फळफूल लईने ते आरोगतो हतो, त्यारे विद्याधरो, देवो, असुरो अने किन्नरोना संगीतध्वनिथी ऊंचो अने सारस, हंस अने मोरथी चडियातो मधुर आलाप तेणे सांभळ्यो. (५५६). एटले 'आ निर्जन महावनमां आवो गीतोद्गार क्यांथी ?' एम आदरपूर्वक मनमां विचारतो ते सहर्ष अने सत्वर रस्ते आगळ चाल्यो, त्यारे देव, असुर, विद्याधर अने मनुष्यना तरुणोनां मन हरे तेवी अने अप्सराओथी मात्र नयनपलकारे जुदी पडती एवी तरुणीओनी वच्चे रहेला; घणा ज संतुष्ट; विद्याधर तथा वंदीजनो वडे कीर्तिपाठ कराता; सर्वांगसुंदर; गोरोचन चंदनना लेपथी देहकांति वाळा; कपोलने स्पर्शतां कुंडळ, सुंदर मुकुट वगेरे अनुपम शणगार सजेला; मदनमंदिरना द्वारप्रदेश पासेना कदळीगृहनी अंदर कनक अने रत्नना आसने विराजेला; गीतगान साथेनुं सुंदर प्रेक्षणक जोता; आ रीते अल्पकाळे प्रकट थयेलां पूर्व भवना संचितथी अनेक सुखो भोगवता; अने नमन करता लोकोने राजी करता, सनत्कुमारने तेणे जोयो. (५५७–५५९).

'आवी रिद्धि एने एकाएक क्यांथी मळी ?' एम विचार करतो धीमेधीमे पाछळनी जग्या पसंद करीने, झाडनी छायामां ऊभा रह्यो, बंदिजनोने स्पष्ट स्वरे पाठ करता ते सांभळवा लाग्यो: 'दुष्टोनां अभिमान दळीने चूर्ण करनार; नमन करनारने प्रचुर लक्ष्मीना दाता; कौरववंशने उज्ज्वळ करनार; अश्वसेनना कुलध्वज; युद्धमां सर्व विद्याधरोने जीतनार; विद्याधरोना चक्रवर्ती; पोताना तेजथी सूर्यने झांखो पाडनार; असिधारा वडे शत्रुश्रेणिओनुं शमन करनार; गुणरत्नोना सागर; विद्याधर-सुंदरीओना स्तनाग्रना संगमथी आनंदित--एवा जगतना नृपवर्य सनत्कुमारनो जय हो. (५६०–५६१).

एटले 'खरेखर आ तो अमारा कुळनो कल्पतरु, अश्वसेन राजानो पुत्र पोते ज छे'–एम निर्णय करीने ते शूर राजाना घरना आभूषणरूप महेन्द्रसिंह आवीने तेना पगमां पड्यो. एटले एकदम ऊभा थईने सनत्कुमारे शूर राजाना पुत्रने सहर्ष सामे मोंए सर्वांगे आलिंगन आप्युं. (५६२). त्यार पछी बहुमूल्य आसन पर बेठेला, परस्पर विकसित मुख वाळा, प्रेम अने आनंदथी स्फुरायमाण, पोताना सर्व मित्रो अने स्वजनो-ना वत्सल, प्रथम मिलनने योग्य सत्कारविधि पामेला, नाम लेवा योग्य एवा ते बंने पूर्व दुःखने भूलीने एकत्र बेठा. (५६३). पछी पोतानी प्रिया विद्याधरपुत्रीओ वडे पोताना मित्रनो सत्कार करावी, तेने भोजन करावी, लांबा काळे थयेला मिलनथी जेनां लोचन अश्रुपूर्ण बन्यां छे तेवो सनत्कुमार बोल्यो, "हे मित्र, कहे, मात्र भुजाओनी ज सहाय वाळो तुं धैर्य टकावी राखीने आ घोर जंगलमां कई रीते आवी पहोंच्यो ? (५६४). मारा वियोगे, गाढ स्नेहवाळां मारां माता-पितानी, तेम ज मंत्री, सामंत अने सज्जन लोकोनी शी दशा छे ? मारुं अपहरण थयेलुं सांभळीने दुर्जनो मारा पिता प्रत्ये कई रीते वर्ते छे ?'–एटले मस्तकपर अंजलि रचीने अने पोतानो बधो ज पूर्वोक्त वृत्तांत क्षणेकमां जणावीने शूरराजाना पुत्रे (५६५) कह्युं, 'तमे पण उत्तम अश्व तमने हरी गयो त्यार पछीनो तमारो वृत्तांत जणाववानी मारा पर कृपा करो.' एटले पोतानो वृत्तांत स्वमुखे कहेवाने अशक्त कुमारे विद्याबळे तत्त्वविशेष जाणी शकती पोतानी विमलमति नामनी प्रियाने आ विषयमां अनुज्ञा आपी. (५६६). 'घणा परिश्रमने लईने निद्राथी मारी आंखो घेराय छे, तो हुं अहीं थोडी क्षण विश्रांति लउं' एम कही, ऊठी जई, बधा परिजनने त्यां ज मूकी, कदळीगृहनी अंदर जईने, आगळथी करी राखेल शय्यामां ते बेठो, (अने महेन्द्रसिंह) कुमारनो वृत्तांत सांभळवा एकचित्त बन्यो. (५६७).

एटले निर्मळ दांतनी किराणावलिथी सर्व दिशोएने श्वेत बनावती चंद्रवदना विमलमति कहेवा लागी, "कुमार, तुं तारा मित्रनो वृत्तांत हवे सांभळ. ते वेळा तमारी सामे ज ए उत्तम अश्व आर्यपुत्रने हरी गयो अने क्षगवारमां ज तेने अहीं नाख्यो (५६८)—आ यमसदन समा घोर अरण्यमां, ज्यां पशुओ त्रासे छे, वाघ पण डरे छे, गिरिशिखरो तूटी पडे छे, घोडाओ भटके छे, हाथीओ नासभाग करे छे, भीललोको पण विलाप करे छे, उज्जड बनेलां वृक्षो तूटी पडे छे, हजारो वांस फूटे छे, ज्यां कायर लोको निश्चेतन बनी जाय छे अने दावानळ सळग्या करे छे. (५६९). एटले, 'घोडो केटलेक जशे ?' एम विचारीने ए श्री अश्वसेनना कुलगगनना चंद्रे घोडाने छूटो मूकेलो, तेथी हवे लांबा श्वासो मूकतो ते अडधी क्षण त्यां ज ऊभो रह्यो. 'रे ! धिक्कार छे मने के आ घोडो ऊलटी तालीम पामेलो होवानुं हुं कळी न शक्यो' एम अतिशय खिन्न बनीने विचारतो ते उत्तम कुमार, जेवो पोताने हाथे ते उत्तम अश्वनुं चोकडुं ढीलुं करे छे, त्यां तो तरत ज धरती पर अतिशय भ्रमण करवाथी श्वास अने थाकथी भांगी पडेलो ते नीचे पड्यो अने यमसदन पहोंची गयो. एटले घणाघणा दुःखे तप्त शरीरे ए अश्वसेननो राजपुत्र, भूखतरसथी क्लान्त अने विषादभर्यो, जेवो एक हजारो पर्णघटायुक्त शाखा वाळा सप्तच्छद वृक्षनी नीचे आवी पहोंच्यो तेवो ज ते, सूर्यनो ताप आ पहेला कदी न अनुभव्यो होईने, दैवयोगे अर्ध क्षणमां ज मूर्छाविकळ बनीने असहायपणे पड्यो.

ते ज क्षणे सनत्कुमारने आवी दशामां जोईने, जगतमां सौने टपी जाय तेवा रूपवैभव वाळा, ऊगती जुवानी वाळा, शरीरे सुंदर शणगार सजेला, सर्वोत्कृष्ट औचित्यबुद्धि धरावता, अमृतमधुर अने मृदु वाणीथी शोभता, जाणे के आर्यपुत्रना पुण्यपुंजथी खेंचाईने आवेला एवा कोई एक पुरुषे मानससरोवरमांथी पोताने हाथे जळ आणीने आदरपूर्वक कुमारना सर्वांगे सींच्युं. एटले भानमां आवेला कुमारे जळ पीने कह्युं, "भद्र, तुं कोण छे ? क्यांथी आव्यो ? शा माटे तें परोपकार करीने चंद्रकिरण जेवुं निर्मळ अने अमृतमधुर आ पाणी लावी, पाईने मने जिवाड्यो ?" (५७०–५७४). एटले पेलाए कह्युं, "हे नररत्न, मारी ओळखाण सांभळः हुं कमलाक्ष नामे जाणीतो यक्ष, पथिकोना तापहर एवा आ रम्य वृक्ष उपर वसुं छुं. जगतमां उत्तम एवा तारी आवी विषम अवस्था जोईने में मानससरोवरनुं जळ लावीने तने स्वस्थ कर्यो." (५७५). एटले कुमार फरी बोल्यो, "मारा शरीरमां प्रलयाग्निना दाह समी बळतरा प्रसरी छे. ए शारीरिक संताप तो अने त्यारे ज शमे ज्यारे हुं सर्वांगे जलांजलि

अपाय ते रीते शीघ्र मानससरोवरना जळमां मारी जातने झबोळी ज दउं'. (५७६). ते पछी विना विलंबे ते यक्ष, अनेक विद्याधर, चक्रवाक, कलहंस अने हाथीओ जेमां क्रीडा करता हता तेवा ते मानससरोवर पासे कुमारने पोताना करसंपुट वडे लई आव्यो. एटले जेनां नयन अने मन प्रसन्न थयां छे तेवो सनत्कुमार देव, असुर अने तिर्यंचना शरीरसंतापने हरनारा ते सरोवरमां प्रवेश्यो. (५७७). मदमत्त विद्याधर-तरुणीओना स्तन परना अंगरागथी लालाश धरता, कमळरजथी शोभता, वनगजोना गंडस्थळ परना दानजळनी सुगंधथी पुष्ट, कांठेना घटादार शाखा वाळां वृक्षोनी छाया वाळा मानससरना, अमृतथी अभिन्न एवा जळमां तेणे डूबकी दीधी. (५७८).

ते पछी शरीरसंताप टळतां, दृढ चारित्र्य रूपी रथ वाळो अने पोताना पुण्यसंचयरूपी कवच वाळो ते अश्वसेनराजानो पुत्र ज्यारे सरोवर-मांथी बहार नीकळवा लाग्यो, ते वेळा, कांठेनां वृक्षोने तोडी पाडता, गिरि-शिखरोने भांगतां, वनगजोने घुमावता, रजोमंडळने उछाळता, पक्षीओनो नाश करता, पशुओनो कच्चरघाण काढता, भीलोने व्याकुळ करता, डरामणा, उग्र वंटोळियाए दिशाओ ढांकी दीधी अने ऊडती धूळे कुमारनी आंखो भरी दीधी. तो पण मेरुशिखर जेवा अविचळ चित्त वाळो ते कुमार अक्षुब्ध भावे 'आ शुं ?' एम विचारतो ऊभो रह्यो. (५७९–५८०). ते पछी कोईए घोर फूंफाडा मारता, रोषथी राती आंखो वाळा, लांबा, भमरा अने महिषशृंग जेवा काळा, जमदूत समा, बेवडी जीभ वाळा, विषना आवेगे चीकणा, क्रोधे आखा जगतनो पण कोळियो करवानुं न चूके तेवा, गगनतळने भरी देता एवा विषधरोना झुंडने उपरथी नाख्युं. (५८१). ए नागपाशे कुमारश्रेष्ठने सर्वांगे बांध्यो. एटले सागर समा अक्षुब्ध चित्त वाळा ते कुमारे पोतानी भुजलता धुणावीने सर्पोना सांधा तोडी नाख्या. ए पछी जेना गळाना दांडा उपर मानव खोपरीओनुं झूंड लटकी रह्युं छे, मोमां पुरुषनुं शब पकड्युं छे, हाथमां तलवार छे (५८२), घोर सर्पो वडे जटाजूट बांध्यो छे, जोरथी दाढो घसीने जे भयंकर कचकचाट करी रह्यो छे, वीजळी जेवा जेनां लोचन छे, दांतो ककडावता भीषण वेताळ जेनी पाछळ पाछळ आवी रह्या छे तेवो, अने 'अरे, अरे, तारा कोई इष्टदेवनुं स्मरण करी ले' एम धमकीभर्युं बोलतो, कृतांत जेवा भयंकर शरीर वाळो एक राक्षस आवतो दीठो. (५८३).

एणे, जेना ऊंचा शिखरोनी टोच तूटी रही छे, जेमां रहेला प्राणीओ भ्रांत अने व्याकुळ बन्यां छे, जेमां वानरो घोर चिचियारी पाडे छे, भारे

खडको वडे शत्रुने जे कचरी नाखे छे, जेमां हाथीओ गभराटथी चीत्कार करी रह्या छे, एवा एक भारे पहाडने हाथमां ऊंचकीने, देवांगनाओ अने विद्याधरीओनां आंसुथी सिंचित मस्तक वाळा कुमारनी उपर फेंक्यो. (५८४). ते पछी विकराळ दंतपंक्ति वाळा, मांस अने लोही वगरनां शरीर वाळा, चीबा नाक वाळा, सपाट (?) पेट वाळा, फीकी अने ऊंडी आंख वाळा, कोई बे मोढाळा, कोई त्रण मोढाळा, कोई चार मोढाळा तो कोई पांच मोढाळा एवा वेताळोए आनंदमां आवी जईने जयजयकारनी घोषणा करी. एटले तरत ज शरीर धुणावी ए गिरिपीठने बाजुए नाखी दईने (५८५), 'आहाहा ! जुओ, आखा जगतने हरी ले तेवां रोषथी रातां लोचनो वाळा राक्षसे फेंकेलो पहाड रमतमात्रमां दडानी जेम दूर फगावी दईने मत्सर भरेलो आ कोई सर्वश्रेष्ठ, सुभट कञ्चुक बोलतो थसे छे' ए प्रमाणे देव, असुर अने विद्याधरोनां वेण सांभळतो कुमार (५८६), 'अरे पापी राक्षस, विशाळ अने पुष्ट भुजाओ रूपी यंत्रमां पिलाई, रसदार शेरडीना दांडानी जेम, तुं हमणां ज तारा गळीने बहार नीकळेला बधा धातुरसोनुं दान करीने पंखीओने तृप्त कर; स्वतेजे अन्य सौ तेजस्वीओने जीतनार एवा मारा जीवतां क्यो निर्लज्ज बीजा कोईनो जयघोष करी शके ?' (५८७). ए प्रमाणे बोलता तेणे, एकाएक प्रसरेला मत्सरने लईने सामुं जोई न शकाय तेवी लाल आंखो करी, एकदम धसी जईने, ते राक्षसना शरीरने निबिड भुजदंडना यंत्र वडे एवुं पील्युं के ते अधम राक्षसनी आंखो बहार नीकळी पडी, अने असहायपणे मोटो पोकार पाडीने ते धरती पर ढळी पड्यो. (५८८). ए पछी केमे करीने भान आवतां ए अधम राक्षसे तरत ज पाछा ऊभा थईने, 'अरे पापी, जेना आघातथी पहाडनां शिखर पण नष्ट थई जाय तेवुं आ अनन्य मुद्गर, त्रस्त देव असुर अने विद्याधरोना देखतां ज तारी छाती पर पडो अने तारो नाश करो' (५८९) एम कहीने, छाती कूटती भयभ्रांत देवांगनाओना तूटेला हारना मोतीओथी मिश्रित बनेली अने आंखथी ओगळती अश्रुधारानी तथा तेमना निसासानी साथोसाथ, तेणे सर्वथा पोताना ज विनाशकाळ जेवुं, कायरो माटे भयंकर मुद्गर, भारे आवेगपूर्वक, ते कुमारशिरोमणिनी उपर फेंक्युं. (५९०).

एटले मुद्गरना घाथी जेनां अंगो विकळ बनी गयां छे तेवो ते कुमार देवो अने विद्याधरोनी तरुणीओने दुःख थाय ते रीते धरती पर ढळी पड्यो. आथी थोडाक संतोषथी फुलातुं राक्षसनुं सैन्य धसी जई, कूदी-ऊछळीने जयघोष करवा लाग्युं. ते पछी भानमां आवी, स्वस्थता प्राप्त करी, प्रचंड अभिमाने थरथरती भुजा वडे एक वटवृक्षने उखेडीने भारे क्रोधथी ध्रूजती कंधरा वाळा, खोचायेली भ्रूकुटिने

कारणे भयंकर मुख वाळा, चरणना भारे धरती कंपावता, 'अरेरे, अधम पिशाच ! आ वडना झाडथी छूंदायेलुं तारुं शरीर सर्वांगे निर्जीव बनीने कागडाओने तृप्त करो.' (५९१–५९२) ए प्रमाणे बोलतो अने युद्धनो आवेग जोईने व्याकुळ बनेली विद्याधरतरुणीओनो जे आदर पाम्यो छे तेवो ते गुणरत्नोनो सागर अश्वसेन राजानो पुत्र पोताना हाथे वटवृक्षने मूळथी उखेडीने अने तेने ज हाथमां दंड तरीके झालीने तेना वडे शत्रु उपर एक एवो प्रहार कर्यो जेथी ते राजेन्द्र अने विद्याधरेन्द्रने माटे पण असह्य अने प्राणान्तकर एवी भयंकर पीडानो तरत ज भोग बन्यो. एटले ध्रूजता शरीरे भयभीत थईने तरत ज शूरातन त्यजीने जवरो पोकार करतो, वेदनाथी विकळ बनेली प्राणशक्ति वाळो ते अधम राक्षस अभिमान मूकी, लाजशरम छांडीने नाठो. (५९३–५९४). एटले आकाशमां रहेली असुर अने विद्याधरोनी सुंदरीओए हर्षथी पुलकित थईने श्वेत अने सुगंधी पुष्पोनी वृष्टि करी, जयघोष कर्यो, आनंदमां दुंदुभि वगाड्यां. यक्षे (?) प्रदर्शित करेला क्रोधने जेणे कचडी नाख्यो छे तेवो सनत्-कुमार (५९५), शरदना चंद्र जेवा यशना विस्तार वडे जगतने ऊजळुं करीने पूर्वोक्त सुंदरीने मनमां धरतो केटलेक रस्ते आगळ चाल्यो त्यां तेणे देवांगना जेवी अने देव अने असुरनी तरुणीओमां सर्वश्रेष्ठ महिमा वाळी एवी एक उत्तम सुंदरीने पोतानी सामे आवती जोई. (५९६). एटले विस्मित मने आगळ वधता कुमारे पोतानी सामे पेलीना जेवी बीजी सात बाळाओ नंदनवननी वच्चे रहेली अने उत्तम रूप, गुण अने विनय वाळी दीठी. ते पछी प्रथम जोयेली तरुणीने तेणे कह्युं, 'हे मुग्धा, मने वात कर, आ सुंदरीओ कोण छे ?' (५९७). सहेज हसी, सहेज अंग नमावी, पगनी आंगळीथी भोंय खोतरती, कमळ जेवा हाथ वडे वस्त्र समारती, जेना कोमळ होठ स्फुरे छे, जेनी आंखमां आनंदाश्रु चमके छे, माथा पर जेणे वस्त्र सज्युं छे तेवी ते मुग्धा त्रूटक अक्षरे, गद्गद स्वरे कांईक वात प्रकट करवा लागी (५९८), "हे सुभग, अत्यारे मारा उपर कृपा कर. आ ज आंबावाडीथी तद्दन नजीकना प्रदेशमां आवेलुं अने देवो, किन्नरो अने मनुष्यथी पुजाता मदनमंदिरथी गौरववंतु बनेलुं, प्रियसंगमअभिलाष एवा नामे प्रसिद्ध, घणुं ज समृद्ध विद्याधरनगर छे. (५९९). त्यां आवीने केटलोक काळ विसामो लईने तुं तारा शरीरनो भारे थाक उतार; एटले आपोआप ज तमने आ वृत्तांतनी जाण थई जशे.' पछी ते ज सुंदरीओना कंचुकीए देखाडेला रस्ते ते कुमार सर्वांगे, विस्मय पामतो, राजमहेलमां गयो. (६००).

पछी ते नगरना श्री भानुवेग नामना राजाए ऊभा थई संमुख आवीने गुण-रत्नना सागर समा ते कुमारनो आदर कर्यो, पोताना हाथे तेने सिंहासन उपर बेसार्यो अने एम मोटो सत्कार करी, मस्तक पर अंजलि रचीने कह्युं, 'मारी आठ पुत्रीओ साथे विवाह करीने तुं मने संतुष्ट कर. (६०१). कारण के ज्यारे अमे अमारी पुत्रीओना विषयमां चिंतातुर हतां त्यारे अमने श्री अर्चिमाली नामना मुनिराजे (जेमने विनयपूर्वक सुरेन्द्र प्रमाण करतो) कह्युं हतुं—जे माणस असिताक्ष यक्षना भारे दर्पने हरशे ते अवश्य तारी आठे य पुत्रीओनो पति थशे.' (६०२). एटले प्रकटेल प्रेमभावने लईने शोभती अने तरुणीओमां उत्तम एवी ते आठ कुमारीओने कुमार, त्याने त्यां ने ते ज क्षणे मोटी धामधूमथी परण्यो. पछी कंकणबंधन वगेरे विवाहोचित बधो विधि करीने, नववधूओनी साथे कुमारे रति-मंदिरमां प्रवेश कर्यो. (६०३).

पछी अतिशय थाकेलो ते राजरीतिथी रतिमन्दिरमां सूतो अने तरत ज तेने घोर निद्रा आवी गई. पछी स्वजनमित्र विनानो ते सवारे पंखीओना कलरवथी जागी ऊठ्यो त्यारे तेने ए नगर, परिचरो के नववधूओ कशुं ज न देखातां थयुं (६०४)– 'शुं ए स्वप्न हतुं ? के मारो बुद्धिभ्रम हतो ? अथवा तो........थयुं ? के पछी कोईए इंद्रजाळ देखाड्युं ? पहेलांना मारा नगर, स्वजन अने प्रियतमाना वियोगथी दुःखी थयेलो होवा छतां हुं आठ पत्नीओ साथे संबंध थतां कांईक आनंद पाम्यो हतो, पण मारा मस्तक पर तो जाणे के पुष्पित वृक्षनी शाखा ज एकाएक तूटी पड.' (६०५). आम घर, परिजन अने प्रियतमाओथी वियुक्त अने साव भोंय पर ज बेठेला कुमारने काने अंतरीक्षमांथी ओचिंतो अवाज पड्यो— 'हा सखी ! हा प्रियतम ! हा माता ! हा अश्वसेन राजाना पुत्र मारा भावी पति सनत्कुमार ! मारी रक्षा कर !' (६०६). एटले, "हे सुलोचना, पिताथी, माताथी, सखीओथी, तारा इष्टदेवथी अथवा तो अश्वसेन राजाना पुत्र ए निर्माल्य मानवथी शुं वळवानुं छे ? हे विशालाक्षी, तुं कामातुर चित्ते देव असुर अने मनुष्यनो मद मथनार एवा मारुं स्मरण कर, जेथी लक्ष्मी (?) तने तृप्ति करावे. (६०७). एटले 'मारामां अनुरक्त ए सुंदरीनुं हरण करी रहेला अने एम कोपेला यमनी दृष्टिए पडेला क्या पापीए, कुबुद्धिथी दांत गणवाना उत्साहमां सिंह-शिशुना मोंमां पोतानो हाथ नाख्यो छे ?' एम विचारता कुमारे अंतरीक्ष तरफ

नजर नाखी. (६०८), परंतु त्या कशुं देखायुं नहीं एटले, 'आ पण पहेलांनी जेम कशुं इन्द्रजाळ जेवुं छे' एम जाणीने, ए ज तरुणीने हृदयमां राखीने ते वनमां भमतो हतो त्यां ते अघोर अटवीमां, जाणे के स्वर्गमांथी पड्यो होय तेवो, महा-मूली शोभाना अवतार अने त्रिभुवनना सार समो एक प्रासाद तेणे जोयो. (६०९)

एटले विस्मित थईने, 'सोनी भेळा पचास' एम जाणीने धीरे धीरे तेणे ते प्रासादमां प्रवेश कर्यो. एटले तेणे एक महासतीने आ प्रमाणे मृदु, मधुर स्वरे बोलती सांभळी,—'हे कमळगर्भ समा गौर अंग वाळी, प्रणाम करनारनो मननी इच्छा पूरी करनारी, वंदन करता नरेन्द्र अने देवेन्द्रना शत्रुओनो सर्वांगे नाश करनारी, तारो जय हो ! हुं । खु ! हे दुरितहरणी ! ओम् ! ह्रीं ! हि ! इष्ट फळ देनारी, जादुई खड्ग, गुटिका अने अंजन साधी आपनारी, फट्कारथी शत्रु-समूहने हणनारी, प्रणाम करनारने आनंद आपनारी, हे योगेश्वरी ! जेओ विधिपूर्वक भक्तिथी तारां चरणोमां नमे छे, तेमने तुं तेमना स्वप्नमां पण न होय तेवुं असाधारण फळ आपे छे. (६१०–६११). हुं तने घणा विनयथी अंग नमावुं छुं, तो अभ्यर्थना करनाराओने चिंतामणि सभी हे देवी, जेनो संग दुर्लभ थई गयो छे तेवा मारा ते प्रियतमना मुखकमळनुं मने दर्शन कराववानी तुं केम कृपा करती नथी ? पोतानां गुणवान अने सदा विनयी बच्चांओथी अंतर राखवुं मातापिताने घटे ?' (६१२). एटले पूर्वे जोयेली अने अत्यारे हृदयमां स्फुरती सुचरिता हरिणा-क्षीने विशेषे स्मरतो कुमार, 'हं, हं, प्रगटेला गाढ अनुरागथी दुःखी अने दसमी दशाए पहोंचेली आ कोईक तरुणी गौरीना चरण पासे अति दुर्लभ एवा पोताना कोईक प्रियतमने मागी रही छे—जेम अत्यारे पेली बाळा मने मागी रही हशे तेम.' (६१३) ए प्रमाणे विचारतो जेवो ते चारपांच डगलां आगळ भरे छे, तेवी ज शुद्ध शीलवाळी अने जगप्रसिद्ध गुणो वाळी ते मुग्धानी गाढ भक्तिने परिणामे तेनी समक्ष जाते ज प्रगट थईने गौरी देवीए ज आ प्रमाणे कह्युं, 'हे चंद्रमुखी, तारो गुणनिधान प्रियतम आ आव्यो.' (६१४). एटले अपमानित बनी होय तेम ते कृशांगीए देवीने कह्युं, 'हे देवी मारो प्रियतम हाथमां ज छे एम कहीने तुं तेने प्रकट तो करती नथी, तो एम तुं मने केटलुं छेतरीश ? जो हुं कुरुवंशना गगनचंद्र सनत्कुमारने नजरे जोउं, तो हे भगवती, तुं जाणजे के हुं तेनी शी शी सेवा नहीं करुं ?' (६१५).

आम सांभळतां ते कुरुकुळमंडननुं सर्वांग हर्षथी विकसित थयुं, वदनकमळ पुलकित बन्युं (अने ते बोल्योः), 'हे चंद्रमुखी, जो ! जो ! आ हुं तारो शत्रुमर्दन प्रियतम आवी पहोंच्यो. मदनविकारने प्रकट करतो आ हुं ते ज आव्यो ने ते ज छुं, तो तारा मनमां तें जे नक्की करी राखी होय ते सेवा तुं कर. (६१६). अथवा तो कृपा करीने हे सुंदरी, तुं मने कहे के जेने तें प्रियतम तरीके माग्यो तें कुरुकुळनो यशकळश कोण छे ?' एटले स्वभाविक लज्जा अने आर्जव धरती ते कन्या बोली, 'साकेतपुरना अधिपति समरसिंह नृपतिनी, अने तेनी खेरेखर रूपवती प्रियतमा चंद्रयशानी (६१७) हुं सुनंदा नामे पुत्री छुं. एकवार कोई एक दूते आवतां वेंत मारा पितानां चरणमां मस्तक नमावीने सविनय विनंती करी : हस्तिनापुरना स्वामी अश्वसेन नृपतिनो अने जगतनी सुंदरीओनी विजेता तेनी प्रियतमा सहदेवीनो सनत्कुमार नामे पुत्र छे. ते जगतमां श्रेष्ठ, चक्रवर्तीनी लक्ष्मीनो स्वामी, महान गुणरत्नोनो सागर, सौभाग्यवानोना मस्तकना तिलक समो, शत्रुओना दर्पने दळवाने आतुर, पूर्णिमाना चंद्रनी जेम बधी निर्मळ कळानुं धाम, अने रूप अने यश वडे जगतमां सर्वाधिक छे. (६१८–६१९). एटले जो सुनंदानो संबंध ते नररत्न साथे न थाय, तो नक्की विधाता हार्यो ज (एम मानवुं). एटले मारा पिताए ए खेरेखर योग्य छे एम निर्धार करीने पोतानी सेना साथे प्रयाण कर्युं, अने मने साथे लईने श्री हस्तिनापुर नगरीमां सहर्ष प्रवेश कर्यो. (६२०).

एक प्रसंगे सखीओथी वींटळाईने हुं नगरना उद्यानमां मदनपूजा माटे गयेली, त्यारे में सखीओना उपहास वच्चे प्रकटरूपे रहेला मदननी पूजा करी. ते पछी हुं ज्यारे मारे घेर गई त्यारे भाग्ययोगे हुं अतिशय दुःसाध्य व्याधिनो भोग बनी. (६२१). पछी अनेक मंत्रविदो अने तंत्रविदोथी पण मारा शरीरनी रक्षा न थई शकी, एटले में जेमतेम करीने ते रात वितावी अने सवारे ते ज हृदयंगम मदनमंदिरमां हुं पहोंची, पण में त्यां प्रकट थयेला पेला अनंगने जोयो नहीं तेथी हुं सर्वांगे सविशेष दुःखे दुःखी थई. (६२२). परंतु त्यां, ते प्रकट थयेला कंदर्पनो वेश धरीने मारी सखीए त्यारे जेमतेम करीने मारी एवो मनोविनोद कर्यो, जेथी करीने हुं तरत ज पाछला दिवसना व्याधिथी मुक्त बनी. पण ते पछी एक दुष्ट अश्व अश्वसेन राजाना पुत्रने हरी गयो, एटले आखुं जगत दुःखी दुःखी थई गयुं. (६२३).

ए वृत्तांत सांभळीने मारा देहे सविशेष दुःख व्यापी जतां हुं मूर्छा पामी. सखीओ जेमतेम करीने मने घेर लई गई. ते पछी जे कांई बन्युं ते हुं पोते ज नथी जाणती, (मात्र एटलुं ज जाणुं छुं के) मने विलाप करतीने कोई खेचरे हरीने अहीं लावी मूकी छे एटले हुं फाळ(?) चूकेली वानरीनी जेम अहीं रहुं छुं. (६२४). पेलो अधम खेचर अत्यारे क्यक बीजे गयो छे एटले मातापिताए दीधेला मारा प्रियतमनी मागणी करती हुं गौरीदेवीना चरणकमळने प्रणाम करी रही छुं.' एटले ताळी दईने हसतां हसतां कुमारे कह्युं, 'हे विशालाक्षो, समरसिंह राजानी पुत्री, पेलो मदन ते आ हुं ज छुं ते तुं केम जोती नथी ?' (६२५).

एटले, मन्मथ सदाय विषम प्रकृतिनो होवाथी, ए चंद्रमुखी लज्जाथी व्याकुळ अने प्रेमथी अभिभूत थई जवाथी समयोचित सत्कारविधि करवानुं ते वीसरी गई. 'पेली मारुं मन हरवा वाळी ते आ ज छे' एम विचारीने विस्मित मन वाळा कुमारे ते सुंदरीने कह्युं (६२६), 'संभ्रम तजीने, अपमानने बाजु पर राखीने, कृपा करीने अने पूर्वे जे प्रेम तें पोतानी सखीओने उद्देशीने त्यारे प्रगट कर्यो हतो ते प्रेमनुं स्मरण करीने, हे विशालाक्षी, तुं व्यापेला प्रेमानलथी तप्त बनेलां अंग वाळा मने तारुं स्नेहसर्वस्व केम आपती नथी ? (६२७). 'सुंदरी, नगरना उद्यानमां क्रीडा करवाने गयेला एवा मारा कंठमां ते मदन समजीने कमळनी माळा पहेरावेली, अने शुद्धभावे पूजा करेली. तथा सखीए मारो वेश लीधेलो छे (एम समजीने) तें मारी साथे आलिंगन वगेरे क्रीडा आरंभेली ते तुं केम याद करती नथी ?' (६२८). ए प्रमाणे ते कुमाररत्ने कहेलां वचनोथी तेनुं मुख लज्जाथी नीचुं नमी गयुं. पोताना जमणा हाथे तेना वदनकमळने ऊंचुं करीने कुमारे कह्युं, 'सुंदरी, जेम अधन्यना घरमां चिंतामणि आवे, तेम आ वनमां दुर्लभ एवी तुं मने मळी तेथी हुं कृतार्थ थयो छुं. तो पहेलां जेवो स्नेह मनमां धरीने तुं प्रसन्न थईने मारी सामे जो'. (६२९).

एटले विकसित वदने ते मुग्धा ज्यां हजी कांईक बोलवा जाय छे, त्यां तो दुर्भाग्ये अन्तरिक्षमां रहेला पेला खेचरे तेमने जोयां, अने रोषथी रातां लोचने ते बोल्यो, 'अहाहा, जीवता फणधरना चूडामणिनो कोण स्पर्श करी रह्यो छे ? कोण जागता सिंहनी केशवाळी ग्रहण करे छे ?' अने कठोर चित्कार करता ते खेचरे कांपती देहलता वाळी ते उत्तम तरुणी पासेथी तरत ज कुमारनुं अपहरण कर्युं.

'आने हुं मेरुपर्वतना शिखर उपर पडतो मूकुं जेथी पारकी स्त्री पर मन दोडाववाना पापनुं फळ चाखतो ते शतखंड थईने मृत्यु पामे.' (६३१) एम विचारतो ते पापी खेचर जेवो भ्रमर अने गोशृङ्गना खंड जेवा नील नभतलमां थईने जई रह्यो हतो, तेवा ज, ऊंचेने ऊंचे चडता जवाथी मोटामांथी नानां, वधु नानां अने तेथी पण नानां वनतां जतां नदी, पर्वत अने नगरने जोईने 'मारी नजरमांथी छटकीने आ क्यां जवानो छे ?'.एम विचारता कुमारे (६३२) ते खेचरने निर्भयतापूर्वक कपाळ उपर वज्रकठोर मुक्को मार्यो. एटले गळता रुधिरथी मलिन बनेलो, आक्रंदना पडघाथी आकाश, पर्वत अने पृथ्वीमंडळने भरी देतो, जेना मोंना पोलाणमांथी जीभनो लांबो सर्प वहार नीकळी पड्यो छे, अने जेनो दर्प गळी गयो छे तेवो खेचर कोने सुभग लागतो (!) न हतो ? (६३३).

जाणे के कुमारना बीजा प्रहारथी भयभीत थईने ते अधम खेचरनो जीव तरत ज झडपथी नीकळी गयो. एटले ते खेचरना शबनुं मुख जोवा न इच्छता सूर्ये जईने अस्ताचळना शिखरे आवास कर्यो, अने शत्रुनो नाश करीने पछी पोतानी प्रियाना संभाषणने संभारता ते :कुमारने पण रात पडतां, खेचरना वधना प्रसंगथी जाणे के क्रोधे भरायो होय तेम धृष्ट कामदेवे हाथमां पकडेल कुमुद रूपी भयंकर धनुष्ययष्टि वडे छोडेल चंद्रकिरण रूपी धारदार शरसमूहथी सर्वांगे एवो तो वींधी नाख्यो के तेने पोतानुं अंग असुखथी ग्रस्त छे के सुखथी तेनुं भान न रह्युं. (६३४–६३५).

' पेला हताश शत्रुने तो रमतमात्रमां कचरी नाख्यो, पण आ भुवनदुर्जयने केम जीतवो ?—हां, हां, आ शत्रुने जीतवानो उपाय पण मने सूझी गयो. जो हुं जीवतो ने सगी आंखे ते हरिणाक्षीने जोउं, तो आ मदनरिपुने तरत ज तिलांजलि दई दउं'. (६३६). ए प्रमाणे विचारतो कुमार ते वनमां केटलोक समय शोधाशोध करीने जेमतेम करीने पेला ज महेलमां आवी पहोंच्यो. एटले ते चंद्रमुखीए संभ्रममां उत्तरीय संकोरीने, हसीने, सामे ऊठीने, हर्षाश्रु सारतां गद्गद वचने बनेली वात पूछी. (६३७).

एटले तेणे शरच्चंद्र जेवा मुख वाळी अने गाढ स्नेह धरती ते सुंदरीने पूर्वोक्त बधी वात टूंकमां कही. ते पछी जाणे के चक्रवर्तीनी लक्ष्मी पाम्यो होय तेम हर्षप्लावित चेष्टा वाळो कुमार ते सुनंदासुंदरीनी पासे बेठो. (६३८). 'अरे रे चंद्र, तुं तारे हवे भले प्रकाशे. मलयानिल, तुं पण खुशीथी वाय. आम्रवृक्ष, तुं पण भले विस्तरे. अली कोयल, तुं पण टहुक अने भ्रमर, तमे पण गुंजारव प्रगटावो.

अरे, निर्लज्ज कामदेव, तुं पण हवे माटी थजे. आ बाला तमारा सौना मस्तक पर वज्रपात करशे (६३९). अने आव, सुलोचना, तने कांईक वात कहुं' एम कहीने ज्यां ते तेने गाढ आलिंगन आपे छे त्यां तो कुमारे खेचरने संहार्यानो वृत्तांत सांभळीने ते खेचरनी संध्यावलि नामनी नानी बहेन त्यां आवी पहोंची. (६४०). परंतु कुमारना मुखचंद्रने जोईने अमृतरसना सिंचनथी क्रोधाग्नि क्षीण बनी जतां तेनुं शरीर मदनाग्निए तपी गयुं, अने ते अग्नि सर्वांगदुःसह बनी गयो. एटले कुमार संध्यावलिने गांधर्वविधि अनुसार परण्यो अने एम तेने पोताना पुण्यबळे मेळवी. (६४१) पछी संध्यावलि सुंदरीए सैंकडो सुकृतथी ज प्राप्त थाय तेवी, मन गमती वस्तु साधी आपनारी अने पाठ करतां ज सिद्ध थाय तेवी प्रज्ञप्ति नामनी विद्या कुमारने आपी. कुमारे पण अपूर्व उत्साह प्रगट करीने, शिखवाडेला विधि प्रमाणे ते विद्या तरत ज साधी (६४२).

ए समये क्षुब्ध चित्त वाळा अने श्वासे भर्या बे खेचरकुमार आकाशमार्गे त्यां आवी पहोंच्या, अने आदरपूर्वक कुमारना चरणकमळमां प्रणम्या. एटले 'आ वळी शुं ?' एम विचारमां पडी गयेला कुमारे पूछ्युं, 'तमे कोण छो भला ? क्यांथी आवो छो ? आम उतावळा उतावळा केम आव्या ?' (६४३). एटले खेचरो बोल्या, 'हे नररत्न, वैताढ्यपर्वतना शणगार रूप गांधर्वनगरीना स्वामी चंडवेग अने भानुवेग नामना खेचरराजाना चंद्रसेन अने हरिचंद्र नामना अमे पुत्र छीए. एमणे आ रथरत्न आपीने अमने तमारी पासे मोकल्या छे, केम के तेमणे सांभळ्युं के अति गर्विष्ठ, अनेक समरांगणोमां कीर्तिमान, अने विरोधीओनो विजेता एवो अशनिवेग नामनो खेचरराज पोताना पुत्रने मार्यानो वृत्तांत सांभळीने रोषथी रातां लोचनवाळो, खेचरसेनाथी आकाशप्रदेशने छाई देतो अने विद्याधरोना मनमां धाक पेदा करतो तमारा ऊपर चडी आवे छे. (६४५). तो कृपा करीने, हे नररत्न, तमे आ रथरत्न उपर आरूढ थाओ'.

एटलामां विद्याधरराजा चंडवेग अने भानुवेग पण मोटी सेना साथे त्यां आवी पहोंच्या. हजी तेओ कुमारनी साथे सुखदुःखनी वातो करता अने रणरसथी रोमांचित थता केटलोक समय वितावता हता (६४६), त्यां तो पोताना पुत्रनो वृत्तांत सांभळीने जेनो रोष ऊछळ्यो छे, अने जमनी जेम जे त्रणे भुवन माटे भयंकर छे तेवो अशनिवेग आडंबरपूर्वक पोताना राज्यना

श्रेष्ठ मांडलिको अने सचिवोने बोलावीने कहेवा लाग्यो, 'जलदी चालो, पुत्रना घातक कुमारना बळनुं मर्दन करीने अने तेनो संहार करीने ज आपणे आजे जमीशुं'. (६४७). एटले मंत्रीवर्यो बोल्या, 'स्वामी, शत्रु नाना छे. एम मानीने तेनी अवगणना करवा जेवुं नथी. तेम एकनो शुं हिसाब—एम तेनी उपेक्षा करवा जेवुं पण नथी. केम के वृद्धि पामतो एक अग्निकण पण समग्र लोकने बाळी दे, अने एक ज सिंह गजघटाने रमतमां हणी नाखे. (६४८). ए धरतीनो मानवी छे अने हुं तो विद्याधरचक्रवर्ती छुं, एम समजीने तमे शत्रुनो तुच्छकार न करता. शुं रामे रावणनो अने कृष्णे कंसनो नाश नहोतो कर्यो ? एटले बळवान राजाओए पण शत्रुनी शक्तिनो क्यास काढीने स्थिर चित्ते बराबर विचारीने पछी संग्राम माटे उचित आरंभ करवो जोईए.' (६४९).

ए प्रमाणे विविध उत्तम वचनो बोलता ए मंत्रीवर्योने अवगणीने आगळना अनेक संग्रामोमां शत्रुओ पर मेळवेला विजयनो संतोष धरता ए खेचरराजे, जाणे के कोपेलो विधि तेने दोरडे बांधीने खेंचतो होय तेम, चतुरंग सेना साथे अने चोतरफ वागता ऊठता रणदुंदुभिना घोष साथे प्रयाण कर्युं. (६५०). थई रहेलां जातजातनां मोटां मोटां अपशुकन तेने वारतां होवा छतां पुत्रमरणना अशुभ अंधकारे जेनी आंखोने आवरी छे तेवो ते खेचरराज विमाननो वेग वधारीने जलदीथी ते महान अटवीमां आवी लाग्यो. ए वखते खेचरराजो सहित ज्यां कुमारे ऊंचे जोयुं त्यां तो आकाशमां त्रिभुवनने भयंकर एवो कोलाहल तेणे सांभळ्यो. (६५१). 'आ शुं ब्रह्मांड फाटयुं ? के कोई वेताळ कोप्यो ? अथवा एकाएक समुद्र खळभळी ऊठयो—जेथी करीने प्रलयना मेघ समो गंभीर शब्द, जाणे के जगत आखामां रमखाण मच्युं होय तेवो, संभळाय छे !' ए प्रमाणे खेचरराजो सहित सनत्कुमार विचार करी रह्यो हतो त्यां तो ते विद्याधरचक्रवर्ती तरत ज आवी पहोंच्यो. (६५२).

एटले क्षणार्धमां ज कवच पहेरीने ते बंने विद्याधरराजा चंडवेग अने भानुवेग पोतानां सैन्यो साथे पेला खेचरेंद्रनी पासे पहोंच्या. परंतु एक क्षणमां ज अशनिवेगे, झंझानिल वादळाने विखेरी नाखे तेम, ते बंनेने छिन्नभिन्न करी नाख्या. (६५३). तेमनी नासती सेना साथे बंनेने भागता जोईने झडपथी आगळ वधीने, 'बीशो नहीं, घडीक जुओ, हुं तेना दर्पनुं मर्दन करीश.' एम कहीने प्रज्ञप्ति विद्याना बळे चतुरंग सेनानुं निर्माण करीने खड्गोना खणखणाटथी शत्रु विद्याधरोने गभरावता (६५४), हाथमां पकडेली तीक्ष्ण अने पातळी तलवार वडे शत्रुओना लाखो

हाथीओना कुंभस्थळोने निर्दयपणे चीरता, धनुष्यमांथी बाण छोडीने घाथी ऊछळती रुधिरने छोळे आकाशने लाल करी देता, मुद्गरना प्रहारथी सुभटोनां माथां छूंदता (६५५), शक्ति, भाला, शल्य, वावल्ल, नाराच, मुसुंढि, गदा, वज्र, चक्र, कर्तरी अने कुंत वडे हाथी, घोडा, अने सुभटना समूहने अनेक प्रकारे हणता ते संग्रामदक्ष कुमारे क्षणमात्रमां ते अशनिवेग विद्याधरने वश कर्यो. ते पछी ते कुरुवंशना गगनमां पूर्णपणे प्रकाशतो चंद्र, जेणे पोतानां पराक्रमथी सुर, असुर अने खेचरनां सुभटोना चित्तने तुष्ट कर्यां छे अने जेनो अनन्य कीर्तिकलाप आखा भुवनमां विस्तर्यो छे तेवो, देवो अने विद्याधरोनी तरुणीओ वडे करातो पंचविध पुष्पोनी वृष्टि अने चोतरफ थता मधुर आलापनी वच्चे, विद्याधरे आपेला उत्तम रथ पर आरूढ थईने पहेलांना ज महेलमां आवी पहोंच्यो. (६५६–६५७).

ते पछी जेमनो धर्मनी अने कर्मनी बाबतोमां निर्मळ विवेक छे तेवा, अतिशय हर्षथी रोमांचित थयेला खेचरराज चंडवेग अने भानुवेगे ते ज क्षणे विनयथी नमीने कहेला वचनने मान आपीने शत्रुकुळनो संहारक सनत्कुमार पोतानी बंने पत्नीओने साथे लईने गांधर्वपुर गयो. (६५८). अनुक्रमे तेणे एकेएक विद्याधर-राजाने जीत्या अने एम ते विद्याधरचक्रवर्ती बन्यो. लाखो विद्याओ तेणे साधी. मागनाराने यथेष्ट आप्युं. एक दिवस विद्याधरराजा चंडवेगे तेने कह्युं, 'स्वामी, तुं आखा जगतनी मननी इच्छा पूरी करे छे (६५९), तो कृपा करीने तुं मारी आ सो कन्याओने परण, अने आ मारुं राज्य पण स्वीकार, जेथी करीने हुं मोक्षने मार्गे प्रयाण करुं. कारण के राज्यनी धुराने धारण करी शके तेवा पुत्रना दर्शन न थतां, हुं आटला वखतथी तारी ज प्रतीक्षा करी रह्यो हतो. (६६०). पोताना अतिशयज्ञानथी आखा जगतने जाणनार अर्चिमाली नामना अहीं आवी पहोंचेला मुनिवरे मने कह्युं हतुं, 'अश्वसेन राजाना कुलगगननो चंद्र अने जगतमां सर्वोत्तम नर सनत्कुमार चक्रवर्ती तारी सो कन्याओनो अने भानुवेगनी कन्याओनो पण प्रियतम पति थशे. (६६१). तेनी कृपाथी तुं पण तारा कुटुंब अने राज्यना विषयमां निश्चित थईने सद्धर्मनो साधक बनीश'. एटले में कह्युं, 'हे साधुवर्य, तेने कई रीते ओळखवो ते मने कहो'. एटले मुनिवरे आदेश दीधो, 'घोडो जेनुं अपहरण करीने महान अटवीमां नाखशे, त्यांथी जेणे पूर्वकृत पुण्यना माहात्म्य थी प्राप्त करेला उत्तम चरित्र वडे जगतने जीत्युं छे अने उचित कार्यमां जे दक्ष छे तेवो कम (क्ष यक्ष जेने पोताना हाथे ऊंचकीने) मानससरोवरमां मूकशे, अने जे पोताना शत्रु असिताक्ष यक्षना दर्पनुं मर्दन करशे, ते तारी पुत्रीओनो हृदयप्रिय थशे एमतुं

निश्चे जाणजे'. (६६२-६६३). एटले में कह्युं, 'हे मुनिराज, एवा ते नररत्ननो असिताक्ष यक्ष शा माटे वेरी बन्यो ?' एटले सूरिए कह्युं, 'खरेखरो तो प्राणीमात्रनो शुभ अने अशुभ कर्मथी प्रेरायेलो आत्मा ज आ जीवलोकमां तेनो मित्र के शत्रु बने छे. तो हे खेचरराज, आ बाबतमां पण तेवो ज हेतु छे ते तमे जुओ. (६६४) :

कनकपुरनगर नामना द्वीपमां पोताना तेजे सूर्यने पण जीतनार, कांतिथी प्रकाशतो, शत्रुमर्दन, याचकप्रिय, दानप्रिय, धीरचरित, दुर्नयखंडन, शरच्चंद्रनी जेम अनेक गुणरत्नोनो निधान, अने जगप्रसिद्ध विक्रमयश नामनो राजा हतो. (६६५). तेने उत्तमकुळमां जन्मेली, शरच्चंद्र जेवा यशवाळी, कुंदकळी समी दंतपंक्ति वाळी, विकसता मुखकमळ वाळी, त्रस्त मृगशिशु समां नेत्र वाळी, रतिदक्ष पांच सो राणीओ हतो. तेमनी साथे राजा विपयसुख भोगवी रह्यो हतो. (६६६). त्यां सर्वत्र लोकोमां ख्याति धरावतो नागदत्त नामे एक सार्थवाहपुत्र हतो. तेणे पोताना धन, धान्य, सुवर्ण ने रत्न वडे कुवेरना वैभवने पण हसी काढयो हतो. नगरलोकोमां ते सर्वाधिक बुद्धिशाळी हतो. पोताना चंद्रनिर्मळ गुणोने लाईने तेणे खूब यश अने कीर्ति प्राप्त कर्यां हतां. ते असाधारण रूपवान अने स्थिर प्रकृतिनो हतो. (६६७). तेने विष्णुश्री नामे जगतमां जाणीती हृदयवल्लभा पत्नी हती. ते पृथ्वीना उत्तम शणगार जेवी ने असाधारण लावण्यना निधि जेवी हती. देवता अने गुरुना चरणकमळने ते पूजती. तरुणोना मनरत्न निःशंकपणे हरनारी ते नवयौवना, मृदुभाषिणी, गंभीर चाल वाळी अने महान गुणरत्नोथी समृद्ध हती.(६६८).

एक दिवस सुंदर शणगार सजीने सवारीमां पसार थता राजाए रस्तामां सहजपणे देवांगना पर विजय मेळवी लेती एवी विष्णुश्रीने जोई. तेने जोतां ज तेने खूब काम व्यापी गयो. तेनां अंगोपांग विकळ थई गयां. संकल्पविकल्प करतो ते विचारवा लाग्यो (६६९), 'जो हुं आजे आ रतिने जीतनारी चंद्रवदना तरुणीनी साथे विपयसुख नहीं भोगवुं तो असुखथी व्याप्त एवो हुं मरण ज पामीश एम मने लागे छे. दूर रहेली प्रियतमाथी मनने कशो संतोप न थाय; सूर्यास्त थतां चक्रवाक दुःखी थाय छे तेमां बीजो कोई दोष कारणभूत छे खरो ?'(६७०). एटले माणसो रोकीने ते बाळाने पोताना महेलमां लवरावीने अने तेनी विविध आगतास्वागता करावीने राजाए 'जगतमां आ तरुणी सर्वश्रेष्ठ छे' एम विचारी तेने अंतःपुरमां नाखी. अनुकूळ अवसरे प्रवृत्त थईने राजाए विष्णुश्रीनो एवी रीते उपभोग कर्यो जेथी करीने तेनो मदनाग्नि शांत थईने नामशेप बनी गयो. (६७१).

हवे नागदत्त 'आ राजानुं कृत्य छे' एम सांभळीने राजानी पासे मागणी करवा छतां पोतानी पत्नी पाछी न मेळवी शक्यो. तेना विरहमां तेने मित्रो ने स्वजनोथी भरेलुं पोतानुं घर भूते उजाड्युं होय तेवुं लागतुं. सज्जनो तेनो शोक करता, तो दुर्जनो तेनी निंदा करता. आखी नगरीमां रझळतो ते केवी केवी जातनी चेष्टा नहोतो करतो ? (६७२). नोकरचाकर नासी गया. मित्रो ने स्वजनो तेने तजी गया. तेनुं मान नष्ट थई गयुं. दुर्जननां मन प्रसन्न थयां. सज्जनो दुःखी थया. छोकरांओ तेनी पाछळ टोळे वळवा लाग्यां. खावुं, पीवुं ने शरीरशणगार तेणे तजी दीधां. 'विष्णुश्री तुं मने छोडीने क्यां गई ?' एम बोलता तेने क्यांक भमतो राजाए अने विष्णुश्रीए जोयो. (६७३). पण गाढ स्नेह होवाथी राजाए विष्णुश्रीने मुक्त न करी. हवे दुष्ट विधिना निर्माणथी राजानी बीजी बधी राणीओए अमर्शने लईने सज्जनोथी निंदित एवो औषधप्रयोग कर्यो, जेथी भोगोपभोगथी वंचित बनीने विष्णुश्री तरत ज मरण पामी अने एम तेना इहलोक अने परलोक बंने विफळ थयां. (६७४).

एटले तेना विरहे त्रणेय भुवनने तद्दन शून्य मानतो राजा ते ज क्षणे मूर्छा पाम्यो, तेनी आंखो मिंचाई गई अने मृत अवस्थामां रहेली विष्णुश्रीनी उपर ते पड्यो. मंत्रीओ हाहारव करवा लाग्या. नगरना महाजन विलाप करवा लाग्या, अने अत्यंत शोकग्रस्त बनीने राजानी चिकित्सा करावचा लाग्या. (६७५). कांईक चेतना प्राप्त थतां राजा अतिशय दुःखने लीधे अत्यंत चित्तविकळ बनी गयो. ते घडीकमां ऊभो थतो, घडीकमां सूई जतो, घडीकमां हसतो तो घडीकमां दुःखद रुदन करतो. पोतानी प्रियतमा भोजन लेती न होवाथी ते पण जरीके भोजन लेतो न हतो. तेनी पासेथी ते सहेज पण खसतो न हतो (६७६), तेम बीजा कोईने तेने अडकवा पण देतो न हतो. एटले प्रधानोए मंत्रणा करीने, गमे तेम करी राजानी नजर चूकवीने विष्णुश्रीने ऊंचकावी लईने जंगलमां नाखी दीधी. एटले पोतानी प्रियाने न जोता विक्रमयश राजाए भोजन अने जळ त्यजी दीधां अने आंसुथी डहोळायेली आंखे ते विलाप करवा लाग्यो. (६७७).

एटले पोतानी प्रियाने नहीं जोवाथी राजा रखे मरण पामे एवा भयथी सौ प्रधानोए मंत्रणा करी अने स्वामीनुं हृदय गमे तेम करीने स्वस्थ करवुं जोईए, एम विचारीने तेमणे तेनी समक्ष कह्युं, 'देव तमारी प्रियतमानां दर्शन करीने, कृपा करीने प्रसन्न चित्ते भोजन करो.' (६७८). एटले, 'क्यां छे ? क्यां छे ए चंद्र-

मुखी विष्णुश्री ?' एम बोली राजा ऊठ्यो, अने प्रधानोना कहेवाथी घोडे चडी, पोताना उत्तम परिचरोथी वींटळाईने त्रण लांघण पछी चोथे दिवसे ज्यां वनमां नखावी दीधेली विष्णुश्री पडी हती त्यां पहोंच्यो. (६७९). त्यां जेना शरीरमां भरपूर परुमां कीडा खदबदता हता, सेंकडो कागडाओए जेनी आंखो ठोली नाखी हती, जेने अनेक गीधो, सेंकडो शियाळो अने हजारो कूतराए करडी खाधी हती, जेना दांत गळी पड्या हता, मोढुं बीहामणुं बनी गयुं हतुं, दुर्गंधथी जे जुगुप्सित लागती हती, हजारो पंखीओ जेना पर तूटी पड्यां हतां, तेवी विष्णुश्रीने राजाए भाळी. (६८०). आथी वैराग्य स्फुरतां, 'धिक्कार छे, जेने कारणे में रमत-मात्रमां शीलरत्न कलंकित कर्युं, कुळक्रम त्यज्यो, बधा य सज्जनोने आघात आप्यो, प्राकृत आचरण कर्युं, अपयश फेलाव्यो, अने जगतमां मारी जातनी वगोवणी करावी, तेनी आवी मूरत थई गई ?' (६८१) ए प्रमाणे राजा विचारवा लाग्यो अने राज्यने पांजरा समुं, मित्रो ने स्वजनोने बंधन समा, विषयसुखने विषवृक्षना फळ समुं, तारुण्यने जळबिंदु समुं, जीवतरने हाथीना बच्चाना कान समुं, तरुणीओने दुर्गतिनी सरणि समी, चित्तने इन्द्रधनुष समुं, शरीरने बधी आपत्तिना घर समुं, तो प्रियजनना संगने अशुभ समो मनमां निर्धारीने, परमार्थने प्रीछीने, अर्धी क्षणमां ज उपर्युक्त बधी चीजवस्तु अने राज्यरिद्धि तजी दईने, पोताना समग्र कुटुंबने सुस्थ करीने, योग्य मुनिमहाराजनी पासे जईने, जे पापना प्रपंचने पामी गयो छे तेवा ते राजाए पुलकित बनीने तपश्चर्या लीधी. (६८२–६८३).

ए पछी पापकर्मोनी ते निंदा करतो, गुरुना उपदेशने अनुसरतो, प्रायश्चित्त अने तपश्चर्या सेवतो, मुनिने योग्य क्रियाओनुं अनुशीलन करतो, प्रयास करीने बधां शास्त्रोनो अर्थ ग्रहण करतो. ते एटले सुधी के टूंक समयमां ज तेणे बे प्रकारनी शिक्षानुं ज्ञान मेळव्युं, अने बधो अंतिम समयनो विधि आचरीने पोतानी दिक्षाने सफल करतो ते पोताना भारे पापसमूहनो क्षय करीने, पुण्यभार संचित करीने, आ औदारिक शरीर तजी दईने, त्रीजा देवविमानमां पहोच्यो. दुःखे त्रासेलो नागदत्त पण भारे पापसमूह बांधीने मरण पाम्यो अने चार प्रकारनी गति वाळा अने दुःखभारे भरेला घोर संसाररूपी वेरानमां पड्यो. (६८४–६८५).

पछी पुण्यथी रक्षित ते श्री विक्रमयश देव पोतानो अवस्थानी अवधि पूरी थतां शुभ दिवसे अने मुहूर्ते स्वर्गमांथी च्युत थयो अने सेंकडो पवित्र स्वप्नोना संकेतोथी सूचवातो ते रत्नपुरना कोईक मोटा शेठना घणा ज लवणवंता पुत्र

तरीके जन्म्यो, जेथी करीने शेठना मित्रो अने स्वजनो आनंदित थया. (६८६). ते पछी पिताए मोटी धामधूमथी पुत्रनुं स्वप्न अनुसार जिनधर्म एवुं नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते बाळक होवा छतां ये शरदना चंद्र जेवी निर्मळ बुद्धिने कारणे अने गुरुनी कृपाथी टूंक समयमां ज समग्र कलासागरनो पार पामी गयो, तथा जिनशासनना जाणकार तरीके पण तेनी नामना थवा लागी. (६८७). काळयोगे तेना पिता कीर्तिशेष बनतां बधा सज्जनोए भेगा मळीने तेने ज तेना पिताना घरनो स्वामी बनाव्यो. एटले पोताना अनेक गुणो अने धर्मिष्ठताने लीधे ते ज्ञातवान अने अनुपम कीर्तिरूपी गृहिणीने पाम्यो–जे धरती पर प्रकटपणे प्रसिद्ध हती अने जेना तेजथी दशे दिशा ऊजळी बनी हती. (६८८).

आ अरसामां संसारमां भ्रमण करीने नागदत्तनो जीव पण पोताना कर्मानुसार श्री सिंहपुरना कोईक ब्राह्मणने त्यां पुत्र तरीके जन्म्यो. अग्निशर्मा नामे जाणीतो ते क्रोधी प्रकृतिनो अने मत्सरी हतो. ते कुलाचार पाळतो न हतो अने वेदविद्याथी वंचित हतो. (६८९). एवा ज कोईक गुरुना चरणमां परिव्राजक व्रत लईने आखो धरतीमां रखडतो अने उद्दंड बालतपस्वीओमां धर्मपालन वडे कीर्ति रळीने ते विधिना आदेशथी रत्नपुरना राजाना महेलमां आवी पहोंच्यो. एटले तेना तपनो वृत्तांत सांभळीने नरवाहन राजाए (६९०) कह्युं, 'हे महर्षि तुं आजे मारे त्यां पारणुं करजे.' ते वेळा ते बालतपस्वीए त्यां रहेला जिनधर्मने जोयो अने रोषे धूजता ते नीचे कह्युं, 'हे राजा, हुं तारे त्यां अवश्य पारणुं करीश—शरत एटली के तारे मने भोंय पर नीचे मोढे बेठेला आ वणिकनी पीठ पर कांसानी तासळी राखीने तेमां ऊनी ऊनी खीर भोजनमां आपवी, केम के में आजे सवारे ज आदरपूर्वक आवो असाधारण नियम लीधेलो छे.' एटले विधिवश राजाए जिनधर्मनी अनिच्छा छतां तेने बहु दबाणथी कहीने केमेय करीने तेनी पासे ए कर्म कराव्युं. (६९१–६९२). एटले जेनुं नाम लेवा योग्य नथी तेवो ते नीच सहर्ष ते ऊनी ऊनी खीरनुं भोजन बहु ज धीमे धीमे करवा लाग्यो. पेलाए बतावेली रीते साव भोंय पर बेठेला जिनधर्मनुं चित्त पण पीठ पर मूकेली धगधगती कांसानी तासळीना दाहथी संसारथी उद्विग्न थई गयुं अने निर्मळ अने पवित्र विवेकपूर्वक ते भावना भावा लाग्यो (६९३), 'अरेरे जीव, तुं बीजा कोईनी उपर सहेज पण रोष म धरजे. आ दुःखदायक भवगहनमां एवो कोण छे के जे मनने अगोचर एवी जातजातनी आपदो न पामे ! पोते पूर्व भवमां रळेलां शुभ

अने अशुभ कर्मो सिवाय बीजा कोने कोईनुं सारुं के खराब करवानो जश के अपजश आपी शकाय ? (६९४). संसार सळगता घर जेवो छे, पण मोक्षपुर उपद्रवरहित छे. विषयो दुःखद छे, पण मोक्षमार्ग सुखद छे. शरीर चंचळ छे, पण धर्म अचळ छे. सद्गुरु सुखकारक छे, पण दुर्जन दुःखकारक छे. नियंत्रित न होय तेवो आत्मा शत्रु छे, पण ते ज ज्यारे नियंत्रित कराय त्यारे मित्र छे. तो हे जीव, बीजा उपर रागद्वेष छोडीने तुं रहे.' (६९५). आम मेरु जेवा दृढ अने सागर जेवा गंभीर चित्ते ते विचारतो हतो त्यारे पेला नीच बालतपस्वीए बहु ज धीमे धीमे ते ऊनुं ऊनुं मिष्टान्न आरोगीने सहर्ष जेवी ते तांसळी शेठनी पीठ उपरथी जेम तेम करीने उपाडी तेवी ज ते लोही, वसा, मांस अने स्नायु सहित ऊखडी आवी. (६९६).

'अरेरे, आ पापिया तपस्वीने धिक्कार छे, धिक्कार छे. एणे आवा धर्मनिधि पुरुषरत्ननी केवी विडंबना करी ? राजाए पण आनी पासे निष्कारण आवुं अकार्य केम कराव्युं ? विषम कर्मविपाक वाळा आ असार संसारमां करेलां शुभ-अशुभ कर्मोथी मोटामां मोटा माणसो पण परलोकमां छूटी शकता नथी.' (६९७) ए प्रमाणे बोलातां देव अने गुरुनां वचन रूपी परम अमृतथी जेनुं शरीर सिंचित थयुं छे तेवो, रागद्वेषथी मुक्त मन वाळो, अतिशय दुःखार्त जिनधर्म पोताने घरे आव्यो अने कर्तव्यमां आळस कर्या विना मित्रो अने स्वजनो सहित चतुर्विध संघने भेळो करीने ते कुळ उजाळनाराए तेमनां पूजासत्कार कर्या. (६९८). पोताना घरनी सारसंभाळनो प्रबंध करीने, मित्रो, स्वजनो, धन अने धान्य त्यजी दईने, हृदयमां जिनेश्वरनुं शासन धरीने, उत्तम तपश्चर्या अंगीकार करीने, पर्वतप्रदेशमां जईने अनशन ग्रहण करीने कायोत्सर्ग अवस्थामां पूर्व दिशामां तेणे पंदर दिवस गाळ्या. ते ज प्रमाणे बाकीनी त्रणे दिशाओमां पण तेणे पंदर पंदर दिवस गाळ्या. (६९९). ए प्रमाणे बे मासनी अतिशय दुष्कर उग्र तपश्चर्या करीने, ढेंक, कंक बगला, घुवड, कागडा, सींचाणा, शियाळवां, वरु, रानी बिलाडा, रींछ अने कूतरा वडे पीठनो भाग खवातो होवा छतां मेरुशिखर जेवुं स्थिर चित्त राखीने ते पवित्र पुरुष मरण पाम्यो अने सौधर्म कल्पमां ते सुरेंद्र थयो. (७००). पेलो अग्निशर्मा पण ए जातना पोताना दुश्चरित्रथी मित्रो अने स्वजनोने खिन्न करीने, बालतपस्या आचरवामां तत्पर अने ज्ञानीओथी तिरस्कृत थयेलो पोतानां दुष्कृत्योने साथे लईने मरण पाम्यो अने स्वकर्मना परिणामे ते सौधर्मकल्पमां सुरेंद्रनुं वाहन ऐरावत थयो.

(७०१). योग्य अवसरे तेने शणगार सजावीने आभियोगिक देवो सुरेंद्रनी पासे लई आव्या. तेने जोईने हाथीने भारे विषाद थयो अने चित्कारथी दिशाओ भरी दईने ते भडकवा लाग्यो. त्यां तो हाथमां वज्र अने अंकुश धरीने इन्द्र तेना पर आरूढ थयो. (७०२). एटले हाथीए पोताना शरीरनुं कद बमणुं कर्युं. इन्द्रे पण पोतानुं बमणुं कर्युं. हाथीए चोगणु कर्युं एटले इन्द्रे पण चोगणुं कर्युं. ते पछी बंने आठ गणा थया. वधु शुं कहेवुं ? भारे विषादथी ते हाथीने जलदी थकवीने इन्द्र ते वेळा तेना पर आरूढ थयो. (७०३). ए प्रमाणे पहेलां करेलां पोतपोतानां कर्म अनुसार जेमने निरन्तर भारे सुख अने दुःखनो अनुभव थई रह्यो छे तेवा ते इन्द्र अने ऐरावत बंनेना दिवसो वीतवा लाग्या.

ऐरावत त्यांथी च्यवीने सर्वांगे दुःखकर अने धार्मिकोने कंपावता एवा चतुर्गति संसारमां पडयो. (७०४). इन्द्र पण पोतानी अवधि पूरी थतां च्यवीने श्री हस्तिनागपुरमां अश्वसेनराजानी निष्कलंक राणी सहदेवीनी कमळ जेवी कूखमां चौद स्वप्नोथी सूचित, गुणरत्नोनुं निधान अने त्रिभुवननें आनंदकर एवा सनत्कुमार नामे पुत्र तरीके अवतर्यो. (७०५). चतुर्गति भवगहनमां भमीने, जातजातना हजारो जन्ममरणथी हेरान थईने दास, चाकर, दरिद्री अने दुःखी तरीके परवश बनी विलाप करतो ऐरावतनो जीव पोते करेला कर्मने अनुसरीने वैताढ्यपर्वतमां असिताक्ष नामे यक्ष तरीके अवतर्यो. (७०६).

आ प्रमाणे तारुं वृत्तांत टूंकमां कहीने मुनिपुंगव अर्चिमाली बीजे विहार करी गया. भानुवेग पण मारा कहेवाथी पोतानी कुंवरीओने लईने मानससरोवरनी निकटमां जईने तारा वचगाळाना वास माटे प्रियसंगम नामना अमरावती जेवा नगरनुं निर्माण करीने. रह्यो. (७०७). ते पछी तेणे तने ते प्रमाणे पोतानी आठ पुत्रीओ त्यारे परणावी. पण तारा चरणयुगलने मारा हृदयमां धरीने हुं तारी सेवा करीश. तने एकलो छोडीने भानुवेग स्वस्थाने गयो छे, तो हे प्रभु, तुं ए अपराधनी क्षमा करजे. (७०८).

ए प्रमाणे कहीने चंडवेगे धामधूमथी ए सो अनुपम कन्याओ कुमारने परणावी. पछी विशाळ विद्याधरराज्य सहित ते विषयसुख भोगववा लाग्यो. शरदना चंद्र जेवी निर्मळ बुद्धि वाळा विद्याधरराज चंडवेगे पण सनत्कुमारने पोतानुं कुटुंब अने संपत्ति सोंपी दीधा (७०९), अने योग्य गुरुना चरणमां जईने ए विद्याधरचक्रवर्ती

चारित्र्य सेववा लाग्यो. आ प्रमाणे केटलोक समय वीत्यो. पण आजे कोण जाणे केम कुमारे अमारी सौनी समक्ष एकांतमां कह्युं, 'चालो जलदी, मानससरोवरमां जलक्रीडा करवा !' (७१०). एटले सुनंदा वगेरे राणीओ वडे तथा उत्तम परिचारको वडे सेवातो आर्यपुत्र जेवो अहीं आव्यो तेवो ज हे नररत्न, तुं पण आवी पहोंच्यो'. ए वेळा कुरुकुळनो गगनचंद्र पण ऊठीने विकसेला मुखकमळ साथे कदलीगृहमांथी बहार आव्यो (७११).

ते पछी स्वजनोने आनंदित करता, मेरुपर्वत जेवडा पूर्वे रळेला पुण्य-समूहने लोधे सुंदर, समग्र भुवनमां विस्तरेल निर्मळ ने वहोळी कीर्ति वाळा अने सरळ स्वभाव वाळा ते बंने जण समयोचित क्रिया पतावीने श्री वैताढ्यपर्वत उपर गया. (७१२). पछी बंने विद्याधरश्रेणीओ पर तरत ज पोतानी आण सर्वथा प्रवर्तावीने, तावे थता विद्याधरोनो उचित राज्याभिषेक करावतो, अनेक विधाधर कुमारीओने परणतो तथा जाते ज केटलीक विकसितमुखीओने राणीओ तरीके अंतःपुरमां स्थान आपतो (७१३) कुमारश्रेष्ठ सनत्कुमार, सूरराजाना पुत्रने मुखे, 'तमारां मातापिता तमारा विना दुःखी थई रह्यां छे' एम सांभळीने, अनेक लाख विद्या-धरराजाओ वडे अन्तरीक्षने भरी देतो अने समग्र जगतमां पोतानी महत्ता प्रगट करतो हस्तिनागपुर पहोंच्यो. (७१४).

ते पछी तेणे मातापितानां चरणकमळनुं अभिवादन कर्युं, स्वजनोनुं भव्य स्वागत कर्युं, याचकोने विभूषित कर्या, जगतना लोकोना मुख पर संतोष प्रगटाव्यो अने बाजुमां रहेला सूरराजाना पुत्रने मुखे मातापिता अने अन्य जनोने पोतानो वृत्तांत आदिथी अन्त सुधो कही संभळाव्यो. (७१५).

एटले जाणे के अमृतकुंडमां झबोळायो होय, कल्पवृक्षनी प्राप्ति थई होय, घरमां ज कामधेनु अवतरी होय, चिंतामणि पाम्यो होय के चक्रवर्तीपदे राज्या-भिषेक थयो होय तेम मित्रो अने स्वजनो सहित अश्वसेनराजा हर्षावेशथी अने सूक्ष्म विवेकपूर्वक विचारवा लाग्यो (७१६), 'अहोहो ! सारा कुळमां जन्म, अति अद्भुत रूपश्री, विघ्न विनानुं जोवतर, जगतमां सर्वाधिक पांडित्य, पोताना भुजाबळे रळेलुं विपुल भोग माटे पूरतुं धन, लोकने चमत्कृत करतुं राज्य अने पराक्रमथी प्राप्त करेली दूर विस्तरती कीर्ति—जगतमां आ बधुं धर्मना फळ तरीके धीर पुरुषो मेळवे छे. (७१७)'—आ प्रमाणे विचारतां राजाए

आखा नगरमां मोटी धामधूमथी वधामणी करावीने, विस्तरती समृद्धि वाळा तेणे कुमाररत्नने राजगादी पर बेसार्यो. पछी मित्रो अने स्वजनोनी रजा मेळवीने, गुरुजनोनी भक्ति करीने, बंदीजनोने छोडी मूकीने, जिनेश्वरनी पूजा करीने (७१८), धर्मकथा सांभळीने, हृदयमां मंगळकारक जिनवचन धरीने, सांसारिक सुखथी विरक्त मने, योग्य गुरुनां चरणमां पोतानी राणीओ अने अनेक राजपुत्रो सहित राजा अश्वसेने चारित्र्य स्वीकार्युं अने एम ते पवित्र राजर्षि सद्‌गतिने पाम्यो. (७१९).

समयप्रभावे, पोताना भुजाबळे अभ्युदय प्राप्त करनार अने अनेक संग्रामांगणोमां कीर्तिलताने फेलावनार सनत्कुमारे पोताना पुण्यबळे हजार वरस वीतता सुधीमां क्रमे क्रमे भरतचक्रवर्तीनी जेम सुखेथी छखंड पृथ्वीने साधी. (७२०). वळी सुनंदा वगेरे स्त्रीरत्नोमां मुख्य अने जगतमां सर्वोत्तम एवी चोसठ हजार राणीओ, अति अद्‌भुत भुजाबळ वाळा बत्रीश हजार सामंतो, चोराशी लाख हाथी, घोडा अने रथ—प्रत्येक, नव निधि अने मनमान्युं आपनारां चौद रत्न (७२१), तथा बीजो पण भरतराजा जेवो वैभव पूर्वसंचित पुण्यना योगे टूंक समयमां ज मेळवीने अने कीर्तिरूपी प्रियतमाने दशे दिशामां मोकलीने ते पोताने नगर आवी पहोंच्यो.

ए वेळा सौधर्मेन्द्रे एवी शोभा अने वैभवथी शोभता सनत्कुमारराजाने सहर्ष जोयो. (७२२). एटले आदरसहित तेणे वैश्रवणने कह्युं, 'भद्र, मारो आदेश छे के तुं सहदेवीना पुत्र, चोथा चक्रवर्ती सनत्कुमारनी पासे जलदी जईने सोळ हजार यक्षोना प्रणाम साथे मारी आ भेट तेने धर अने तेनो चक्रवर्ती तरीके राज्याभिषेक तुं कर.' (७२३).

एटले पोताने कृतार्थ मानतो वैश्रवण सहर्ष प्रणाम करीने जलदी जलदी पोताना स्वामीना आदेशथी उत्तम सिंहासन, छत्र, मुकुट, हार, कुंडळ, चामर, पादुकानी जोड, उत्तम माळा अने उत्तम पादपीठ—के जे बधां शोभाना धाम जेवां हतां—तेमने साथे लईने, हस्तिनागपुर जईने, कुरुकुळना यशकलशनां चरणमां सविनय नमीने कहेवा लाग्यो, 'सौधर्मेन्द्रे मने अत्यारे तमारी पासे मोकल्यो छे, अने तमारो चक्रवर्ती तरीके महान राज्याभिषेक करावबाने आ तमारे योग्य दिव्य भेट मोकली छे. (७२४–७२५). आगला जन्ममां तुं जे सौधर्म कल्पमां अति

विशाळ समृद्धि वाळो इन्द्र हतो ते ज कल्पमां ए हमणां सुरेन्द्र थयो छे, अने एटले मोटो भाई गणीने ते तारो सत्कार करावे छे, अने मारे मुखे अत्यंत आदरपूर्वक तारा प्रत्ये भक्ति प्रकट करे छे'. (७२६).

ए प्रमाणे सांभळीने चक्रवर्तीए संतोषथी विकसता वदनकमळ साथे ते सघळी भेट स्वीकारी, अने वैश्रवणने पोतानी पासे ऊंचुं आसन आप्युं. ए पछी वैश्रवणे एक योजन भूमिमांथी धूळ, कचरो अने घास आभियोगिक देवोनी पासे साफ कराव्यां (७२७), अने, वज्र, मरकत, पुलक, वैडूर्य, चंद्रकांत, सूर्य-कांत वगेरे पचरंगी रत्नो वडे बनावेली अने किरणोथी अंधकारने अजवाळती उत्तम पीठिका रची. तेना पर पोताना अनुपम महिमाथी देवविमानने पण जीती ले तेवो, त्रण भुवननी सुंदरताना धाम रूप अभिषेकमंडप बनाव्यो. (७२८). तेनी अंदर पूर्व दिशानी अभिमुख सिंहासन स्थापी तेनी आगळ पादपीठ मूकी, शुभ मुहूर्ते ते उत्तम नरने आसन पर बेसारीने अने क्षीरोद समुद्रमांथी आभियोगिक देवोनी पासे मणि अने कांचनना कलश वडे निर्मळ जळ अणावीने (७२९), तेने पछी मगध, गंगा, वरदाम आदि उत्तम तीर्थोना जळ तथा पुष्प, गंध अने औषधिओ लईने, 'आ नररत्ननो पृथ्वीमां चिरकाळ जय हो, जय हो' एम वारंवार बोलीने, ज्यारे विद्याधर, मनुष्य अने देवोनां वृन्द मंगळ उच्चारतां हतां, मागणो अने स्वजनोने इच्छानुसार आपवामां आवतुं हतुं (७३०), ज्यारे ढोल, मृदंग, तबलां, ढक्का, कांसाजोड, ताल, वांसळी, वीणा, काहला अने बुक्का तथा करडि, भंभा, भेरी अने हुडुक्का ऊंचा स्वरे वागतां हतां, ज्यारे इन्द्रना आदेशथी रंभा, तिलो-त्तमा अने उर्वशी तरत ज आवीने नाटारंभ करी रही हती (७३१), त्यारे अति-शय भारे धामधूमथी चक्रवर्तीनो राज्याभिषेकमहिमा संपन्न करीने वैश्रवणे इन्द्रने सघळो पूर्व वृत्तांत निवेदित कर्यो. नररत्न सनत्कुमार पण चक्रवर्तीपद पामीने जाणे के अनन्य सुधामृते सिंचित थयो होय तेम छखंड धरती भोगववा लाग्यो. (७३२).

एक दिवसे ज्यारे देवराज इन्द्र रंगमंडपमां सौदामिनीनाटक जोवा पोताना परिवार साथे सहर्ष बेठो हतो त्यारे ईशानकल्पमांथी कोई एक देव कार्यप्रसंगे तेनी पासे आव्यो: तेणे आखा शरीर पर आभूषण पहेर्यां हतां अने पोतानी देह-कांतिना विस्तारथी ते बीजा बधा देवोनी कांतिने हसी काढतो हतो. (७३३). ए वेळा इन्द्रे तेनो सत्कार कर्यो अने कामकाज पूरुं करीने ए देव स्वस्थाने गयो.

ए पछी सौधर्मकल्पना देवोए शंकित बनीने इन्द्रने कह्युं, 'हे स्वामी, पेला देवे तो पोतानी देहकांतिथी बधा ज तेजस्वी देवोना तेजने हरी लीधुं !' (७३४). एटले देवराजे कह्युं, 'एणे तेना पूर्वभवमां अतिशय भावशुद्ध, पवित्र अने एकाग्र चित्ते आयंबिल वर्धमान तप आचर्युं हतुं, अने ते तपना तेजे करीने ते असामान्य कांति-कलाप वाळो अने ईशानेंद्रना जेवी शोभा धरावतो देव थयो छे'. (७३५). देवोए प्रणाम करीने फरीथी पूछ्युं, 'हे स्वामी, कृपा करीने कहे, पूर्व पुण्ये प्राप्त करेली आवी तेजसमृद्धि बीजुं कोई आ त्रण भुवनमां धरावे छे खरुं ?' एटले सहेज हसीने देवराजे कह्युं, 'अरे ! एनुं पुण्य ते केटलुं ? एनी तेजसमृद्धिनो विलास पण केटलो ? अरे, त्रण जगतना रंगमंच पर विलसता बीजा बधाये एकत्र थयेला विद्याधर, देव अने असुरना राजवीओनी पूर्वोपार्जित तपसमृद्धि अने देह-कांतिनो पण शो हिसाब, जे तपसमृद्धि अने देहकांति, केवळ मनुष्य होवा छतां पण; चंद्रनिर्मळ यशवाळो अने अश्वसेनना कुळरूपी कमळसरोवरने शोभावता कल-हंस समो सनत्कुमारनरपति धरावे छे (तेनी आगळ) ?' (७३६–७३७)

ए वेळा देवराजनी सभामां रहेला बे देवकुमारने कांईक मत्सरनो भाव थयो: 'भला, जे मात्र मनुष्य छे तेनी बाबतमां आवी वात कई रीते बने ?' ए प्रमाणे विचारता तेमने आ विषयमां शंका थई. ते पछी तरत तेओ ऊपड्या (७३८), अने दैवी शक्तिथी बटुकनुं रूप धरी जलदी हस्तिनागपुर नगर आवी पहोंच्या. द्वारपाळे सनत्कुमार चक्रवर्तीने तरत ज तेमनी जाण करी. त्यार बाद तेमने तरत ज प्रवेश कराव्यो. स्नान करीने ऊठेला सनत्कुमारे ते वेळा परदा पाछळथी तेमने (७३९) कह्युं, 'कहो, तमे कया कामे अहीं आव्या छो ?' परदा पाछळथी सनत्कुमारनो चरणनो अंगूठो जोई गयेला ते ब्राह्मणोए हर्षविकसित लोचने उत्तर आप्यो, 'हे स्वामी, तारी रूपसमृद्धि जोवा माटे अमे घणे दूरथी आव्या छीए.' एटले चक्रवर्तीए कह्युं (७४०), 'भद्र, जो एम होय तो तमे बंने बपोरे आस्थानमंडपमां मारी पासे आवजो—त्यां सर्वांगे शणगार सजेला मने फरीथी जोजो.' ए प्रमाणे चक्रवर्तीनुं कथन सांभळीने, ते राजसभामां बेसवा जाय त्यां सुधीमां पेला देवो क्शेक गया. (७४१).

पछी पुण्यहीन लोकोना हैयाशूळ समां बंदीगणोना स्तुतिपाठ, गायनोना गायन, नट, नर्तक अने गोडियानां नृत्य, मंगळविधि अने सेंकडो मागणोने अपातां यथेष्ट दान साथे चक्रवर्तीनो स्नानविधि पूरो थयो (७४२); शंखनादे मध्याह्नी

जाण थई; मेरोना झंकारे वारांगनाओए समयं जणाव्यो. तूर्यरव शमतां सेवको पोताने घरे गया; नृत्य करता नटो अने नाट्यकारो स्वस्थाने पहोंच्या; बधा अधिकारीओ श्रमविनोदमां मग्न बन्या (७४३); दोडीने जलदी एकठा थयेला प्राहरिकोए समयसूचक शंख वगाड्या; असंख्य अतिथिगृहो अने सत्रशाळाओनी साफसूफी कराई; अग्रासन पर बेसनारा ब्राह्मणोने तैयार करवामां आव्या; कृपण, अनाथ अने मागणोने भोजन आपवामां आव्युं (७४४); वारांगनाओने सज्ज करवामां आवी; राजानी भोजन-पीठिका पासे वैद्यो अने मन्त्रवादीओ पहोंची गया; जमनाराओ आवी पहोंच्या; वैश्वदेवने आहुति अपाई; चकोरोना पांजरा अहींथी तहीं लई जवाया; वृक्षनी टोचे रहेलां फलको पर वायसपिंड नखाया. (७४५). तरत ज शालि, शिखरिणी, सूप, पक्वान्न, मध, घी, तिम्मण, दहीं, दूध, तथा अनेक पानक अने उत्तम व्यंजननी बनेली, मधुर, कषाय, कटु, तिक्त, लवण (वगेरे स्वाद वाळी), जगतनुं रंजन करनारी, शीघ्र धातुवृद्धि करनारी, सेंकडो पुण्यो करनारने ज प्राप्त थाय एवी रसोई दरबारी रसोईयाओए पीरसी. (७४६). ते पछी साकर, द्राक्ष, खजूर, अखोड, दाडम, कलमशालि, दाळ, व्यंजन, घेवर, लापशी, सूंठ, सेव, लाडु, मुरकी, सुंवाळी, सांकळी, मांडा अने भडभडिया वैद्यक अनुसार चक्रवर्तीए अन्य जमनाराओनी साथे आरोग्यां (७४७). ते पछी लवंग, एलची, कपूर, जंबीर, जायफळ, तज, तमालपत्र, जावंतरी, कक्कोल, सोपारी, नागरवेलना पान अने कपूरनी बीडी आरोगी अने मस्तकथी नमता सेवकोने पण यथायोग्य आपी. आम तेणे बधा भोगोनो रस माण्यो (७४८). ते पछी कस्तूरी, मघमघतुं हरिचंदन, केसर, सूखड, अगर अने कपूरना मिश्रण वाळुं, शतपत्रो, चंपो, करण अने जाईनां फूलनी पांखडीओना सुगंध वाळुं, सहस्रपाक वडे तैयार करेलुं विलेपन अंगे लगाडयुं, देवे दीधेलां आभरणो सर्वांगे सज्यां (७४९). ते पछी पोतानी स्वाभाविक कांतिनी अतिशयताथी देव अने असुर रूपी नक्षत्रो अने चंद्रने झांखा पाडता सूर्य समा—पूर्व कर्मथी प्राप्त दृढ संधिबंध युक्त सुंदर सर्वांग वाळो, अनन्य आभूषण सजेलो, देवताई दुकूळ पहेरेलो, बंदीगणोथी यशनो उद्घोष करातो, पोताना परिजनोथी शोभतो (७५०) चक्रवर्ती सर्वावसरमां विशाळ अने उत्तम आस्थानमंडपमां बेसीने सेवको पासे सहर्ष पेला बटुकोने बोलावे छे. तेओ पण चित्तमां अनन्य हर्ष धरता त्यां आवी पहोंचे छे. परंतु विशेष रूपे शणगार सजेला चक्रवर्तीने जोईने (७५१) 'अरेरे, धिक्कार छे,

धिक्कार छे आ विरस संसारने ! आवा राजवीनी आटला ज समयमां स्वजन अने मित्रोने उत्ताप करती आवी विषम दशा थई गई !' ए प्रमाणे विचारता अने झांखा पडेली मुखकांति वाळा बंने देवोने राजाए कह्युं, 'तमारुं मुख विवर्ण थई गयेलुं केम लागे छे ?' (७५२). एटले देवोए कह्युं, 'हे चक्रवर्ती, शुं तने नथी देखातुं के स्नान वेळा तारी जे भरपूर कान्ति हती ते अत्यारे नथी ?' एटले 'अरे, आ लोको शुं कहे छे ?' ए प्रमाणे एकाएक विचारमां पडी जईने राजाए पोताना शरीर सामे जोयुं तो ते जाणे के मेशना रगडाथी खरडायेलुं होय तेवुं तेने देखायुं. (७५३).

ए पछी ते ज क्षणे छखंड पृथ्वी, नव निधि, चौद रत्न, बत्रीश हजार मोडबंधा दोषमुक्त सामंतो, सोळ हजार आज्ञापालक यक्षो अने चोसठ हजार भक्तिनिष्ठ कुलीन सुंदरीओ ऊपरथी मन हठावी लईने (७५४), 'यौवन अस्थिर छे, धन स्वाधीन नथी, स्वजनो अने मित्रो स्वार्थमां रुचिवाळा छे, शरीर पण ज़ळबिंदु समुं चंचळ छे–आ रीतना दुःखकारक भवगहनमां धीरपुरुष केम रममाण रही शके ?' एम उद्विग्न मने विचारतो सनत्कुमार संसार रूपी कांतारथी विरक्त थई चारित्र्य लेवानी इच्छावाळो आ प्रमाणे बोल्यो (७५५), 'अहो, अहो, हे भद्र ! रूपना मिथ्याभिमाने ग्रस्त एवा मने तमे लोकोए प्रयत्नपूर्वक भवमांथी उगार्यो–महासागर-नी मध्यमां डूबता मने तमारा बंने हाथनो आधार दईने उगार्यो'. एटले चक्रवर्तीनुं मन जाणीने देवोए कह्युं, 'हे महायशस्वी तने खरेखर धन्य छे के मात्र आटलो ज़ दोष भाळीने तुं चक्रवर्तीपद छोडीने चारित्र्य लेवा उत्सुक बन्यो, कारण के हवे तारा शरीरमां औषधथी असाध्य एवा दुःसाध्य रोगोए प्रवेश कर्यो छे.' एटले चक्रवर्तीए पूछयुं, 'आ वात तमे कई रीते जाणी ?' एटले देवोए पोतानुं स्वरूप प्रगट करीने इन्द्र साथे बनेलो वृत्तांत कह्यो. (७५६–७५७).

'अरेरे, धिक्कार छे, धिक्कार छे. कर्मनुं परिणाम आखा जगत माटे केवुं दारुण छे ! नश्री संपत्ति तद्दन तुच्छ छे. परिजनो चंचळ छे. मन अस्थिर छे. प्रियानो संग शरदना वादळ जेवो छे. वळी आ शरीर अनर्थकारक अने वधी अशुद्धिओनो भंडार छे. शरीरने शणगारवानी क्रिया अबुधोनी प्रवृत्ति छे. रूपनुं अभिमान मिथ्या छे. (७५८). आनी प्रथम उत्पत्तिनुं कारण (?) होवा छतां जेनी विवेकीलोकोए निन्दा करी छे, जे उद्वेगनुं कारण छे, स्वभावथी ज जे निर्गुण छे अने अशुद्धिनां नव द्वारोने लीधे दुःखकारक छे, जे कपूर, अगरु, कस्तूरी वगेरे बहु भोग-उपभोगनो विनाश करनारुं छे तेवुं आ शरीर निःसंग लोको माटे दुःखद छे. (७५९). शुक्र, शोणित, रुधिर, वसा, मांस, मज्जा, परु, मूत्र, आंतरडां,

पित्त वगेरे अशुचिओथी भरपूर, नव छिद्र वाळुं, मलीन, अशुचि द्रव्ये घडेलुं–आ रीते जेम जेम शरीरनी अशुद्धि विशे सहेज पण विचार कराय छे, तेम तेम समजु लोकोने ते समग्रपणे अशुद्धिमय जणाय छे. (७६०). तो हजी स्वजनो स्वाधीन छे, लक्ष्मी तजी गई नथी, भृत्यो वशवर्ती छे, प्रियतमा प्रियकारिणी छे, अंगो भांग्यां नथी, शरीरनुं दुःखद, असार परिणाम हजी आव्युं नथी, त्यां सुधीमां परभवना आधाररूप कशोक धर्मविधि करी लो'. (७६१).

ए प्रमाणे मेरु जेवा स्थिर चित्ते चिंतवता कुरुवंशना यशकलश समा अश्वसेनराजाना पुत्रे धन, रत्न, स्वजन, सुभट, हाथी, घोडा अने रथने त्यजी दईने, पवित्र जिनतीर्थनी घणा विस्तारपूर्वक प्रभावना करीने ऋषभदत्त सूरिनी पासे चारित्र्य स्वीकार्युं. (७६२). 'अहो, अहो, राजा, सकळ पृथ्वीनो त्याग करीने तें भरतेश्वरना चरित्रनुं अनुसरण कर्युं, अने आ प्रकारनो उद्यम करीने तीर्थंकरो अने गुरुओनुं वचन आराध्युं'–ए प्रमाणे अनुमोदन करता अने सनत्कुमारमुनिनां चरणमां नमता देवोए जईने सघळो वृत्तांत देवेन्द्रने कह्यो. (७६३).

परंतु पेलां स्वजनो, राणीओ, सामंतो, मित्रो, पुत्रो, भाईओ, रथो, सैनिको, घोडाओ, गंधहस्तीओ, चौद रत्नो अने सोळ हजार यक्षो पोताना स्वामी सनत्कुमारमुनिनो पीछो छोडतां न हतां. (७६४). 'अरेरे, शरणे आवेला प्रत्ये करुणावाळा हे स्वामी, विलाप करता आ बधा सेवकजनोने तुं केम तजी दे छे ? तुं पाछो वळ अने केटलाक दिवस एमनुं पालन-पोषण कर. एम करतां करतां ज तुं शुद्धि पामीश. पूर्वे पण ऋषभ तीर्थंकरना पुत्र भरत राजाने पोतानी प्रजानुं पालन करतां करतां ज केवळज्ञाननी प्राप्ति थई हती. (७६५). हे नाथ, पोताना भुजबळे शत्रुकुळनो विनाश करनारा तारा विना आ जगतनी विविध क्षुद्रोना आक्रमणथी शी दशा थशे ? अशरण बनोने विलाप करता तेना पर हवे कोण उपकार करशे ?'–ए प्रमाणे विलाप करता, अनाथ, रक्षणहीन अने दीर्घ निःश्वास मूकता तेओ सौ छ मास सुधी सनत्कुमारनी पाछळ भम्या. (७६६). परंतु मेरुशिखर जेवा स्थिर चित्तवाळा राजर्षिए तेमना प्रत्ये सिंहनी रीते पण अवलोकन न कर्युं. एटले तेओ अत्यंत दुःखी थईने पोतपोताने स्थाने गया. एकाकी राजर्षिए पण भोगववानां पूर्वकृत कर्मोने अन्ते जन्मनो अन्त लावनारी तपश्चर्यामां चित्तने उद्यत करीने (७६७), छट्ठ तपने अन्ते गुरुना कहेवाथी अन्यत्र जईने महर्षिनी जेम विहरतां, पोतानां बाकीनां पूर्वकृत असाधारण अशुभ कर्मोनो उदय थतां, गोचरीए भमतां कोई एक घरे प्राप्त थयेल बकरीना दूधनी छाशथी भींजवेल चीणाना भातनुं भोजन कर्युं. (७६८). एटले तेना शीशमां वेदना, शरीरमां दाह, आंखमां सोजो, जठरमां शूळ, गुदामां हरस, छातीमां तोड, हाथमां कंप, पगमां

हाथीपगुं, पेटमां जळोदर, गळा पर गंडमाळ अने सर्वांगे क्षयकाळ जेवो कराळ कुष्ठरोग उद्भव्यो. (७६९). आ प्रमाणे जीवनो अन्तकाळ लावे तेवा दुःखकारक अने आखा जगतना लोकोने घणो ज हृदयदाह जन्मावे तेवा बीजा पण अनेक उग्र रोगो थतां, मेरुशिखरनी जेवा अविचलित चित्तवाळो सनत्कुमार केवळ नवकारनुं स्मरण करतो तेमने सही रह्यो. (७७०).

ए मुनिवरनुं चरित्र जोईने चित्तमां अतिशय विस्मित बनेला सौधर्मेन्द्रे देव-सभामां कह्युं, 'देवो, छट्ठ, अट्ठम, दशम, द्वादशम वगेरे विविध तप वडे शरीरने धर्मथी शोषता, संसारभावथी उद्विग्न मनवाळा चक्रवर्तीमुनिनुं चरित्र तमे भावपूर्वक जुओ. (७७१). जगतना प्राणीओने विनष्ट करे तेवा अनेकविध व्याधिथी पीडातो होवा छतां ते दुःखथी सित्कार पण मूकतो नथी, के कह्या छतां, आमौषधि वगेरे जेवी (तपप्रभावे) उत्पन्न थयेली अने आखा जगतना शारीरिक व्याधिओने हर-नारी औषधिओथी पोताना शरीरनो उपचार पण करतो नथी'. (७७२). ए प्रमाणे इंद्रना बोलवाथी आखी सभा चित्तमां विस्मय पामती जगतमां सर्वोत्तम चरित्र-वाळा अश्वसेनना कुळगगनना चंद्र समा ते राजर्षिना गुण सांभळी रही. परंतु पेला बे पूर्वोक्त देवोने आ वातमां श्रद्धा न बेसतां तेओ वैद्योनुं रूप धरीने ते राजर्षिनी पासे आव्या. (७७३).

'अमे खस, खांसी, ज्वर, अरुचि, हाथनो कंप, हाथीपगुं, गंडमाळ, शोष, अरति, भगंदर, शूळ अने बीजा रोगोनी अरधी क्षणमां ज चिकित्सा करीने शरीरने नीरोग करी दईए छीए. तो आ वात बराबर समजीने हे मुनिश्रेष्ठ, तमे अमारुं वेण स्वीकारो'. (७७४)—ए प्रमाणे वारंवार बोलता अने अडखेपडखे परिभ्रमण करता ते देवोने मुनिवरे कह्युं, 'कहो, तमे मात्र बाह्य रोगो मटाडो छे के आंत-रिक रोगो पण ?' सावधान बनीने देवो बोल्या, 'मुनिवर, अमे बाह्य रोगोने मटाडीने घडीकमां ज बधा लोकोने साजा करी दईए छीए'. (७७५).

एटले जमणा हाथे पोताना डाबा हाथनी आंगळीनो स्पर्श करी, तरतना उगेला सूर्यना किरण जेवी दीपती ते बतावीने ते देवोने महर्षिए कह्युं, 'मारा आंतरिक रोगोनी पासे आनो तो शो हिसाब ? परंतु जो ते रोगो पछी पण सहेवाना ज होय तो हुं तेमने हमणां ज सहुं ते ठीक छे.' (७७६).

'हे महामुनि, तुं ज अहीं आंतरिक रोगोनो हरनार छे'—ए प्रमाणे कहेता ते बंने देवोए तेना चरणमां पडीने पोतानुं स्वरूप प्रगट कर्युं, देवेन्द्रे कहेली प्रशंसा संभळावी अने सनत्कुमार महर्षिना आशिर्वाद लईने स्वर्गमां जई देवेन्द्रने ए वृत्तांत कह्यो. (७७७). 'बाप रे ! शुं धैर्य ! शुं अद्भुत सरळता ! अहो एमनो उपशम ! शुं वचन अने मननी गुप्ति ! तेमनी क्षांति पर न्योच्छावर ! तेमना संयम, तप

अने देहकांतिनी तो वलिहारी !' ए प्रमाणे वारंवार बोलता ते बंने देवो देव-सभामां महर्षि सनत्कुमारना गुणगान करता रह्या. (७७८).

राजर्षिए पण क्षीरोदधिथी पण अधिक गांभीर्य साथे अने अत्यन्त समतापूर्वक तीर्थंकरे कहेला विधि प्रमाणे बधा य रोग सह्या अने हृदयमां आ प्रमाणे भावना भावी, 'तरंगोथी कुलाचलने तोडी नाखता समुद्रना वेगने स्खलित करी शकाय, पण पोताना पूर्वार्जित अशुभ कर्मना विपाकनी प्राप्ति न अटकावी शकाय. (७७९). हे जीव, अज्ञानी, तें पोते ज आगला जन्ममां आ पापकर्मनो मोटो भारो बांध्यो छे. तेथी ज आ अतिशय दुःसह दुःखसमूह तारी पासे ढूकचो छे. नासी जईने पण पोतानां दुष्कृत कर्मोथी छुटातुं नथी. तो हुं समयसर सामे आवी पहोंचेला शत्रुओ पर वारी जाउं छुं. (७८०). एम प्रमादथी, रागद्वेषथी, मिथ्यात्वथो, अविरतिथी अने अभागिया मोहे ग्रस्त थईने तें जे जे अहीं कर्युं, ते पापरूपी महावृक्षनां फळ, हे जीव, तुं तारे हाथे ज ले. लोको पोताना कार्यनां फळ मळतां तेथी विमुख थता नथी. पोतानी साथे दोडती छायाने कोई छोडी जई शकतुं नथी.' (७८१)–ए प्रमाणे चिंतवतो, चरण चरीने, पोताना पूर्वकर्मथी उत्पन्न रोगोनी भारे वेदना वेठीने, लांबा समयनां पापोने फेडनारी सर्वे जिनोए कहेली क्रियाओनुं परिशीलन करीने, ऋषभ, भरत वगेरे उत्तम पुरुषोनां चरित्र स्मरतो, तीर्थंकरनां वचन रूपी महौषधिओने हंमेशां हृदयमां धरतो (७८२), कुमारभावे अने मांडलिक राजा तरीके पचास पचास हजार वर्ष सुखे वीतावीने, तथा चक्रवर्ती तरीके अने श्रमण तरीके लाख लाख वरस वीतावीने अने एम क्रमशः बधां मळीने त्रण लाख वर्ष गाळीने, आयुष्यने अंते अशुभ कर्मो, रोगो अने दुःखोनो क्षय करीने (७८३). ते समयनी नीति प्रमाणे सम्मेतगिरिना शिखर तळे जईने, मासिक तपकर्मना योगे पोतानां पापथी मुक्त थईने, निर्मळ विवेकथी शुद्ध बनीने, सनत्कुमार महर्षि गुरुना गुणमां अनुरक्त मने पोताना जीवतरनो सार पामीने सनत्कुमार स्वर्गमां गया. (७८४).

त्यां देवेन्द्र समान सामानिक देवने योग्य उच्च विषयसुखो चिरकाळ भोगवीने अनुक्रमे त्यांथी पण पोतानी स्थितिनी अवधिने अंते विदेहमां राजकुमार तरीके अवतरीने, पछी तपश्चर्या करी पोताना पापसमूहनो क्षय करीने जेनुं नाम अत्यंत लेवा योग्य छे तेवी ते सिद्धि पामशे. (७८५).

*

मुनिराज जिनचंद्रना शिष्योत्तम अने सज्जनोने सुखकर एवां अनेक गुणरत्नोवाळा श्रीचंद्रसूरिना नामनन्त्रने मनथी निरंतर अने दिनप्रतिदिन स्मरता श्रीहरिभद्रसूरिए आ प्रमाणे पुण्यना धाम जेवुं सनत्कुमारराजानुं चरित संक्षेपमां रच्युं छे. (७८६).

आम श्री श्रीचंद्रसूरिना चरणकमळमां भ्रमररूप **श्रीहरिभद्रसूरिथी** विरचित **श्रीमदरिष्टनेमिचरितमां श्रीसनत्कुमार चक्रवर्तीनुं चरित** समाप्त थयुं.

*

[परिशिष्टम्]

हरिभद्रसूरि-विरचित-प्राकृतभाषानिवद्ध-
मल्लिनाथचरितान्तर्गतं

सनत्कुमार-चक्रवर्ति-कथानकम्

जंबुद्दीवे दीवे भारहवासस्स मज्झ-खंडम्मि ।
नाणाविह-मणि-मंदिर-भित्ति-पउ हामिय-तमोहं ॥ १

उत्तंग-साल-सिहरारोहंत-खलंत-रवि-रह-तुरंगं ।
पायालोयर-गंभीर-फरिह-सोहंत-पेरंतं ॥ २

सिरि-गयउर-अभिहाणं जय-पयडं पुरमहेसि तत्थ पुणो ।
जिय-सेस-सत्तु-विसरो राया सिरि-आससेणो त्ति ॥ ३

तस्स य सयलंतेउर-पवरा निस्सीम-सीम-कुल-सवणं ।
सिवदेवि त्ति पसिद्धा अहेसि दइया जयब्भहिया ॥ ४

तेसिं तु रूव-विहवोवहसिय-तयलोय-लोय-तणु-सोहो ।
चउदसहिं महा-सिविणेहिं सूइओ नंदणो जाओ ॥ ५

वियरियमभिहाणं से दिणे पसत्थे सणंकुमारो त्ति ।
अह सो कम-संपाविय-तारुण्णो अहिगय-कलो य ॥ ६

सह-पंसु-कीलिएणं वाल-[व]यंसेण गुण-रयण-निहिणा ।
सुराभिहाण-नरवइ-कालिंदी-देवी-तणएण ॥ ७

सम-सुह-दुक्खेण महिंदसीह-नामेण समगमुज्जाणे ।
कीलण-कए पहुत्तो सणंकुमारो स-परिवारो ॥ ८

तत्थ य विविहेयर-कीलाहिं परिकीलिऊण खणमेगं ।
कुमरो जलनिहिकल्लोल-नामयं तुरयमारूढो ॥ ९

इयरे वि निव-कुमारा समाण-वय-रूव-विह[व]-संपन्ना ।
आरूढा तस्समयं विविहेसु तुरंग-रयणेसु ॥ १०

तत्तो महिंदसीह-प्पमुहाण पुरो नरिंद-कुमराण ।
नणु भो कस्स तुरंगं को जिणइ त्ति प्पयंपेई ।। ११

मुइय-चमक्किय-सुललिय-पुलिय-गई-विजिय-रवि-रह-तुरंगं ।
निय-तुरयं सह नीसेस-सेस-निव-कुमर-तुरएहिं (?) ।। १२

तयणु खणद्धेण सणंकुमार विवरीय-सिक्खिय-तुरंगो ।
लग्गो गंतुं पंचम-धाराए जिय-इयर-तुरओ ।। १३

अह गाढयरं रज्जू तुरयस्साइड्ढिया कुमारेण ।
विवरीय-सिक्खियत्तेण तओ तुरओ सुसिग्घयरं ।। १४

लग्गो गंतुं खणमेत्तेण उ सविह-ट्ठियस्स लोगस्स ।
धावह एसो गच्छइ एस गओ त्ति य भणंतस्स ।। १५

जण-नयण-अविसयत्तं पत्तो तुरओ इओ य नरनाहो ।
कुमराणुमग्ग-लग्गो पहाविओ मुणिय-वुत्तंतो ।। १६

कित्तिय-मेत्तं च पहं तुरय-खुरुक्खय-मुहं पलोएंतो ।
जाव गओ ता भवियव्वयाणुहावेण उच्छलिओ ।। १७

भुवण-क्खय-काल-समुब्भवु व्व चंडो समीरणो तत्तो ।
अंधीकय-दिसियक्को रय-उक्केरो परिप्फुरिओ ।। १८

अह नट्ठ-तुरंगम-पय-चिंधो रय-भरिय-लोयणो निवई ।
लग्गो समग्ग-लोगेणं सह विलवेउमच्चंतं ।। १९

एत्थंतरम्मि निवई विन्नत्तो सिरि-महिंदसीहेण ।
जह देव को-वि दीसइ समुट्ठिओ एण्हिमुप्पाओ ।। २०

अन्नह कहं कुमारो कहं व एरिस-तुरंगमारुहणं ।
कह वा इमोवरोहो कहं व स समीरण-प्पसरो ।। २१

अहव किमन्नेण पयंपिएण काउं महोवरि पसायं ।
सामिय तुमे नियत्तह असेस निय-परियण-जुया वि ।। २२

भ्रष्ट पाठो : ११. ४ प्पियंपेइ.

११.४. यणइ. १२. ३. तुरियं. १४. ३–४ त्तेणं तओ तुरंगो. २०. ४. एहिंमु°

अहयं तु नहयलाओ वि पायालाउ वि सलिल-निहिणो वि ।
धुवमुज्जमिउं सव्वप्पणा वि स-वयंसमाणिस्सं ।। २३

जओ –

विण्फुरइ ताव दिव्वो (?) विहडण-करण-तल्लिच्छो ।
जा न तुलिज्जइ साहस-धणेहिं निहसेक्क-सारेहिं ।। २४

काऊणं पुण जीयं तुलाए जे निक्खिवंति अप्पाणं ।
ते साहिंति स-कज्जं संकइ दिव्वो वि जं तेसिं ।। २५

इय जे निच्छिय-मइणो अवहत्थिय-सुह-जसोह-सोडीरा ।
विण्णाय-गुण-विसेसा ताण सिरी देइ संनिज्झं ।। २६

इच्चाइ वहु-वियप्पं भणियं कहमवि महिंदसीहेण ।
निय-नाहो स-वलो वि हु पेसविओ आससेणो त्ति ।। २७

सयमवि कमेण परिगलिय-सयल-सेन्नो महिंदसीहो सो ।
एगागी गच्छंतो पत्तो रण्णम्मि एगम्मि ।। २८

अह तत्थ तत्थ धावइ जत्तो जत्तो कहिं-चि निसुणेइ ।
सद्दं अलक्खिअं पि हु तुरंग-करि-कलह-चमरीणं ।। २९

अवि य –

कस्स न दलेइ हिययं मयरंदामोय-रंजिय-दियंतो ।
सहयार-मंजरी-रय-सणाह-गंधुद्धुरो पवणो ।। ३०

नव-वियसिय-कुडय-वणालि-सरस-कणियार-कुसुमसर-विसमा ।
अहिणव-महुमासूसव-दिण-सुहडा कं न निहणंति ।। ३१

ओव्वेल्लेइ समीरो खर-सूर-कराहयाण नलिणीण ।
पंकोवरि दर-लुलियाइं थेव-सलिलाइं पत्ताइं ।। ३२

खर-पवणुद्धुय-रय-निवह-रंजियासामुहाण कलुसाण ।
को छुट्टइ जीयंतो उद्धुंधुलयाण दियहाण ।। ३३

महु-विंदु-लुद्ध-धाविर-भमरउल-कयंब-केसर-सणाहा ।
पवणंदोलण-हल्लज्झलंत-घण-मुक्क-रव-मुहला ॥ ३४

कस्स न दलंति हियय दियहा घोरम्मि पाउसारंभे ।
विज्जुलय-कत्तिया-घण-धारा-सरपंत्ति-दुव्विसहा ॥ ३५

कस्स न कुणंति पिय-जण-उक्कंठा-कोमलाइं हिययाइं ।
पविरल-जल-जलहर-कय-वरिसा दियहा सरय-समए ॥ ३६

उव्वे(यर)यं जण[इ] मणे विरहीणं पिक्क-सालि-गंधड्ढो ।
पवणो सत्तच्छय-गंध-गब्भिणो पाविय-प्पसरो ॥ ३७

को सहइ ताण पसरं जणिउक्कंठा[ण] सिसिर-दियहाण ।
कुमुय-विणासो विहिओ जेण अणज्जेण भुवणम्मि ॥ ३८

काउण मालईए मलणं पसरंत-सुहय-गंधाए ।
कुंदेसु कया रिद्धि अमुणिय-गुण-सिसिर-दियहेहिं ॥ ३९

पवियंभिय-हिम-कण-सिसिर-पवण-पसारण-जणिय-कंपाण ।
वीहेइ को न भण महियलम्मि हेमंत-दियहाण ॥ ४०

इय एरिसम्मि घोरे रिऊण समए महिंदसीहो सो ।
अडईए ढुंढुल्लइ सणंकुमारं विमग्गंतो ॥ ४१

आयण्णिय विग-रूयं सीहस्सोरालि-गुंजियमुदग्गं ।
धावइ एसो मह सामिणो निनाउ त्ति चिंतंतो ॥ ४२

जिय-सजल-जलहरारंभ-मत्त-मायंग-गज्जियं सोउं ।
अणवसु देवर (?) इय जंपिरो सहसा ॥ ४३

करि-थोर-करायड्ढिय-मोडिय-साहोह-सल्लइ-वणम्मि ।
पविसइ महिंदसीहो सणंकुमारं निरिक्खंतो ॥ ४४

इय आ-वरिसं पडियरिऊण रण्णम्मि तरु-कडिल्लम्मि ।
एगागी दूरुज्झिय-भय-निद्दा-खेय तणु-वियणो ॥ ४५

३६. २. दिययाइं. ३२. ४. उद्धुधुयल ३७. २. पि पिक्कसालि गंधड्ढे. ३९. ४. सिरसि.
४१. २. सीहस्सो. ४. विमग्गंति.

निव्विसयं चंकमणं कुव्वंतो दिसिमुहाणि जोएंतो ।
जावेगत्थ पएसे चिट्ठइ ता विहि-निओगेण । ४६

कलहंस-चक्क-सारस-कारंडवगाण सुणइ हलवोलं ।
अणुहवइ सलिल-सीयर-सिसिरं तु समीरण-प्फंसं ।। ४७

अग्घाइ कमल-कुवलय-मंसल-गंधं पवड्ढियाणंदं ।
अह अवियक्किय-पाउब्भूय-महाणंद-नयण-जलो ।। ४८

दाहिण-नयण-फुरणोवइट्ठ-अहिलसिय-कज्ज-निप्फत्ति ।
चलिओ सारस-कलहंस-सद्द-सूइय-सराभिमुहं ।। ४९

जा ताव सुणइ अच्चंत-गीय-झंकारमसम-सुइ-सुहयं ।
लग्गो स-हरिस-वियसिय-सिय-वयणो गंतुं तओहुत्तं ।। ५०

अह पत्थइय-निरिक्खण-अक्खित्तं विहिय-चारु-सिंगारं ।
उवहसिय-सुरासुर-रमणि-रूव-तरुणीण मज्झ-गयं ।। ५१

दट्ठुं सणंकुमारं विम्हिय-प्पफुल्ल-लोयणो संतो ।
नणु एरिसा समिद्धी कह मह पहुणो त्ति चिंतंतो ।। ५२

जा चिट्ठइ कंचि खणं एगस्स मह-दुमस्स छायाए ।
ता मग्गण-वग्गेणं निसुणइ एयं पढिज्जंतं ।। ५३

जय आससेण-कुल-नहयल-मयंक कुरु-भवण-लग्गण-खंभ ।
जय निज्जिय-विज्जाहर-पाविय-वेयड्ढयड्ढ-पहु-भाव ।। ५४

जय खयरिंद-विलासिणि-थणवट्टुल्लंग-संग-दुल्ललिय ।
जय तिहुयण-पयड सणंकुमार गिरि-गरुय-वित्थार ।। ५५

अवि य–

एक्के असिम्मि झीणा अन्ने उण सिहरि-वण-कयावासा ।
इयरे तुह पउर-दयस्स नाह सरणं गया रिउणो ।। ५६(१)

---

४९. २. निप्पत्ती. ५२. ३. परिसा.

विद्दविय-वेरि-वग्गस्स तुज्झ नरनाह सग्ग-वसिरीए ।
धवलत्तय-वयणिज्जं सिरीए एण्हिं परिप्फुरियं ॥ ५६ (२)

जे के-वि निवाण गुणा भुवणे रिद्धीउ जाउ काओ वि ।
कित्तीउ जाउ जाओ कलाउ ताओ तमल्लीणा ॥ ५७

दिट्ठे तुमम्मि परितुलिय-रूव-कंदप्प-लद्ध-माहप्पे ।
चत्तं रईए निय-दइय-देह-रूवाइ-माहप्पं ॥ ५८

इय महि-वहु-चूडामणि नरिंद-विज्जाहरिंद-नय-चलण ।
होसु पसन्नो कुरु-कुल-नह-चंद सणंकुमार तुमं ॥ ५९

आयन्निऊण एयं महिंदसीहो विणिच्छिऊण मणे ।
नूणमिमो मह नाहो सणंकुमारो [कुमारो] त्ति ॥ ६०

इय विहिय-निच्छओ गुरु-हरिस-समुल्लसिय-वहल-रोमंचो ।
पत्तो महिंदसीहो विसयम्मि सणंकुमारस्स ॥ ६१

अह दूराओ वि अवलोइऊणमब्भुट्ठिऊण कुमारेण ।
पायवडणुट्ठिओ अवगूढो स महिंदसीहो त्ति ॥ ६२

ता विम्हय-प्पमोयाऊरिय-हियया दुवे-वि ते कुमरा ।
उवविट्ठा खयर-प्पहु-विरइय-सीहासणे रम्मे ॥ ६३

तत्तो सणंकुमारो पुच्छेइ जहा वयंस साहेसु ।
कह तं वाहु-सहाओ एत्थ पहुत्तो सि सप्पुरिस । ६४

मज्झ विओए जणणी-जणयाणि कहं व तत्थ चिट्ठंति ।
अह कहियं निय-वइयरमखिलं पि महिंदसीहेण ॥ ६५

भणियं जह पहु निय-वुत्तंतं कहिउमरिहसि तुमं पि ।
तुरयावहरण-पुव्वं सयलं पि हु नियय-भिच्चस्स ॥ ६६

---

५६. १. स्वग्ग. ३. धवणत्तयं. ४. परिस्फुरियं. ५७. ३. जाओ. ४. ताउ; ५८. ३. चत्त; ४. रूवाइं. ५९. दोसुपसत्तो. ६०. १. आयन्निऊणं. ६१. १. निच्छिय. ६२. १. अविलो°.

सोऊणमिणं वयणं सम-सुह-दुक्खस्स नियं-वयंसस्स ।
कुमरो सणंकुमारो सवियक्को संकडावडिओ ॥ ६७

नणु नत्थि अकहियव्वं मित्ते सब्भाव-नेह-भरियम्मि ।
भिन्ने वि देह-मित्तेण जस्स चित्तेण न वि भेओ ॥ ६८

तह वि न जुज्जइ निय-चरिय-साहणं सुद्ध-वंस-जायाणं ।
निस्सारा होंति गुणा साहिज्जंता सयं जम्हा ॥ ६९

ता एयमेत्थ पत्तावसरं ति विचिंतिरो सविह-पत्तं ।
वउलमइं विज्जाहर-धुयं निय-दइयमासज्ज ॥ ७०

जंपइ जहा पिए नियय-नाण-वलावगय-सयल-तत्ता सि ।
इय सयलं पि हु मह वइयरं वयंसस्स साहेसु ॥ ७१

मह उण निद्दाए लोयणाणि धुम्मंति दो-वि हरिणच्छि ।
इय भणिरो वि निसन्नो रइहर-रइयम्मि सयणिज्जे ॥ ७२

वउलमई उण लग्गा कहिउं निय-दइय-चरियमखिलं पि ।
तइया किल कुमरो अवहरिऊण तुरंग-रयणेण ॥ ७३

एगाए घोर-दव-दारुणाए विलसंत-सवर-मिहुणाए ।
विरसं-रसंत-कुंजर-जूहाए तसंत-हरिणाए ॥ ७४

फुट्टंत-गरुय-वंसाए डज्झमाणासमाण-विडवम्मि ।
खित्तो महाडईए कायर-जीयंत-हेउम्मि ॥ ७५

अह एस किमो त्ति वि-हू जाइहि त्ति विचिंतिरेण कुमरेण ।
मुक्का कराउ रज्जू तुरओ वि-हु तक्खण च्चेव ॥ ७६

निल्लालियग्गजीहो गरुय-पिवासा-सुसंत-मुह-कुहरो ।
सासाऊरिय-हियओ थक्को उद्ध-ट्ठिओ चेव ॥ ७७

---

७०. २. सविहिं. ३. वलउमइ. अंते : २७०० [ग्रंथाग्र].
७२.२. धुम्मती. ७३.१. लग्ग; २. तइय.

तयणु विवरीय-सिक्खो अहह तुरंगो मए न नाउ त्ति ।
परिचिंतंतो कुमरो उत्तरिओ झत्ति तुरयाओ ॥ ७८

तुरओ वि हु सिढिलीकय-पत्ताढो महियले परिब्भमिउं ।
पडिओ झडत्ति मुक्को य जीवियव्वेण ता कुमरो ॥ ७९

तण्हा-छुहा-किलंतो उल्लसिय-विसाय-विहुरिय-सरीरो ।
अवलोइऊण सत्तच्छय-नामं तरुवरं एगं ॥ ८०

वेगेण गंतु तच्छायाए ववगय-विवेय-वावारो ।
मुच्छा-निमीलियच्छो पडिओ सुद्धम्मि धर-वलए ॥ ८१

तयणंतरं च असमाण-रूव-विहवेण केण-वि नरेण ।
कुमर-सुकयाणुहावावज्जिय-हियएण सहस त्ति ॥ ८२

आणेऊणं कत्तो-वि तुहिण-कण-सिसिरमुज्जलं सलिलं ।
आसासिओ कुमारो अह सिंचेऊण सव्वंगं ॥ ८३

तत्तो पत्त-पुणन्नवचेयन्नो दिसि दिसि क्खिविय-नयणो ।
आपियइ तव्विइण्णं सलिलं ससि-किरण-धवलं ति ॥ ८४

पुच्छइ य भद्द को तं कत्तो व जलं तए इहाणीयं ।
तयणु भणइ इयरो हं जक्खो कमलक्ख-अभिहाणो ॥ ८५

निवसामि एत्थ दट्ठुं तुमं च गंतूण माणस-सरम्मि ।
आणेऊणं सलिलं पत्तो तुह संनिहाणम्मि ॥ ८६

अह दीहमुस्ससेउं भणियं कुमरेण एस संतावो ।
माणस-जलावगाहं मोत्तूण न फिट्टिही मज्झ ॥ ८७

सोऊणमिणं करसंपुडम्मिकाऊण तेण जक्खेण ।
माणस-सरम्मि नेउं मुक्को कुमरो खणद्धेण ॥ ८८

तो सो हरि व्व जलहिं आलोडिय माणसं सरमसेसं ।
जावुत्तरेइ ता तं सवण-समावडियमुवलद्धुं ॥ ८९

---

७८. २. नि नाओ. ८४.१ चेइन्नो. ८६.१ निय सामि. ८७.१ अव. ८७.२ आलोडि; सार. ४. सयाव.

पुव्व-भव-वेरिणा कुद्धेणं वेयड्ढ-वासि-जक्खेणं ।
असियक्ख-नामगेणं उम्मूलिय-तरुयर-ग्गामो ।। ९०

गुरु-सक्कर-मंसल-धूलि-पडल-वहलिय-नहंगणाभोगो।
अंधीकय-सयल-जणो मुक्को विउव्विय समीरो ।। ९१

तत्तो वि मुक्क-अट्टट्ट-हास-सद्दा विरूव-रूव-धरा ।
परिमुक्का वेयाली करयल-कय-कत्तिया भीमा।। ९२

अह जाव अनिल-वेयालेहिं तह तह उवद्दविज्जंतो ।
कुमरो निमेस-मित्तं पि न खुहइ ताव जक्खेण ।। ९३

फुक्कारव-भरिय-दियंतराण अलि-गवल-नील-कायाण।
नागाणं पासेहिं वद्धो जीयंत-हेऊहिं।। ९४

अह तोडिएसु हेलाए च्चिय कुमरेण नाग-पासेसु ।
लग्गोऽसियक्ख-जक्खो मुट्ठि-पहारेहिं जुज्झेउं ॥ ९५

ता वज्ज-दारुणाए मुट्ठीए तहा हओ स कुमरेण ।
निल्लालियग्गजीहो जह पडिओ धरणि-वलयम्मि ।। ९६

अह कह-वि लद्ध-चेयन्नेणं जक्खेण तेण सामरिसं ।
मुक्को सुदूरमुक्खि[वि]उण गिरी कुमर-उवरिम्मि ।। ९७

ता कुमरो गिरि-भारक्कंतो गुरु-पीड-विहुरिय-सरीरो।
पडिओ न मिओ उण निरुवक्कम-आउस्सरूवत्ता ।। ९८

अह हओ एसो सत्तू भए त्ति भणिरेण ।
जक्खेणं उग्घुट्ठो जय-जय-सद्दो स-पक्खम्मि ॥ ९९

सोउं च इममउव्वं वयणं सहसत्ति चेयणं लद्धुं ।
रे रे कडपूयण जक्ख-अहम कस्सेस जय-सद्दो ॥ १००

९३.४. कित्तिया. ९६.३. निल्लासियं. ९७.३. सिदूरं.

उग्घोसिज्जइ पडिवक्ख-दलण-दक्खे मए वि सन्निहिए ।
इय जंपिरेण निय-भुय-जंत-वलुम्मूलिएण लहुं ॥ १०१

वड-पायवेण निहओ कुमरेण तहा कहिंचि सो जक्खो ।
जह ववगयाहिमाणो वियलिय-चेयन्न-वावारो ॥ १०२

नियसत्तणाणुहावाणुवलद्धं ति मद (?) सो कहंचिदवि ।
मुक्क-गरुय-पुक्कारो कुमरस्स अदंसणी हूओ ॥ १०३

अह रण-निरिक्खणागय-तियसासुर-खयर-राय-तरुणोहिं ।
कुमर-सिरम्मि मुक्का गंधोदय-कुसुम-वुट्ठि त्ति ॥ १०४

इय निज्जिऊण जक्खं पच्छिम-दिसमुवगयम्मि तरणिम्मि ।
नीहरिऊण सराओ जा गच्छइ कित्तियं पि पहं ॥ १०५

तो सहस च्चिय कुमरो सरूव-उवहसिय-तियस-तरुणीओ ।
नंदण-वणस्स-मज्झ-ट्ठियाउ कय-चार-वेसाओ ॥ १०६

अवलोएइ दिसा-कुमरीओ इव अट्ठ पवर-तरुणोओ ।
ताहिं वि सच्चविओ अणिमिस-सुसणिद्ध-दिट्ठीहिं ॥ १०७

अह नणु कओ इमाओ नंदण-वण-वसुह-विहिय-मोहाओ ।
इय चिंततो कन्नगमेगं गंतूण पुच्छेइ ॥ १०८

नणु सुयणु काउ तुब्भे कह व अरण्णं इमं विहूसेउं ।
थक्काउ त्ति पसाहह अह वियसिय-वयण-तामरसा ॥ १०९

सविलासमीसि विहसिय पयंपए हरिण-लोयणा तरुणी ।
जह अज्जउत्त पिय-संगमाभिलासाए नयरीए ॥ ११०

एत्तो उ नाइदूरे चिट्ठइ सिरि-भाणुवेग-खयरिंदो ।
ता तत्थ समागंतु खणमेगं वीसमह तुब्भे ॥ १११

---

१०४. ३. सिरिंमि. १०५.२. तरुणम्मिं.
१०७.३. कुमारीओं. १०९.४. वयणा. ११०.१. मीस.

पच्छ[इ] उण वुभ्भिस्सह अइरेणसमग्गमवि सयं चेव।
इय वयणा[ओ] तासि कंचुगि-दंसिय-पुरी-मग्गो ॥ ११२

पत्तो नरिंद-भुवणे अह अब्भुट्ठेउ भाणुवेगेण ।
रण्णा कय-सक्कारं उववेसेउं स-हत्थेहिं ॥ ११३

दिण्णम्मि पवर-सीहासणम्मि भणियं जहा महाभाग ।
महज्झया(?) एयाओ अट्ठ कुमरीउ परिणेसु ॥ ११४

जम्हा अम्हं सिरि अच्चिमालि-नामेण साहु-वसेहण ।
केवलिणा आइ आसि जहा जो पुरिस-सीहो ॥ ११५

असियक्ख-जक्ख-दप्पं भंजेही सो इमासि अट्ठण्हं ।
अह कन्नयाण होही निस्संकं सामियत्तेण ॥ ११६

इच्चाइ-वहु-वियप्पं भणिऊणं भाणुवेग-नरवइणा ।
महया महेण निय-धूयाओ परिणाविउ कुमारो । ११७

अह कय-कंकण-बंधो अहिणव-परिणीय-विहिय-वर-वेसो ।
रइ-मंदिरम्मि चिट्ठइ ताहिं समं जाव वीसत्थो ॥ ११८

ता सो गाढ-परिस्सम खित्त-तणुत्तेण आगया निद्दा ।
तदवगमम्मि य पेच्छइ अप्पाणमरण्ण-मज्झम्मि ॥ ११९

सुद्ध-महीए निवडियं ति तयणु कुमरो अकायर-प्पगई ।
एयं किमिदयालं किं मइ-मोहो त्ति चिंतंतो ॥ १२०

लग्गो अग्गिममग्गं अक्कमिउं कंचि जाव ता सहसा ।
हिमगिरि-सिहरुत्तुंगे व्विचित्त-मणि-निम्मिय-कुंभे ॥ १२१

सुविचित्त-मत्तवारण-पाविय-सोहम्मि विउल-सालम्मि ।
देवंसुय-पट्टंसुय-पमुहुत्तिम-वत्थ-उल्लोओ ॥ १२२

मरु-मंडलम्मि कप्पद्दुमं व भीमम्मि तम्मि रण्णम्मि ।
धवलहरमेगमवलोएइ स भावणिज्जं ति ॥ १२३

११४.२. भाणियं. ३. एयाएउ. ४. परणेसु. ११७.४: कुमरो.
११९. २. °खेत्त. १२०. २. अकायरय. १२१. १. अग्गिमं.

अह तत्थ विम्हिय-मणो कउरव-कुल-गयण-मंडल-ससंक ।
मह अन्न-भवे वि सणंकुमार तं चिय पई होज्जा ॥ १२४

इच्चाइ-बहु-वियप्पं विलवंतं सोउ कन्नयं एगं ।
धवलहरम्मि पविट्ठो निय-नामासंकिओ कुमरो ॥ १२५

दिट्ठं च तत्थ उत्तसिय-हरिण-नयणं ससंक-सम-वयणं ।
वामच्छिमेगमुल्लवइ तीए पुरओ समागंतुं ॥ १२६

सुंदरि सणंकुमारो सो तुह किं होइ जेण तमियाणिं ।
करुण-रवं विलवंती चिट्ठसि तं चेव सुमरंती ॥ १२७

अह दोहमुस्ससेउं इयरी वज्जरइ मज्झ सो भत्ता ।
इच्छामेत्तेणं नउ वीवाहो अम्ह संजाओ ॥ १२८

जम्हा साकेयपुर-प्पहुणा सिरि-समरसीह-नरवइणा ।
सिरिचंदजसा-अभिहाणाए तप्पिय-मायाए वि ॥ १२९

द्एणाणीय-सणंकुमार-रूवंकियं चित्तपडं ।
अवलोयंती अणुरायाउर-हियया खणद्धेण ॥ १३०

मुच्छा-निमीलियच्छी पडिया हं सुद्ध-धरणि-वलयम्मि ।
दिण्णा सणंकुमारस्स उदय-दाणेण साणंदं ॥ १३१

नीया य अप्पणा सह सयंवरा गयपुरम्मि नयरम्मि ।
पिउणा सणंकुमारस्स महियल-सिरोमणिणो ॥ १३२

कह-कह-वि तरुज्जाणे तेण समं दंसणं पि मह जायं ।
दिट्ठा य स-प्पसायं कुमार-रयणेण तेण अहं ॥ १३३

किं पुण अकय-विवाहा खयर-कुमाराहमेण एगेण ।
अवहरिउं निय-कुट्टिम-तलाओ मुक्का इहाणेउं ॥ १३४

अह किं उवलक्खसि तं दिट्ठं सणंकुमारमेणच्छि ।
इय भणिरो च्चिय कुमरो तीए उड्ढीकरेइ मुहं ॥ १३५

---

१२६. ४. पुरिओ.

एत्थंतरम्मि तत्थागएण खयराहमेण तेणेव ।
आगंतु नहयलेणं सणंकुमारो हढा हरिओ ॥ १३६

ता हाहारव-मुहरिय-दियंतरा सोय-विहुरिय-सरीरा ।
मुच्छा-निमीलियच्छी पडिया सा धरणि-वलयम्मि ॥ १३७

कुमरो वि अवहरंतं खयर-कुमाराहमं तयं सहसा ।
पाडेउ महीए हढा हणिउं मुट्ठि-प्पहारेण ॥ १३८

पुरओ ससंक-वयणाए तीए आगंतुमक्खय-सरीरो ।
कहिऊण स-वुत्तंतं तं वीवाहेइ तत्थेव ॥ १३९

सा ओ (?) सुनंद-नामा होही कुमरस्स इत्थि-रयणं ति ।
एत्तो य कुमर-निहणिय-खयर-कुमारस्स लहु-भइणी ॥ १४०

संझावलि त्ति नामा पत्ता पुरओ सणंकुमारस्स ।
गंधव्व-विवाहेण य परिणीया सा वि तत्थेव ॥ १४१

एत्थंतरम्मि पत्ता नहयल-मग्गेण दो खयर-कुमरा ।
पुरओ सणंकुमारस्स विन्नवेंति य पणमिऊणं ॥ १४२

जहा देव असणिवेगाभिहाण-खयराहिवो वहु-वलोहो ।
विन्नाय-तणय-वह-वुत्तंतो वि फुरिय-गुरु-कोवो ॥ १४३

तुम्हाणमुवरि आगच्छंतो चिट्ठइ इमं तु नाऊण ।
खयर-प्पहूहिं सिरि-चंडवेग-सिरि-भाणुवेगेहिं ॥ १४४

हरिचंद-चंदसेणाभिहाणया नियय-अंगरुहा ।
तुह पय-सेवाए पेसविया इमिणा रहेण समं ॥ १४५

एत्थंतरम्मि सिरि-चंडवेग-सिरि-भाणुवेग-खयरिंदा ।
पत्ता साहज्ज-कए सणंकुमारस्स कुमरस्स ॥ १४६

पण्णत्ती-विज्जा उण दिण्णा संझावलीए एत्तो य ।
पत्तो खयरिंदो (?) वल-परिकलिओ असणिवेगो ॥ १४७

१४०.१. सनंद. १४१.४. तत्थेवि. १४३.२. वुत्ततो.

उवरिं सणंकुमारस्स तणय-मारण-कयावराहस्स ।
विप्फुरिय-महामरिसो विरूव-वयणाणि जंपंतो ॥ १४८
अह असणिवेग-खयरिंदेण समं दो-वि ते खयर-कुमरा ।
लग्गा जुज्झियमुज्झिय-करुणं निय-निय-वलोवेया ॥ १४९
ता अचिरेण वि भग्गेसु तेसु विज्जाहरिंद-कुमरेसु ।
सिरि-असणिवेग-खयर-प्पहुणो सह विलसिरामरिसो ॥ १५०
खयरिंद-तणय-वियरिय-रहे कुमारो समारुहेऊण ।
तह तह विचित्त-समर-क्कीलाहिं नहम्मि कीलेउं ॥ १५१
तं असणिवेग-विज्जाहर-नाहं निज्जिणिऊण लीलाए ।
पाविय-विजओ पत्तो तम्मि च्चिय रण्ण-धवलहरे ॥ १५२
अह थुव्वंतो सिरि-चंडवेग-पमुहेण खयर-सिन्नेण ।
पमुइय-मणाहिं संझावली-सुनंदा-पियाहिं समं ॥ १५३
वज्जिर-विचित्ततूरारव-मुहलिय-धरणि-गयण-गिरि-विवरो ।
पत्तो सप्पुरिसम्मि व गिरि-प्पहाणम्मि वेयड्ढे ॥ १५४
ता चंडवेग-सिरिभाणुवेग-पमुहेहिं खयर-राएहिं ।
ठविओ सणंकुमारो विज्जाहर-चक्कवट्टि त्ति ॥ १५५
अह अन्नया य साहिय-वहु-विज्जो पणय-सयल-खयरिंदो ।
पत्तावसरं सो विन्नत्तो सिरि-चंडवेगेण ॥ १५६
जह देव मज्झ सिरि-अच्चिमालिणा मुणिवरेण परिकहियं ।
जह तुह धूयाण सयं अट्ठ पुणो भाणुवेगस्स ॥ १५७
इह संपत्तो संतो मास-दिणंते चउत्थ-चक्कवई ।
वीवाहेही नूणं सणंकुमारो वसुह-तिलओ ॥ १५८
अह भयवं विण्णेओ कह सो चक्कि त्ति पुच्छियम्मि मए ।
भणियं गुरुणा जह सो [ह]एण विवरीय-सिक्खेण ॥ १५९
हरिओ संतो माणस-सरम्मि आगंतु दप्पमवणेही ।
तह तह पुव्व-भवज्जिय-रिउणो असियक्ख-जक्खस्स ॥ १६०

---

*१५४ मी गाथानी पछी (एटले के मूळ प्रतनी ८५थी १३५ सुधीनी गाथाओ) कोईक बीजा ग्रंथ के संदर्भनो अंश प्रक्षिप्त थयेलो छे. ते कुसुमश्री अने वीरसेननी कथाने लगतो छे. १५८.१. सत्तो. १६०.१. माणुस.

नणु कह भयवं पुव्विल्ल-जम्म-सत्तू स तस्स चक्किस्स ।
इय सिट्ठम्मि मए पुणरवि अक्खायं मुणि-प्पहुणा ॥ १६१

जह कंचणपुर-नयरे निवई विक्कमजसो त्ति विक्खाओ ।
तस्स उण पंच अंतेउरी-सयाइं अहेसि त्ति ॥ १६२

एत्तो य पुरे तत्थेव आसि निय-विहव-विजिय-वेसमणो ।
नियय-कुलक्कम-सारो सत्थाहो नागदत्तो त्ति ॥ १६३

तस्स य स-रूव-लायण्ण-विजिय-सुर-सुंदरी अहेसि पिया ।
विण्हुसिरि त्ति पसिद्धा अहन्नया विहिवसेणं सा ॥ १६४

विक्कमजसेण रण्णा दिट्ठा सह मयण-विहुर-हियएण ।
अवहरिऊण हढेणं खित्ता अंतेउरे तत्तो ॥ १६५

तव्विरह-भूय-वेलविय-विग्गहो नागदत्त-सत्थाहो ।
हा हरिण-नयणि हा चंद-वयणि हा कुंभि-कुभ-थणि ॥ १६६

कत्थ गया कत्थ गया पडिवयणं किं न देसि पसिऊण ।
जीवंतो वि मओ इव नणु तुह विरहम्मि चिट्ठामि ॥ १६७

इय विलवंतो वहु-डिंभ-परिगओ चत्त-इयर-वावारो ।
गहिलीहूओ रत्थासु परियडंतो गमइ कालं ॥ १६८

विक्कमजस-निवईणं अवहत्थिय-सयल-रज्ज-वावारो ।
अगणिय-जणाववाओ अवमन्निय-इयर-तरुणियणो ॥ १६९

तीए विण्हुसिरीए सद्धं अच्चंत-रइ-सुहासत्तो ।
कालं गमेइ अह अन्नया य सेसे स-दइयाहिं ॥ १७०

निय-नाह-पराहूयाहिं वि ईसा-विसाय-दुहियाहिं ।
विण्हुस्सिरी वराई निहया कम्मण-पओगेणं ॥ १७१

१६१.३ सट्ठंमि, ३. मणिप्पहुणो. १६२. ४. सताइं. १६६.२. नागरदत्त.
१७०. पछी हस्तप्रतमां २८०० ग्रंथाग्र थयानो निर्देश छे. १७१ ३. वरीई.

अह विण्हुस्सिरि-मरणुल्लसंत-गुरु-सोग-विहुरिय-विवेओ ।
अंसु-जलाविल-नयणो विक्कमजसो नरवई दढं ॥ १७२

रोएइ हसइ गायइ वग्गइ नच्चेइ सुयइ उट्ठेइ ।
अन्नाओ वि किरिया गहिलीहूओ कुणइ वहुहा ॥ १७३

न य विण्हुसिरीए कलेवरं छिवेउं पि देइ अन्नस्स ।
ता मंतीहिं मंतेऊण नरिंदं च वंचेउं ॥ १७४

नेउं विण्हुसिरीए कलेवरं उज्झिअं अरण्णम्मि ।
निवई वि तिन्नि दियहाणि चत्त-नीसेस-आहारो ॥ १७५

थक्को वहु-प्पयारं विलवंतो ता समग्ग-सचिवेहिं ।
मरिही इमो न जी[व]इ तं अवलोहि(?) त्ति मंतेउं । १७६

नीओ अरण्ण-देसे तत्तो परिगलिर-पूय-पब्भारं ।
वायस-कुल-आयड्ढिय-नयणजुयं सगसगित-किमिं ॥ १७७
वहु-विह-विहंग-खंडिय-तुंडं अइ-पूयगंध-वीभच्छं ॥
विण्हुस्सिरिमवलोएऊणं संजाय-वेरग्गो ॥ १७८

धिसिधिसि जोए निमित्तं पावेण कुलक्कमो परिच्चत्तो ।
निय-सीलं च कलंकियमाइण्णा पागय-क्किरिया ॥ १७९

अप्पा विगोविओ सव्वत्थ महीए मए हयासेण ।
तीए इमो विवागो विवेइ-जण कय-भवुव्वेओ ॥ १८०

इच्चाइ वहु-वियप्पं अप्पाणं निंदिऊणमणुसमयं ।
जज्जर-तणं व रज्जं उज्झेउं सो महासत्तो ॥ १८१

गहिऊणं पव्वज्जं सुव्वय-मुणि-नाह-चलण-मूलम्मि ।
काऊण विविह-कट्ठाणुट्ठाणं तणुमिणं चइउं ॥ १८२

तियसत्तेणुप्पन्नो सणंकुमारम्मि अमर-भवणम्मि ।
नियय-ट्ठिइ-क्खएणं पुणो स तत्तो वि हु चवेऊण ॥ १८३

---

१७२. १. °मरुण. १७५. २. उज्झिउं. १७७. ४. किमं.
१७९. २. कुलक्कम्मो. १८३. ४. ठवेऊण.

रयणउरम्मि महइब्भस्स सिट्ठिणो पिययमाए कुच्छिंसि ।
सुस्सिविण-सूइओ सो जाओ अंगुब्भवत्तेण ॥ १८४

नामं च वियरियं से पसत्थ-दियहम्मि जणय-जणणीहिं ।
महया महूसवेणं जिणधम्मो त्ति प्पसिद्धं ति ॥ १८५

तयणु अणुक्कम-उवलद्ध-जोव्वणो पत्त-कित्ति - वित्थारो ।
सुगुरु-पय-मूल-अहिगय-जीवाजीवाइ-तत्तत्थो ॥ १८६

सव्वत्था वि पसिद्धो जाओ एत्तो य नागदत्तो सो ।
मरिओ तहा विओ (?)
नियडि-भुयंगी-गसिओ लोहग्गल-पिहिय-सुगइ-पहो (?)॥ १८७

जाओ धिज्जाई अग्गिसम्म-नामो विहि-प्पओगेण ।
घेत्तूण परिव्वायग-वेसं तारिस-गुरूण पुरो ॥ १८८

बाल जण-प्पयडेणं तवो-विहाणेण बाढमप्पाणं ।
परिसोसेंतो परियडमाणो विस्सिंभराभोयं ॥ १८९

सिरि-रयणउर-पुरस्सुज्जाणं समागओ इओ य तहिं ।
परिवायगाणुरत्तो अहेसि हरिवाहणो राया ॥ १९०

तेण य तमग्गिसम्मं समागयं सोउ तव-सुसिय-देहं ।
निय-माणुसेहिं सद्दावेऊणं नियय [भव]णम्मि ॥ १९१

भणियं भयवं पारेयव्वं मह मंदिरे तए अज्ज ।
इत्थंतरम्मि विहिणो वसेण जिणधम्म-सिट्ठी सो ॥ १९२

पविसंतो निव-भवणे [ते]ण परिव्वायगेण सच्चविओ ।
अह पुव्व-जम्म-वेराणुहाव-विप्फुरिय-कोवेण ॥ १९३

१८४. ३ सूसिओ. १८६. ३. परियणमाणो. १९०. २. इउ. १९१. ४. नियणंमि.

परिवायगेण भणियं रण्णो पुरओ जहा निय-गिहम्मि ।
जइ भुंजावसि ता भुंजावेसु परं पसिऊणं ॥ १९४

वणिणो इमस्स पट्ठीए कंस-पत्तीए पायसं उण्हं ।
जं अज्ज मए नियमो इमेरिसो चिट्ठइ निहोओ ॥ १९५

रण्णा वि परिव्वायग-अणुराएणं पवज्जिउं तं पि ।
निब्बंधेणं भणिओ पत्थुय-अत्थम्मि सो सिट्ठी ॥ १९६

सिट्ठी वि पुव्व-दुक्कय-कम्मगुवट्ठियमिमं ति चिंतंतो ।
पट्ठी-ट्ठिउण्ह-पायस-पत्तीए वियणमुदग्गं ॥ १९७

नरवइ-उवरोहेणं दढमहियासेइ महियल-निसन्नो ।
इयरो य सणिय-सणियं उण्हुण्हं पायसं भोत्तुं ॥ १९८

उट्ठेइ महापावो तत्तो जिणधम्म-सेट्ठि-पिट्ठीए ।
स-रुहिर-मंस-ण्हारु पत्ती सा उक्खया कह वि ॥ १९९

अह अह महासत्तो कहं नु सेट्ठी कयत्थिओ इमिणा ।
पाव-परिव्वायगेण इय जण-वयणाणि निसुणेंतो ॥ २००

अविहिय-हरिस-विसाओ कह-कह-वि नियम्मि मंदिरे गंतुं ।
मेलेउ सयण-वग्गं सम्माणेउं सयल-संघं ॥ २०१

जिण-सासणस्स काउं पहावणं वहु-वियप्पमुवउत्तो ।
खामिय-समग्ग-सत्तो अपुव्व-गय-परम-चारित्तो ॥ २०२

निग्गंतूण पुराओ गंतुं एगत्थ-सिहरि-सिहरम्मि ।
पडिवज्जिउणमणसणं उदग्ग-भव-वास-भय-भीओ ॥ २०३

पुव्वाभिमुहं काउस्सग्गेण य उमद्धमासंजा(?) ।
सेसासु वि पत्तेयं एवं चिय काउमुस्सग्गं ॥ २०४

विग-काग-वग-सिगालोलूगाइ-अणेग-दुट्ठ-सत्तेहिं ।
पट्ठीए खज्जंतो वेयणमहियासिउं सम्मं ॥ २०५

१९७.४. वेयण. १९८.२. मइयासेइ. २०३.३. पडिवज्जिऊण.

अणसण-विहिणा दो-मासिएण चइऊण पूइ-तणुमेयं ।
पंच-नमोक्कार-परायणो मरिऊण सोहम्मे ॥ २०६

तियसवई संजाओ पाव-परिव्वायगो उ सो मरिउं ।
तारिस-निय-दुव्विलसिय-समुवज्जिय-पाव-कम्म-वसा ॥ २०७

तस्सेव सुर-प्पहुणो वाहणमेरावणो करी जाओ ।
आरूढो उ तह तहा विडंबिउं तं गयं इंदो ॥ २०८

निय-आभि[ओ]गिय-महापाव-विवागं च सुइरमणुहविउं।
तत्तो ठिइ-क्खएणं एरावण-वारणो चविओ ॥ २०९

सुइरं च परियडेउं नर-तिरिय-गइसु स-कय-कम्म-वसा ।
वेयड्ढ-पव्वयम्मि जाओ असियक्ख-जक्खो त्ति ॥ २१०

सोहम्मिंदो वि हु तट्ठाणाउ ठिइ-क्खएण चविऊण ।
सिरि-गयपुराभिहाणे नयरे सिरि-आससेणस्स ॥ २११

रण्णो जाओ तणओ सणंकुमारो त्ति विस्सुओ तं सि ।
इय तुज्झ पुव्व-भव-वइयरम्मि कहियम्मि मुणिवइणा॥ २१२

तुह अंतराल-वास-कए पेसविउं भाणुवेगमंगरुहं ।
पियसंगम-नामं-वेउव्विय नयरिं निवेसेउं ॥ २१३

परिणाविओ सि पुव्वुत्ताओ कुमरीउ (अमरीओ) अट्ठ तं तइया ।
तह कज्ज-सत्तीए(?) तुह पयसेवं करिस्सामि ॥ २१४

इय चिंतिरेण तं एगागी मुक्को सि भाणुवेगेण।
उज्जाणे तम्मि तया इय तं सयलं पि हु खमेज्ज ॥ २१५

तह मह धूयाण सहस्स कुणसु पसिऊण पाणिगहणं तं ।
एवं होउ त्ति पयंपिऊण(?) सणंकुमारेण ॥ २१६

वीवाहिया य खयर-प्पहु-धूयाओ महा-विभूईए ।
तयणु दहुत्तर-तरुणी-सएण सह पंचविह-विसए ॥ २१७

२०६.२. तण°. २०९ २. मुइरमणुहिविउं, २१०. १. सुयरं.

उवभुंजिरस्स कित्तिय-मित्ताणि वि अइगयाणि दियहाणि ।
अज्ज उण अज्जउत्तेण इमं अम्हं समाणत्तं ॥ २१८

जत्थासियक्ख-जक्खेणं सह मह आसि जुज्झमावडियं ।
गम्मं तम्मिं माणस-सरम्मि कीला-कए इण्हिं ॥ २१९

इय भणिरो च्चिय नहयल-पहेण सारेण परियणेण समं ।
चिट्ठइ एत्थ पहुत्तो विविह-क्कीला-विणोएहिं ॥ २२०

जा ताव समं तुमए दंसणमिह जायमज्जउत्तस्स ।
एत्तो य रइहराओ सणंकुमारो समुट्ठेइ ॥ २२१

अह दो-वि विहिय-तस्समय-उचिय-पडिवत्तिणो कयाणंदा ।
असमाण-चडयरेणं वेयड्ढ-गिरिम्मि संपत्ता ॥ २२२

अह उवसाहिय-खयर-स्सेणि-जुओ भुवण-वित्थरिय-कित्ति ।
जाओ सणंकुमारो विज्जाहर-चक्कवट्टि त्ति । २२३

ता विण्णत्तो पत्तावसरं चक्की महिंदसीहेण ।
जह पहु जणणी-जणयाणि तुम्हमच्चंत-दुहियाणि ॥ २२४

चिट्ठंति तओ निय-मुह-दंसण-परमामोएण सिंचेसु ।
सोउमिणं विज्जाहर-रज्जाणं सुत्थयं काउं ॥ २२५

विज्जाहर-वल-पूरिय-नहंगणो जणिय-जयाणंदो ।
चक्कवई आगंतुं स-पुरम्मि महिंदसीह-जुओ ॥ २२६

जणणी-जणयाणं पय-पउमाणि नमेइ परम-भत्तीए ।
कहइ य महिंदसीह-मुहेण निय-वइयरमसेसं ॥ २२७

अह नूणं धम्माओ मह तणयस्स च हवेइ कल्लाणं ।
इय चिंतंतो सिरि-आससेण-निवई सुहासंसी ॥ २२८

महया महूसवेणं कुमरं ठावेउ नियय-रज्जे(?) ।
निक्खंतो स-पिओ वि तहाविह-सूरीण पय-मूले ॥ २२९

---

२१९. ३. माणुस°. ३. जीओ.

तत्तो सणंकुमारेण नियं-पयावोवहसिय-दिणमणिणा ।
सिरि-भरहेसर-विहिणा छक्खंडा वि हु मही एसा ॥ २३०

वास-सहस्सिय-कालेण साहिया पयडिया य निय-कित्ति ।
तत्तो चउसट्ठि-सहस्स-पिययमा-संग-दुल्ललिओ ॥ २३१

वत्तीस-सहस्स-महानरिंद-मणि-मउड-लिहिय-पयवीढो ।
हय-गय-रह-चुलसीइ-लक्ख-भरक्कंत-महि-वट्ठो ॥ २३२

नव-निहि-चउदह-रयणोवलंभ-तइलोय-लोय-कय-तोसो ।
गयपुर-नयरे पत्तो दिट्ठो य सुराहिवेण तओ ॥ २३३

पुव्वं सोहम्मवई अहेसि एसो वि मज्झ सरिसो त्ति ।
परिचिंतिऊण अच्चंत-वंधु-वुद्धीए वेसमणो ॥ २३४

आणत्तो जह गंतुं गयपुर-नयरे सणंकुमारस्स ।
कुणसु पवंधेण लहुं पि महा रज्जाहिसेयं ति ॥ २३५

तह वण-मालं हारं छत्तं मउडं च पायवीढं च ।
सीहासणं च कुंडल-जुयलं चमरं च पाउय-जुयाणि ॥ २३६

पाहुडमिमं च घेज्जसु चक्किस्स तुमं सणंकुमारस्स ।
इय विविहमिदं सिक्खं घेत्तूणं उत्तिमंगेण ॥ २३७

सुरवइ-पेसिय-रंभा-तिलोत्तिमाहिं सहेव वेसमणो ।
काऊण करेसु नाह-पाहुडं गयपुरे पत्तो ॥ २३८

अह सिरि-सणंकुमारस्स चक्किणो पाहुडं वियरिऊणं ।
जक्खो वेसमणो विण्णवेइ जह पहु सुरिंदेण ॥ २३९

इह पेसिओ म्हि भणियव्वं पुण जह तुममहेसि सोहम्मे ।
तियसाहिवई पणमिर-समग्ग-सुर-रमणि-निउरुंवो ॥ २४०

तुमए य चुए सुर-मंदिराउ [जाओ] इमो सुराहिवई ।
इय तेण वंधु-वुद्धीए तुह इमं पाहुडं पहियं ॥ २४१

---

*२३२मी गाथा पछी (एटले के हस्तप्रतमां ६३ थी ७७मी गाथा सुधीमां) कोई वीजा ग्रंथनो अंश प्रक्षिप्त थयेलो छे. २३९. २. चक्किस्सणो. २४०- ३. सिररमणि.

तह तुज्झ विजिय-दुज्जय-सत्तुस्स पवित्त-पुण्ण-रासिस्स ।
कारविओ मज्झ सयासाउ महारज्जहिसेओ ॥ २४२

इय तुब्भे अणुमन्नह एयं ति तओ सणंकुमारेण ।
पडिवन्नम्मि जोयण-पमाण-मणि-पेढियं रम्मं ॥ २४३

वेसमणेण विउव्विय तेयस्सुवरिं नु फुरिय-तेय-भरो ।
अहिसेय-मंडवो पंच-वण्ण-रयणोलि-निम्मविओ ॥ २४४

तत्थ मणि-पीढगोवरि सुरिंद-सीहासणं कयं रम्मं ।
तम्मि य निवेसिऊणं सणंकुमारं महारायं ॥ २४५

कलहोय-रयण-कंचण-कलस-सहस्सेहिं झत्ति आणेउं ।
खीरोआओ हरहास-कास-धवलाणि सलिलाणि ॥ २४६

जय-विजय-नंद-सद्द-पुरस्सर-वर-गीय-मुहलिय-दिसेहिं ।
वेसमण-प्पमुहेहिं सुरेहिं अहिसिंचिओ चक्की ॥ २४७

रंभा-तिलोत्तिमाओ वि सव्वालंकार-भूसिय-तणूओ ।
भाव-प्पहाणमुवणच्चियाउ चक्किस्स पुरओ त्ति ॥ २४८

एवं सणंकुमारस्स तस्स रज्जाहिसेयमणहं ।
काउं वेसमणो सुरभवणम्मि गओ स-परिवारो ॥ २४९

चक्कवई वि हु उवभुंजंतो भोगोपभोग-सुहमणहं ।
कालं गमेइ कित्तिय-मित्तं पि अह अन्नया सक्को ॥ २५०

सोहम्मिय-परिसए सोयामिणि-नाडयं निरिक्खंतो ।
चिट्ठइ जा तावस्स समीवे इसाण-कप्पाओ ॥ २५१

संगम-नामो देवो समागओ तप्पहाणुहावेण ।
रवि-उदए ताराण व इयर-सुराणं गओ तेओ ॥ २५२

अह निय-कज्ज-समत्तिए तम्मि तियसे गयम्मि स-ठाणे ।
पुट्ठो सुरेहिं सक्को जह पहु कहमेय-तेएण ॥ २५३

२४४.४. निम्मिविउ. २४६. ४. धतलाणि. २४८. ४. पुरोत्ति.

गोसे दिणिंद- उदएणं व गहाणं सुराण सव्वेसिं ।
नट्ठो झड त्ति तेओ ता वज्जरियं सुरिंदेण ॥ २५४

जह पच्छिमम्मि जम्मे इमिणा तियसेण समय-नीईए ।
आइण्णो आसि तवो आयंबिल-वद्धमाणो त्ति ।। २५५

तव्वसओ सेस-सुरब्भहिओ तेओ इमस्स जाउ त्ति ।
अह तियसेहिं पुणरवि पुट्ठं चिट्ठइ किमन्नो वि ॥ २५६

को-वि हु जयम्मि एरिस तणु-प्पहा-हरिय-इयर-तरुण-जणो।
अह ईसि हसिऊणं भणियं अमराहिराएण ।। २५७

निम्माण-कम्म-निम्मिय-असमाण-समग्ग-संधि-वंधस्स ।
साहाविय-प्पहोहामिय-तियसासुर-सव्वस्स ॥ २५८

पुरओ सणंकुमारस्स चक्कवइणो सुरस्स ।
एयस्सा किं रूवं किं तेओ किं वा लायण्ण-माहप्पं ॥ २५९

अहवा वि चिट्ठउ एउ एसो तियसासुर-माणवाण मज्झाओ।
अन्नस्स वि कस्स वि नत्थि एरिसा रूव-रिद्धि त्ति ॥ २६०

तत्तो यसद्दहंता दूवे सुरा तियसनाह-वयणमिणं ।
रूवावलोयणत्थं सणंकुमारस्स-चक्किस्स ॥ २६१

कय-देसिय-दिय-रूवा पडिहार-निवेइया पुरो पत्ता ।
अह गंध-तिल्ल-अब्भंगियंगमवि तं निरिक्खेउं ॥ २६२

विम्हिय-हियया अन्नोन्न-मुहाणि लग्गा निरिक्खिउं दो-वि ।
चिंतंति य अहह इमस्स किंपि रूवं अउव्वं ति ।। २६३

तो अमुणिय-तत्तेणं सणंकुमारेण ते सुरा भणिया ।
जह भो विप्पा मग्गह मणिच्छियं जह पयच्छामि ।। २६४

तयणु पयंपंतियरे अहिलसिमो किं पि नो महाराय ।
किंतु तुह रूव-अवलोयणत्थमम्हे इह पहुत्ता ।। २६५

दिट्ठं च तं तिलोयब्भहियं ति मणम्मि अम्ह गुरु-हरिसो ।
संजाओ अह चक्कि-प्पहुणा ईसी स-हरिसेण ॥ २६६
भणियं जइ एयं ता एज्जह तुब्भेत्रण्ह समयम्मि ।
जह अत्थाण-निविट्ठं कय-सिंगारं ममं नियह ॥ २६७
इय चक्कि-वयणमायण्णिऊण हरिस-पुलइया तियसा ।
अन्नत्थ गमेउ खणं पत्तावसरं तु संपत्ता ॥ २६८
तो अत्थाणुवविट्ठं सव्वंग-विसेस-विहिय-सोहं पि ।
ववगय-तणु-लायण्णं अवलोएऊण तं तियसा ॥ २६९
धिद्धी कम्म-विवागो को वि अउव्वो त्ति चिंतिरा हियए ।
विच्छाय-त्रयण-कमला सहस त्ति अहोमुहीहूया ॥ २७०
ता किंचि विसन्नेणं सणंकुमारेण पभणियं जह भो ।
अन्नारिस व्व तुब्भे जाया किं झत्ति दट्ठु ममं ॥ २७१
अह कहिय-नियय-सरूवा भणंति इयरे जहा महाराय ।
जा आसि तेल्ल-अब्भंगियस्स देहम्मि तुह कंती ॥ २७२
तइया सा एण्हि सहस्संसेण वि कय-विहूसणस्सावि ।
विहिय-सिणाण-विलेवण-विहिणो हु नत्थि ता सहसा ॥ २७३
लायण्ण-रूव-जोव्वण-सरीर-संघयण-कंति-सोहाओ ।
धिद्धी अइ-तुच्छाओ जीवाणं मणुयलोगम्मि ॥ २७४
ता कुस-जल-लव-चवले लायण्णे जोव्वणे य रूवे य ।
पडिवंध-कारणं किं-पि नत्थि सुविवेय-विहवाण ॥ २७५
इय सोऊण जहट्ठिय-वयणं तियसाण जाय-संवेगो ।
वियलिय-मोह-तमोहो सणंकुमारो पयंपेइ ॥ २७६
इच्छामो यणुसट्ठिं तियसा पर-कज्ज-सज्ज-वावारा ।
रूवाहिमाण-गह-निग्गहओ तुब्भेहिं पडिसिट्ठो ॥ २७७
पयईए निग्गुणो च्चिय देहो देहीण नत्थि संदेहो ।
अविवेइणो इमस्स वि मंडण-परिकम्मणक्खणिया ॥ २७८

---

*गाथा २६७ पछी २६०० ग्रंथाग्र थयानो प्रतोमां निर्देश छे.

उप्पत्ति-कारणं पुण इमस्स देहस्स जं जय-पसिद्धं ।
तं चिंतियं पि विउसाण भायणं होइ लज्जाए ॥ २७९

असुईए सन्निहाणे सव्वासुइ-संग-मित्त-निव्वडिए ।
चिंतिज्जंतं पि दढं सुइत्तणं होज्ज कह देहे ॥ २८०

परिसीलणेक्क-रुइरे रोग-जरा-मरण-भंगुर-सरूवे ।
अवगय-तत्तेहिं कहं तणुम्मि कीरउ थिराबंधो ॥ २८१

ता जह जह चिंतिज्जइ देहस्स थिरत्तणं सुइत्तं च ।
तह तह विहडइ सयलं पवणोवहयं व सरयब्भं ॥ २८२

इय वहु-वियप्प-सुविसुद्ध-भावणा-भावियंतकरणेण ।
भुवणब्भहियं पि हु चक्कवट्टि-लच्छिं परिचइउ ॥ २८३

पयडेऊणं जिण-सासण-प्पहावणमणेग-भेएहिं ।
अहिसिंचिऊण महा-महेण नियनंदणं रज्जे । २८४

पडलग्ग-तणं पिव उज्झिऊण सयलं परिग्गहारंभं ॥
निक्खंतो चक्कवई उसहायरियस्स पय-मूले ॥ २८५

तओ य—

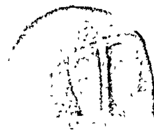
अणुचरियं धीर तए चरियं नियस्स पुव्व-पुरिसस्स ।
भरह महा-नरवईणो तिहुयण-विक्खाय-कित्तिस्स ॥ २८६

इय वहु-वियप्पमुववूहेऊणं सणंकुमार-रायरिसिं ॥
तग्गुण-गहण-परा ते तियसा सुर-मंदिर पत्ता ॥ २८७

भयवं पि हु भव-भीओ गुरु-भणिय-विहीए विहरिउमन्नत्थ ।
इत्थी-रयण-प्पमुहाणि पुण चऊद्दस वि रयणाणि ॥ २८८

नव-निहिणो वतीस-सहस्सा उण मउडवद्ध-नरवइणो ।
सव्वे वि आभिओगिय-तियसा सयणा य सव्वे वि ॥ २८९

किं वहुणा चुलसीए लक्खा गय-तुरय-संदण-भडाण ।
इयरो वि समग्गो वि हु खंधावारो गुरु-दुहुत्तो ॥ २९०



मा उज्झसु मा उज्झसु पहु पहु पसिऊणमिणमसरणं ।
इय विलवंतो छम्मास-माण-कालं परिंभमिरो ॥ २९०

पट्ठि अ-परिमुयंतो सणंकुमारस्स भयवओ थक्को ।
राय-रिसिणा वि निय-माहप्प-विणिज्जिय-तिहुयणेण ॥ २९२

सीहावलोइयं पि हु पुव्वोइय-वत्थु-सत्थ-विसयम्मि ।
न निहित्तं ता भोग-हलिय-कम्मंसस्स पज्जंते ॥ २९३

सव्वो वि हु पुव्वोइय-पयत्थ-सत्थो छम्मास-कालंते ।
निय-निय-ठाणम्मि गओ भयवंतस्स उ स-कम्म-वसा ॥ २९४

छट्ठ-तवो-कम्मंते गोयर-चरियाए परियडंतस्स ।
एगल्ल-विहारं पडिवन्नस्स महाणुहावस्स ॥ २९५

छेलिय-तक्क-विमिस्सं चीणय-कूरं पभुंजमाणस्स ।
सत्त इमे अइ-दुसहा रोगायंका समुब्भूया ॥ २९६

तं जहा –

कंडूय-भत्त-सद्धा तिव्वा वियणा य अच्छि-कुच्छीसु ।
कासं जरं च सासं सणंकुमारोहियासंतो ॥ २९७

कालं गमेइ एत्तो य तियसवइणा सहाए वज्जरियं ।
जह भो तियसा चरियं पेच्छह सणंकुमारस्स ॥ २९८

भुवण-व्वाहि-हराहिं आमोसहि-पमुह-पवर-लद्धीहिं ।
उप्पन्नाहि वि नीसेस-वाहि-विहुरिय-सरीरो वि ॥ २९९

न कुणइ सक्कार-रवं (?) पडिउवयारं पि न प्पयट्टेइ ।
निय-दुक्कयाइं अहियासिंतो चिट्ठइ भवुव्विग्गो ॥ ३००

न य तीरइ तियसासुर-पहूहिं न वि चालिउं सज्झाणाउ ।
सोऊणमिणमसद्दहमाणं तं चिय तियस-जुयलं ॥ ३०१

आगंतु विज्ज-विहिणा जंपेइ सणंकुमारमासज्ज ।
भयवं रोगोवसमं करेमि जइ तमणुजाणेसि ॥ ३०२

२९९. १. भुवणु°.

राय-रिसी वि हु चिट्ठइ तुण्हिक्को अह पुणो पुणो तियसा ।
जावेयं चिय पक्खंतरेसु भमरा पयंपंति ॥ ३०३

ता थोवक्खर-वयणेहिं भयवया जंपियं जहा वेज्जा ।
किं तुब्भे तणु-रोगे समेह अह कम्म-रोगे वि ॥ ३०४

तणु-रोगे सयले वि उवसमावेमो न उ कम्म-वाहिणो ।
ता नियं-निठ्ठुणेण परिसेउ एगा (?) ॥ ३०५

करंगुलो जच्च-कणय-वन्ना पयंसिया मुणिणा ।
भणियं च अहं सयमेव इयर-वाहिं उवसमेमि ॥ ३०६

तुम्हाणं पुण जइ कम्म-रोग-उवसामणम्मि सामत्थं ।
विज्जइ ता उवसामह अंतर-रोग-वित्थारं ॥ ३०७

ता पणमेऊणं सणंकुमार-रायरिसि-पय-कमल-जुयलं ।
पयडिउं अप्पाणं कहिउं आगमण-वुत्तंतं ॥ ३०८

अविसयमावन्ना ते तियसा भयवं पि भव-उव्विग्गो ।
वेयणमहियासेंतो सम्मं चिंतेउमाढत्तो ॥ ३०९

वारिज्जइ एंतो सायरो वि कल्लोल-भिन्न-कुलसेलो ।
न य पुव्व-जम्म-निचिओ सुहासुहो कम्म-परिणामो ॥ ३१०

रे जीव सयं तुमए समज्जिया विविह-दुक्ख-दंदोली ।
कुव्वंतेण अयाणुय पाव-ट्ठाणाइं सयलाइं । ३११

पर-लोय-निप्पिवासा तह तह वट्टंति पाणिणो मूढा ।
नर-नरय-तिरिय-भावे जह अहि[यहियं?] दुहमुवेंति ॥ ३१२

रे जीव कह वि नासो न होइ पुव्वज्जियाण कम्माण ।
ता सहसु अणुव्विग्गो जं तुह दुक्खं समावडइ ॥ ३१३

सव्वस्स वि एस गई जं कयमन्नाण-राय-दोसेहिं ।
तं परिणमइ अवस्सं पुव्वज्जिय-कम्म-वसगस्स ॥ ३१४

---

३०५. १. तयणुरोगे. ३०६. ४. मुणिणो.

पुणरवि तए य इमं खवियव्वं जं पुरा समायरियं ।
किं पुण सम्मं खवणं वहु-निज्जरमप्पदुक्खं च ॥ ३१५

इय निच्छिऊण गरुए वि वाहिणो सहइ निज्जरावेही ।
सम्मं कम्म-विवागं परिभावेंतो स राय-रिसी ॥ ३१६

तत्तो भयवं कुमरत्तम्मिं मंडलिय-नरवइत्ते य ।
पन्नासं पन्नासं वरिस-सहस्साइं अइगमिउं ॥ ३१७

वच्छर-लक्खं वच्छर-लक्खं चक्कित्त-समण-भावेसु ।
अणुपालेऊणं गंतूण य सम्मेय-गिरि-सिहरे ॥ ३१८

मासिय-तवस्स-अंते कालं काऊण समय-नीइए ।
कप्पे सणंकुमारे जाओ देवो महिड्ढीओ ॥ ३१९

तत्तो चुओ समाणो महा-विदेहम्मि गंतु सिज्झेही ।
सुगहिय-नामधेओ सणंकुमारो सुरो त्ति ॥ ३२०



इत्थं चक्रि-सनत्कुमार-विलसद्दृष्टान्तमन्तः स्वयं
युष्माभिः परिभाव्य भो भव-भयाभ्यासाद् भृशं भीरुभिः । ६२१
कार्या दुष्कर-सर्व-सङ्ग-विरतिर्धीरैर्ययोत्तिर्यते ।
नावेवार्णव-मार्गगामिभिरसौ संसार-वारांनिधिः ॥ ३२२

॥ इति सनत्कुमार-चक्रवर्ति-कथानकं समाप्तम् ॥

